See Index at page number 233 /अनुक्रमणिका पृष्ट नः २३३ पर देखें

अजायब कृपाल नूं याद करदा

(संत अजायब सिंह जी)

अजैब कृपाल नूं याद करदा, विच राजस्थान दीयां झाड़ियाँ दे,
महलां माड़ीयां छड फकीर होया,
बुरे दुःख वियोग कनं पाड़ियां दे। (२)
बोल माता अजैब दी मत देवे,
बच्चा मान लै सुख सरदारीयां दे। (२)
नहीं जाऊँ बीमारी शरीर विचों,
जिहनूं डंग गये नाग ऐह झाड़ियां दे। (२)
कृपाल बाज न दुख दूर हुदें,
मिलदे वैद्य ना इश्क दियां नाड़ियां दे। (२)
अखां नाल लगा के संत अखां,
रस खिंचदे वांग धुलाड़ियाँ दे। (२)
सच्ची दुखीए अजैब दी आवाज सुणके,
जन्दरे खुले कृपाल दीयां ताड़ीयाँ दे। (२)
जद कूक सुनी 'अजैब' दी गई कलेजा चीर,
आसन छड सचखंड दा आऐ कृपाल अखीर। (२)

अनहद की धुन

(गुरु ब्रह्मानन्द)

अनहद की धुन प्यारी साधो, अनहद की धुन प्यारी रे। । टेक । (२)
आसन पदम लगाकर करसे, मूंद कान की बारी रे। (२)
झीनी धुन में सुरत लगावो, होत नाद झनकारी रे। अनहद.....
पहले–पहल रल मिल वाजे, पीछे न्यारी–न्यारी रे। (२)
घंटा शंख बांसुरी वीणां, ताल मृदंग नगारी रे। अनहद.....
दिन दिन सुनत नाद जब बिकसे, काया कंपत सारी रे। (२)
अमृत बूंद झरे मुख माहीं, योगी जन सुखकारी रे। अनहद.....
तन की सुध सब भूल जात है, घट में हो उजयारी रे। (२)
'ब्रह्मानंद' लीन मन होवे, देखी बात हमारी रे। अनहद.....

अपना कोई नहीं है जी

(संत कबीरदास जी)

अपना कोई नहीं है जी, कि अपना सतगुरु प्यारा जी। टेक।

ना कर बन्दे मेरी मेरी, दम दा की भरवासा (२)
जीवन तेरा ऐसे जैसा, पानी विच पतासा। अपना.....

ना कर बन्दे खुदी तकबर सिर पै मौत निमानी (२)
इक दिन पगले ऐसा आवै, तू डूबे बिन पानी अपना.....

माटी ओढ़ना माटी पहिनना, माटी का सिरहाना जी (२)
इक दिन पगले ऐसा आवै, माटी में मिल जाना जी।
अपना.....

जब तक तेल दीप में बाती, जगमग–जगमग हो रही (२)
जल गया तेल निखुट गई बाती, लाश सिवयों को तोर लई।अपना.....

पाटा चोला हुआ पुराना कब लग सिवे दरजी (२)
दिल का महरम कोई ना मिलया, सब मतलब के गरजी। अपना.....

अपने सेवक की आपै राखै

(गुरु अर्जुनदेव जी)

अपने सेवक की आपै राखै,
आपै नाम जपावै, आपै...

यह–यह काज कीर्त सेवक की,
तहाँ–तहाँ उठ धावै (२) अपने.....

निकटी होए दिखावै सेवक को,
जो–जो कहे ठाकुर पह सेवक,
ततकाल होऐ आवै (२) अपने.....

तिस सेवक के हौं बलहारी,
जो अपने प्रभ भावै (२) अपने.....

तिसकी सोऐ सुनीमन हरया,
तिस 'नानक' परसन आवै (२) अपने.....

असां गुरां दे दवारे उत्ते रोना

(संत अजायब सिंह जी)

असां गुरां दे द्वारे उत्ते रोना, शायद मन मेहर पै जाऐ।(२)
असां झुक–झुक दर ते खड़ोना शायद मन मेहर पै जाऐ (२)

लीरां लींरां करके सुहे, कांसा फड़के बैठे बुहे। (२)
हुण तां, हंझुआं दा हार परोणा, शायद मन मेहर पै जाऐअसां झुक.....

दर तेरे ते अलख जगाइऐ, मुंहो मंगियां मुरादां पाईऐ। (२)
भावें दिन राती, पै जाऐ खड़ोना, शायद मन मेहर पै जाऐअसां झुक.....

गिन–गिन दिन मैं आसां लाईयां, मुश्किल दुःखड़े सहन जुदाईयां (२)
साडा मिल जाऐ, किते मन मोहणा, शायद मन मेहर पै जाऐअसां झुक.....

मन दे फुरने साडे फैले, जन्म जन्म तो हो गऐ मैले। (२)
धोबी बनके, रूहां नूं पया धोना, शायद मन मेहर पै जाऐअसां झुक.....

शाह कृपाल जी सांई मेरे, बैठा 'अजायब' धुणा लाई दर तेरे। (२)
झोली फड़, तेरे दर ते खड़ोना, शायद मन मेहर पै जाऐ असां झुक.....

असी औगुणहारे जी

(संत अजायब सिंह जी)

असी औगुणहारे जी, अरजां करिऐ, अरजां करिऐ।

मोह माया दे जाल च फंसके। (२)
बन गए नकारे जी, अरजां करिऐ, अरजां करिए। असी.....

भवसागर विच बेड़ी अड़ गई। (२)
लावो पार किनारे जी, अरजां करिऐ, अरजां करिऐ। असी.....

तेरी महिमा तूं ही जाणे। (२)
असी कौन विचारे जी, अरजां करिऐ, अरजां करिऐ। असी.....

तेरे बिना दाता जी कोई ना साडा। (२)
मेरे सतगुरु प्यारे जी, अरजां करिऐ, अरजां करिऐ। असी.....

मैं अन्जान 'अजायब' बिचारा। (२)
कृपाल सहारे जी, अरजां करिऐ, अरजां करिए। असी.....

असी मैले सतगुरु जी

(गुरु अर्जुनदेव जी)

असी मैले सतगुरु जी, उजल करदे, उजल करदे (२)

हम मैले तुम उजल करते (२)
हम निर्गुण तू दाता, उजल कर दे, उजल कर दे, असी मैले...
..

हम मूर्ख तुम चतुर, सयाने (२)
तू सर्ब कला का ज्ञाता। उजल.....

हम ऐसे तू अैसा माधो (२)
हम ऐसे तू अैसा उजल.....

हम पापी तुम पाप खंडन (२)
नीको ठाकुर देसा। उजल.....

तुम सब साजे साज निवाजे (२)
जीयोपिंड दे प्राणा। उजल.....

निर्गुण हारे गुण नहीं कोई (२)
तुम दान देयो मेहरबाना। उजल.....

तुम करो भला हम भलो ना जाने (२)
तूं सदा सदा दयाला। उजल.....

तुम सुख दाई पुरख विधाते (२)
तुम राखो अपने बाला। उजल.....

तुम निधान अटल सुल्तान (२)
जीय जन्त सब जाचै। उजल.....

कहो 'नानक' हम ऐहै हवाला (२)
राख संतन कै पाछे। उजल.....

अब मोहे नैनण सौं गुरु दिया

(संत अजायब सिंह जी)

अब मोहे नैनण सौं गुरु दिया। ।टेक।

दर–दर फिरती पूछे ना कोई, ना जीवत ना समझु मोई, (२)
मोहे गुरु ने जीवत किया, (२) अब.....

मैं अनजान कछु ना जानूं, गुरु की महिमा ना पहिचानूं (२)
मोहे माटी सो कंचन किया, (२) अब.....

नैनण में ना सुझत मोहे, रात अंधेरी रस्ता नाहिं, (२)
मोहे गुरु ने रोशन किया, (२) अब.....

मोरे गृह में सतगुरु आये, सुत्ते हुऐ भाग जगाऐ, (२)
'अजायब' कृपाल सतगुरु लीया, (२) अब.....

अज जग विच खुशियाँ

(संत अजायब सिंह जी)

अज जग विच खुशियाँ वसीयाँ ने। (२)

सच्चा नूर जगत विच आया ऐ, गुलाब देवी दी कुख तो जाया ऐ। (२)
कृपाल जी नाम रखाया ऐ, चन चड़े ते रिशमां हंसीयां ने। अज जग...

पिता हुकम सिंह दा प्यारा ऐ, दुनिया दा बनया सहारा ऐ। (२)
सच्चे नाम दा लाया नारा ऐ, रूहां मैलियां तो कीतीयां अच्छीयाँ ने।अज जग...

दुनिया च अन्धेरा छाया ऐ, सतनाम दा चक्कर लाया ऐ। (२)
देशां परदेशां च छाया ऐ, रूहाँ कडीयां जो काल ने डसीयां ने।अज जग...

सावन तो सच्चा नाम लया, लखवार उसतों कुरबान गया। (२)
सतगुरु दी शरणी आन पया, आसां सावन दियां रखीयां ने। अज जग...

कोई जन्म दिहाड़ा मनौंदा ऐ, कोई बर्थ डे कहके गौंदा ऐ।(२)
'अजायब' कृपाल नूं चांहुदा ऐ, मनीयाँ जो बातां सच्चीयाँ ने।अज जग..

अड़ी वे अड़ी ना कर बन्दे वे अड़ी

(संत अजायब सिंह जी)

अड़ी वे अड़ी ना कर बन्दे वे अड़ी,
लगी नाम दी झड़ी, नाम जप सोहनया वे मौत सिर ते खड़ी,
नाम जप बन्दया वे।

हथ आया समां लाहा खट लै तूं नाम ओए,
लभना ना वारो वारी जामा इन्सान ओए, (२) जिन्द रह जानी पड़ी

लगी नाम दी झड़ी, नाम जप सोहनया,
वे मौत सिर ते खड़ी, नाम जप बन्दया वे।
अड़ी वे अड़ी.....

संगतां दे वालीया तूं संगत संभाल वे,
असी हां यतीम साडा रखना ख्याल वे, (२) पल–पल घड़ी वे घड़ी,

लगी नाम दी झड़ी, नाम जप सोहनया,
वे मौत सिर ते खड़ी, नाम जप बन्दया वे।
अड़ी वे अड़ी.....

तेरे जेही होर कोई दिसदी ना शान वे,
तेरे बिना सुन्ना मेरा हो गया जहान वे, (२) रोंवा दर ते खड़ी,
लगी नाम दी झड़ी, नाम जप सोहनया,
वे मौत सिर ते खड़ी, नाम जप बन्दया वे।
अड़ी वे अड़ी.....

तेरे ते दयाल प्रभु होया कृपाल वे,
लभ गया लाल ऐहनुं रख लई, संभाल वे, (२) अजैब छड दे अड़ी।

लगी नाम दी झड़ी, नाम जप सोहनया,
वे मौत सिर ते खड़ी, नाम जप बन्दया वे।
अड़ी वे अड़ी.....

अज शुभ दिहाड़ा है

(संत अजायब सिंह जी)

अज शुभ दिहाड़ा ऐ, भागां नाल आया ऐ,
सतगुरु जी प्यारे दा, अज दर्शन पाया ऐ। (२) । टेक ।
जग औजड़ उलझे नूं, जग भूले भटके नूं,
जग वहमां जकड़े नूं, जग थिड़के अटके नूं,
बानी उपदेश सुना, गुरां राहे पाया ऐ। (२)अज...
कुछ नूर दियां गल्लां, कुछ दूर दिया गल्लां,
होठां ते थरकण ऐओं, ज्यों सागर दिया छल्लां,
कुछ लघें वक्त दियां, कुछ ऐसे वक्त दियां,
कुछ अगले वक्त दियां, गलां कह–कह गुज्जियां दिल टुंब जगाया ऐ, अज...
इस फानी दुनिया चों, जो पुज्य प्यारा ऐ,
जो वस है लालच दे, बे चमक सितारा ऐ,
इस जग हनेरे चौं, पापां दे डेरे चों,
औदेते ऐदे चों, तेरे ते मेरे चों, सच्चे ते झूठे दा,
जिस भेद मिटाया ऐ, अज...
जो इस राहे आवे, जो इस राहे जावे,
नरकां दा भागी वी, स्वर्गां दी शह पावे,
ऐ अपनी खेती ऐ, ऐनूं जेहड़ा करदा ऐ,
अगेती जा पछेती ऐ, ना भुखां मरदा है,
इस राहे हर पापी, टुर भगत कहाया ऐ, अज..
ना विच मसीत मिले, ना विच मन्दिर प्रभु,
ना विच उजाड़ा दे, है सब अन्दर प्रभु,
इनां बाहरी अखियां नूं, जद बंदकर लैंदे हां,
गुरुआं दी सिखयां दा, सिमरन कर लैंदें हां,
गुरुआँ इस राहे पा, रब आप मिलाया ऐ, अज...
बूदां दे ओले चों, बदलां दे ओले चों,
कक्करां ते स्यालां चों, गर्मी दे शोले चों,
गुरुआँ दी कृपा ने, गुरुआँ दी बानी ने,
गुरुआँ दे वाकां ने, लख पापी कड्ढे ने,
जिन्हां ने गुरुआँ दा, इक नाम ध्याया ऐ, अज...
अजायब दी टेक ऐहो, कृपाल दे लग सेवे,
विच रजा दे रह राजी, प्रभु जो वी दे देवे,
ऐ रस्ता है तेरा, इस तों जे भटकेंगा,
औजड़ विच पै जाऐगां, जिल्लत विच अटकेंगा,
जिस गुरु भुलाया ऐ, उस सुख ना पाया ऐ, अज...

आ सजना देखां दर्शन तेरा

(गुरुबानी)

आ सजना देखां दर्शन तेरा, तूं घर आ सजना (२)

आवो सजना हऊ देखां दर्शन (२), देखां दर्शन तेरा। तू घर.....

घर अपनड़े खड़ी मैं तक्कां (२), मैं मन चाओ घनेरा। तू घर.....

मन चाओ घनेरा सुन प्रभ मेरा (२), मैं तेरा भरवासा। तू घर.....

दर्शन देख भई नेह केवल (२), जन्म मरण दुःख नासा।तू घर.....

सगली जोत जाता तू सोई (२), मिलेया भाए सुभाऐ। तू घर.....

'नानक' साजन को बल जाईए (२), सांच मिले घर आये।तू घर.....

आ गये दर ते भिखारी

(संत अजायब सिंह जी)

आ गये दरते भिखारी खैर पावीं दातेया । टेक । (२)

आऐ चल के सवाली मोड़ देवीं ना तूं खाली (२)
रिहा आसरा ना कोई फेरा पावीं दातेया। आ गये.....

चली कूड़ दी हनेरी सच पौंदा नहीं फेरी। (२)
दाता लावीं ना तूं देरी आ बचावीं दातेया। आ गये.....

रचना काल पसारी, धर्म उडया मार उडारी (२)
दाता लावीं ना तूं देरी आ बचावीं दातेया। आ गये.....

प्यार प्रेम कोई ना चाहवे, उलटा वाड़ खेत नूं, खावें (२)
तेरे बाज ना कोई बचावे, छेती आवीं दातेया। आ गये.....

घटां पाप दियां आ छाईयाँ, बिना कृपाल रूहां मुरझाईयाँ,
कहे 'अजैब' क्यों देरीयाँ लाईयाँ आके बचावीं दातेया। आ गये.....

आ गुरु कृपाल जी

(संत अजायब सिंह जी)

आ गुरु कृपाल जी खलक रो रही है। (२)

नहीं कोई जग ते तेरे जेहा दरदी, तेरे बिना दुनिया पई मरदी। (२)
जुल्म हस रिहा खुशी रो रही है। आ गुरु कृपाल.....

इक वारी जग ते तूं फेरा पा जा, परमार्थ दा खेड़ा वसा जा।(२)
सच्चाई दी हालत बुरी हो रही है। आ गुरु कृपाल.....

ईरखा ते वैर दे भाबंड़ चल दे, तेरी दया बिना पिछे ना टल दे। (२)
जगावो साड्डी रूह, जन्मा तो सो रही है। आ गुरु कृपाल.....

नूरी दर्श की झलक दिखा जा, तपदीयां रूहां नूं ठण्ड वरता जा।(२)
'अजैब' दी अरज सदा हो रही है। आ गुरु कृपाल.....

आ कृपाल गुरु चित चरनी जोड दियो

(संत अजायब सिंह जी)

आ कृपाल गुरु चित चरनी जोड दियो,
जान्दा बदियां वल मन साडा मोड लियो। (२)

जेकर चाहुनां ऐ तां भक्ति लाऊनां ऐं,
जेकर चाहुनां ऐ तां दूर हटाऊनां ऐं। (२) आ कृपाल गुरु.....

तेरी मंजिल साथों दूर दराडी वे,
तेरे हथ साईयां है डोर असाडी वे। (२) आ कृपाल गुरु.....

आवे मौज धरती हेठ बिठाउनां ऐ तूं,
आवे मौज ते असमान उडाउनां ऐ तूं। (२) आ कृपाल गुरु.....

साडीयाँ लगीयां नूं हुण तोड़ निभा देवीं,
रूहां तेरियां नूं सच्च खण्ड पुचा देवीं (२) आ कृपाल गुरु.....

तैथों विछड़यां नूं तूं आप मिलौना ऐ,
बोल अजायब रिहा तूं जिवें बुलौना ऐ। (२) आ कृपाल गुरु.....

आ कृपाल गुरु मैं शगन मनौन्दी हाँ

(संत अजायब सिंह जी)

आ कृपाल गुरु मैं शगन मनौन्दी हाँ, कि दर्शन दे जावो मैं वास्ते पौन्दी हाँ।।
आ कृपाल गुरु.....
आओ सतगुरु जी मैं अर्जा करदी हां, तेरी संगत दा मैं पानी भरदी हां। (२)
आ कृपाल गुरु.....
तेरी झलकी तों सूरज शरमौन्दा ऐ, कि तेरी महिमा दा कोई अन्त ना पौन्दा ए। (२)
आ कृपाल गुरु.....
तेरे बचनाँ ते मैं आण खलो गई हाँ, कि रख लै पत साईयाँ मैं तेरी हो गई हाँ। (२)
आ कृपाल गुरु.....
भिछिया पावीं तूं है पर उपकारी वे, खाली मोड़ी ना दर आए भिखारी वे। (२)
आ कृपाल गुरु.....
तेरी संगत दा तूं आप सहारा हैं, तेरे दर आया 'अजायब' विचारा है। (२)
आ कृपाल गुरु.....

आऐ जी तेरे दर ते भिखारी

(संत अजायब सिंह जी)

आऐ जी तेरे, दर ते भिखारी, खैर पावो। । टेक । (२)
तेरा दरबार सच्चा, होवे दीदार सच्चा,
मिलदा है प्यार सच्चा, बेड़ा है पार सच्चा। (२)
आओ, बन के उपकारी खैर पावो, आऐ जी.....
तेरी है शान निराली, दुःखियां दा तूं है वाली,
रूहां दे बाग दा माली, कट देवो आजम जाली। (२)
तेरी, महिमा निराली खैर पावो, आऐ जी.....
होंमे दा रोग हटावो, नूरी जो झलक दिखावो,
सच्चा जो शबद सुनाओ, नाम दी खैर पावो। (२)
देवो, झलक नियारी खैर पावो, आऐ जी.....
दुनिया दा देख पसारा, चलदा ना कोई चारा,
अजायब सी कौन विचारा, दित्ता कृपाल सहारा। (२)
साडी, कट देवो बिमारी खैर पावो, आऐ जी.....

आन के द्वारे उत्ते बैठे

(संत अजायब सिंह जी)

आन के द्वारे उत्ते बैठे मेरे दातेया,
अपनियां रूहां नूं संभाल मेरे दातेया, अपनियां रूहां नूं संभाल, (२)

नरकां च सुटने लई काल है वगांरदा, रूहां दे फसौने नूं बहुत रूप धार दा,(२)
वासता ऐ रब दा, बचाईं मेरे दातेया, दुःखियां दी सुन के पुकार, मेरे दातेया।
अपनियां रूहां.....

कूड़ दा हनेरा जग उत्ते आके छा गया, छुप गया सच्च उड अम्बरां नूं धा गया,(२)
दया ते धर्म, घबराये मेरे दातेया, ओखे वेले पुछ लियो सार, मेरे दातेया।
अपनियां रूहां.....

सारीयां जगहां दे उत्ते पाए फन्दे काल ने, जाल जो बिछाए ऐह टुटने मुहाल ने, (२)
दरगाह च आन के, बचाईं मेरे दातेया, सतगुरु दीन दयाल, मेरे दातेया।
अपनियां रूहां.....

धन कृपाल धन सावन प्यारेया, तपदे 'अजैब' नूं पलां दे विच ठारेया, (२)
संगत नूं दर्श, दिखाईं, मेरे दातेया, भुलिये ना तेरा उपकार, मेरे दातेया।
अपनियां रूहां.....

आओ–आओ शाह कृपाल साईं

(संत अजायब सिंह जी)आओ–आओ शाह कृपाल साईं, सोहना आके दर्श दिखा देओ।

तेरा दर्श इलाही दुख तोड़ देओ। (२)
कई जन्मा दे टुटे दिल जोड़ देओ। (२) आओ.....

तेरी सोहनी झलक निराली ऐ। (२)
ओह जीवन बक्शन वाली ऐ। (२) आओ.....

ताघाँ मेरे दिल नूं लगीयां पिया। (२)
सटां आन विछोड़े दियां वजीयां पिया। (२) आओ.....

असीं जन्मा दे अन्धे ना रोल पिया। (२)
बन्द अखियाँ दयाकर खोल पिया। (२) आओ.....

तेरा नाम सच्चा दुःख नाशक है,
'अजायब' तेरे चरनां दा आशिक है। आओ.....

आओ दर्शन करिये गुरु प्यारे दा

(संत अजायब सिंह जी)

आओ दर्शन करीये गुरु प्यारे दा। (२)

दर्शन जो कृपाल दा कर गये, नाम दान दी झोली भर गये। (२)
नाम जपत है तरिये, सतगुरु प्यारे दा। आओ.....

अन्दर नाम जिन्हां ने रटिया, जन्म मरण दा गेड़ा कटिया। (२)
सद बलिहारे करिये, सतगुरु प्यारे दा। आओ.....

सतसंगत दे चौज़ न्यारे, भवसागर तों संगत तारे। (२)
लख शुक्राना करिये, गुरु नजारे दा। आओ.....

मेर तेर दा भरम चुकाया, सतनाम दा जाप कराया। (२)
उसत्त हरदम करिये, पर उपकारे दा। आओ.....

वाह वाह सब दुनिया ते होई, दर तेरे बिना मिली ना ढोई। (२)
'अजायब' लड़ फड़िये, कृपाल दातारे दा। आओ.....

आओ दयाल प्रभु कृपाल

(संत अजायब सिंह जी)

आओ दयाल प्रभु कृपाल पिया, सानूं दर्श दिखा जाओ (२)

पाके दर्श में तपत बुझावां, वारी जावां ते घोली जावां। (२)
आके जीवां नूं अमृत पियाल पिया, सानूं दर्श दिखा जाओ। आओ दयाल...

असीं जन्म–जन्म दे रोगी, कामी क्रोधी कपटी भोगी। (२)
साडा कटदे माया जाल पिया, सानूं दर्श दिखा जाओ। आओ दयाल...

हुण तां डोले जग दा बेड़ा, बन्ने लावे होर हुण केहड़ा। (२)
साडा दुःखीयां दा रखियो ख्याल पिया, सानूं दर्श दिखा जाओ।आओ दयाल...

नाम दान दी झोली भर दे, मुरदा रूहां नूं जिन्दा कर दे। (२)
रूहां अपनियां आप संभाल पिया, सानूं दर्श दिखा जाओ। आओ दयाल...

आ कृपाल 'अजैब' दे साईयां, तेरे बाज रूहां मुरझाईयां। (२)

लड़ लगिया दी लजियां पाल पिया, सानूं दर्श दिखा जाओ। आओ दयाल..

आओ याद मनाइये सावन दी

(संत अजायब सिंह जी)

आओ याद मनाइये सावन दी, कुल मालिक रूहां दा व्यापारी है।
रब धार के चोला सावन दा, सच्चे नाम दा बनया भंडारी है।

रूहा सुतियां नूं आन जगौन्दा रिहा, दाता नाम दियां सदा ही लुटौंदा रिहा। (२)
ऊँच नीच दे बंधन तोड़ दित्ते, बन आया ओह उपकारी है।आओ याद...

ओह जन्म मरण तों ऊँचा है, ओह सुच्चयां तो भी सुच्चा है। (२)
ओह वासी सोहना सच्चखंड दा, कलयुग विच दुनियां तारी ऐ।आओ याद...

ओहदे नाम नूं जिसने रट्या है, यश दोंहा जहानां तों खट्या है। (२)
ओह कटदा गेड़ चौरासी दे, ओहदे दर्श दी झलक न्यारी ऐ।आओ याद...

ओह ज्योत इलाही आई है, ओहदी घट घट विच रोशनाई है। (२)
'अजायब' गुण गाईऐ, शाह सावन दे, उस डुबदी दुनिया तारी ऐ।आओ याद...

आओ कृपाल प्यारे

(संत अजायब सिंह जी)

आओ कृपाल प्यारे, दुःख दर्द विछोड़ा पल–पल दा (२), आओ आओ (२)। टेक।
तेरे ही प्यार विच लाईयां सी मैं अखियां, तक–तक राह तेरा सोहनया वे थकीयां (२)
आके नूरी झलक दिखादे, तूं मालिक दाता जल थल दा (२), आओ आओ।
आओ कृपाल प्यारे.....

दुनियां ते दिसे तेरे जेहा कोई होर ना, तेरे बिना सानूं होर किसे दी वी लोड़ ना। (२)
तूं हैं दुःखी दिलां दा जानी, है तेरा सहारा पल–पल दा (२), आओ आओ
आओ कृपाल प्यारे.....

याद तेरी विच असीं दिन हां गुजारदे, ठाठां तेरे मारदे समुन्द्र प्यार दे। (२)
करो तरस ते पार लगावो, कोई अन्त ना आवे दल–दल दा (२), आओ आओ।
आओ कृपाल प्यारे.....

घट–घट विच तेरी झलक दिखावें तूं, आप दया कर नाम जीवां नूं जपावें तूं (२)
तेरे प्यार दा अजायब भौंरा, किवें सहे विछोड़ा पल–पल दा (२), आओ आओ।
आओ कृपाल प्यारे.....

आओ सतगुरु आओ जी

(संत अजायब सिंह जी)

आओ सतगुरु आओ जी, दुखीयां दे दर्द मिटावो।
दिलां दी तपस बुझावो, सतगुरु जी आओ।।टेक।।

प्रेम तेरे विच बैठी हरदम, तेरी याद मनावां,
विसर गया मैनूं खाना पीना, तेरे ही गुण गावां। (२)
पावो फेरा पावोजी, अमृत दा जाम पिलावो। दिलां दी.....

मैं पापी अपराधी दाता, तूं बखशिदं प्यारा,
दुखीयां दे दुख दूर करन लईं, देवो आप सहारा (२)
ठावो सतगुरु ठावो जी, जांदा मन बदियां वलो। दिलां दी.....

तेरे पाऐ पूरनियां ते, डर–डर कदम टिकावां,
जिनीं राहीं मेरा सांई लघियां, निऊं निऊं सीस झुकावां। (२)
आओ सतगुरु आओ जी, रूहां सचखण्ड पहुँचाओ। दिलां दी.....

मैं गरीब 'अजायब' हां साईयां, तूं शाह कृपाल प्यारा,
मेरा कोई नाम ना जाने, सब तेरा खेल नियारा। (२)
लावो सतगुरु लावो जी, अपने जी चरनी लावो। दिलां दी.....

आया कृपाल अड़ियो नी

(संत अजायब सिंह जी)

आया कृपाल अड़ियो नी, चनं सावन दा रोशनाई।

दर–दर फिरां भालदी, किते मिल जांई मेरेयां साईयां।(२)
हाल मेरा बुरा अड़ियो नी, मैं रोंदी विच जुदाईयां। (२)
पीड़ विछोड़े दी, मेरे सोहने ने आके ठाई,
आया कृपाल अड़ियो नी.....

मैं सारा जग ढूंढ लिया, दस पीया दी कोई ना पावे। (२)
रोंदी फिरां ताहां मार के, मेरा वस ना कोई वी जावे।(२)
नित रोवाँ याद कराँ, मैंनूं आखन लोक शदाई।
आया कृपाल अड़ियो नी.....

दोवें हथ जोड़ जोड़ के, तेरे अग्गे वास्ते पावां। (२)
होर कुछ मंगदा नहीं, तेरे नाम दा आसरा चाहवाँ। (२)
दया करी जीवां ते, सतसंगत रीत चलाई।
आया कृपाल अड़ियो नी.....

मैं तेरी हो गई ओंदो सोहनया, तेरा तीर कलेजे विच वजियां। (२)
धन कृपाल प्यारेया रख लई तैं, 'अजायब' दी लज्जिया।(२)
जागे मेरे भाग विरनो, घर जोत इलाही आई।
आया कृपाल अड़ियो नी.....

आया लाहा लैण प्राणी

(संत अजायब सिंह जी)

आया लाहा लैण प्राणी, आया लाहा लैण।

वड्डे भागां नाल है मिलया, जामा ऐह इन्सानी,
जिवें बिरछ परछावां ढलदा, ढलदी ऐंवे जवानी। (२)
सन्त शरण विच आजा बन्दे, हो जाए कम आसानी।
लाहा लैण प्राणी, आया लाहा लैण.....

चढ़ी जवानी हो मस्तानी, रब दी याद भुलाई,
ढलिया सूरज हुस्न जवानी, रात बुढ़ेपा आई। (२)
वस पराये होणा पै गया, चले ना मनमानी।
लाहा लैण प्राणी, आया लाहा लैण.....

रस्ता बिखड़ा बड़ा भयानक, चलदा ना कोई चारा,
नाम दी पूँजी बन्न लै पल्ले, हो जाऐ पार उतारा। (२)
शरण गुरु दी पैजा बन्दे, दिल दा मिल जाऐ जानी।
लाहा लैण प्राणी, आया लाहा लैण.....

अन्त वेले कोई ना पुछदा, ना भैणां ना भाई,
सतगुरु पूरा विच दरगाह दे, होवे आण सहाई। (२)
आ कृपाल 'अजायब' नूं मिलयां, सफल होई जिन्दगानी।
लाहा लैण प्राणी, आया लाहा लैण.....

आया सतगुरु आया नी

(संत अजायब सिंह जी)

आया सतगुरु आया नी, सोहना कृपाल रंगीला,
मेरे ओह दिल दा जानी, माही मेरा आ गया। (२)

दिल मेरे विच तांघ ओसदी, वांग पपीहे बोलां,
राह तक तक के थक गई अड़ियो, दिन राती मैं टोलां।(२)
आया फेरा पाया नी, मेरा ऐ कन्त रंगीला।
मेरे ओह दिल दा जानी, माही मेरा आ गया।
आया सतगुरु.....

ओहदी झलक निराली अड़ियो, सूरज तो भी न्यारी,
सतनाम दा जाप कराके, तपदी दुनियां ठारी। (२)
आया भेद बताया नी, दुःखियां दा बने वसीला।
मेरे ओह दिल दा जानी, माही मेरा आ गया।
आया सतगुरु.....

गुलाब देवी माता दा जाया, है संगत दा वाली,
पिता हुकम सिंह नूं देयो वधाईयां, आई ज्योत निराली।(२)
आया जग विच आया नी, भक्ति भण्डार जोशीला।
मेरे ओह दिल दा जानी, माही मेरा आ गया।
आया सतगुरु.....

सावन शाह दा बेटा नी अड़ियो, नाम ओहदा कृपाल,
मैं परदेसन जिन्द 'अजायब' ते, होया आन दयाल। (२)
आया घर विच आया नी, सोहना ओह है अणखीला।
मेरे ओह दिल दा जानी, माही मेरा आ गया।
आया सतगुरु.....

आया सावन झड़ियां ला गया

(संत अजायब सिंह जी)

आया सावन (२) झड़ियां ला गया, रूहां सच्चखण्ड विच पुचा गया। (२)
आया सावन.....

ओहदे मिठड़े बोल सुहावने, अमृत दियां बुन्दां वरसदियां। (२)
ओहदी सोहनी मोहनी सूरत है, देखन नूं संगता तरसदियां। (२)
आया सावन.....

सच्चखण्ड तो सावन आयके, ऐह सोहना बाग सजा गया। (२)
सच्चे नाम दे बूटे लायके, सतसंग दा पानी पा गया। (२)
आया सावन.....

ओह तन करके ही दूर है सच्चा, शब्द ओह साथो वख नहीं। (२)
ओह घट घट दे विच वस रिहा, साडी वेखन वाली अँख नहीं। (२)
आया सावन.....

तेरे पर–उपकार ना लिख सकां, मेरे सावन शाह प्यारेया। (२)
लख लख शुक्राना 'अजायब' करे, साडे तपदे दिलां नूं ठारेया। (२)
आया सावन.....

आजा प्यारे सतगुरु आजा

(संत कृपाल सिंह जी)

आजा प्यारे, सतगुरु आजा, अपनी सूरत मैनूं वखा जा।। टेक ।

सीदी सादी सूरत तेरी, प्यारी–प्यारी मूरत तेरी। (२)
चेहरा रब दा जलवा दिस्से, दिल नूं लुभावन वाले, आजा।आजा.....

सोहना मत्था चिट्टी पगड़ी, नूर चमके हर लिव लगड़ी। (२)
अखियां प्रेम प्याले भरीयां, भरोटे नूर पलटे, आजा। आजा.....

जुल्फां तेरीयां रेशम तारां, नूर इलाही दिया देन चमकारां। (२)
इक–इक वाल सिर दे उत्तों, दोवें आलम वारां, आजा। आजा.....

मुखड़ा सुहावा सहज धुन बानी, सुन–सुन पावां कन्त निशानी। (२)
रसीले बैंन अति मिठ्ड़ी बोली, मिटावन तपत हिरदे। दी आजा,आजा.....

सुच्ची दाड़ी छाती ते आवे, बग्गी हो–हो नूर बरसावे। (२)
लाली नाम दी भा पई मारे, गरीबी सिखावन वाले, आजा।आजा.....

आजा–आजा–आजा मेरे कृपाल जी

(संत अजायब सिंह जी)

आजा, आजा आजा मेरे कृपाल जी, दुःखीयाँ दे सहारे।
है कौन जो बिगड़ी मेरी, तकदीर संवारे। । टेक । (२)

आ वेखीं तेरे सेवकां दा, हाल की होया, है हाल की होया।(२)
अज खेरूँ–खेरूँ हो गये ने, सब वीर प्यारे।
है कौन जो.....

अज तेरे बाजों दाताजी, अन्धेर हो गया, अन्धेर हो गया। (२)
देवो दर्शन आके जी, सावन दे प्यारे।
है कौन जो.....

पापां दी हनेरी चली ऐ बचाओ आयके, बचावो आयके। (२)
ना तेरे बाजों होर सहारा, सतगुरु जी प्यारे।
है कौन जो.....

इस दुनियां सड़दी बलदी दे, भांबड़ है मच रहे, भांबड़ है मच रहे। (२)
दया करो दाता जी, लावो अमृत फुहारे,
है कोन जो.....

संगत दा तूं हैं राखा, जी इक अरज 'अजैब' करे । (२)
मैं रखया आसरा तेरा, छड्डे होर सहारे,
है कौन जो.....

इक अरज अजायब गुजारे

(संत अजायब सिंह जी)

इक अरज अजायब गुजारे, लगियां ताघां कृपाल दियां,
मैं जावां तैथों वारे, कुछ गल्लां सुन लै प्यार दियां,
ऐह रूहाँ सत करतार दियां। (२) ।। टेक ।।

काल दे काबू जो वी औंदां, हर वेले पछतावे,
फड़के नथ कसूती पौंदा, बांदर वांग नचावे,
दुःख दे के तसीहे मारे, कुछ गल्लां सुन लै प्यार दियां।
ऐह रूहां सत.....

दुनियां दे विच मालिक औदां, अपना आप छुपाके,
परमार्थ दा दस्से रस्ता, संगत विच सुनाके,
तन मन संगत तों वारे, कुछ गल्लां सुन लै प्यार दियां।
ऐह रूहाँ सत.....

सत संगत दी महिमा ऊँची, सुनदे आ वडभागी,
जागे भाग पुराने सजनों, सुत्ती किस्मत जागी,
सतगुरु दा नाम उचारे, कुछ गल्लां सुन लै प्यार दियां।
ऐह रूहाँ सत.....

तेरी महिमा अजब न्यारी, तूं संगत दा वाली,
सावन शाह तों लै के भिछया, झोलियाँ भरदा खाली,
'अजायब' दे काज संवारे, कुछ गल्लां सुन लै प्यार दियां।
ऐह रूहाँ सत.....

इस प्रेम दी दुनियां

(संत अजायब सिंह जी)

इस प्रेम दी दुनियां विच सजना, नुकसान उठौना पैंदा है।
पिछों प्रीतम प्यारा तां मिलदा, पहलां सिर कटवौना पैंदा है।। टेक ।

जिसने वी प्रेम कमाया ऐ, ना अपना आप लुकाया ऐ,
जो वी मन भेंट चड़ौंदा ऐ, ओह हाजर रब नूं पौंदा ऐ। (२)
वेहड़ा है जेकर साफ दिलदा, विच प्रीतम आके बैहंदा ऐ।
इस प्रेम दी दुनियां.....

ऐह प्रेम दा रस्ता बिखड़ा ऐ, खण्डे दी धार तो तिखड़ा ऐ,
सूली ते चड़ना सौखा ऐ, सच्चा प्रेम कमौणां औखा ऐ। (२)
ओह मालिक तां ही खुश होवे, जीवंदे ही मरना पैंदा ऐ।
इस प्रेम दी दुनियां.....

ना मिलदा प्रेम बजारां विच, ना पर्वत ना पहाड़ां विच,
ना सागर दियां लहरां धारां विच, ना शहरां ते ना उजाड़ां विच।
(२)
उस प्रभु दा मन्दिर अन्दर है, जो प्रेम करे सो लैंदा ऐ।
इस प्रेम दी दुनियां.....

सच्चा प्रेम जो अन्दरों करना चाहे, ओह शीश तली ते धरके आऐ,
जो सिर चरनां ते धरदा ऐ, ओह मरनो मूल ना डरदा ऐ। (२)
कृपाल गुरु जी बक्श लवो, अजायब दुखड़े सहिदां ऐ।
इस प्रेम दी दुनियां.....

इक जोत निराली

(संत अजायब सिंह जी)

इक जोत निराली आई, दुखियां दा बने सहाई,
दर्द मिटावन नूं, जी नाम जपावन नूं। (२)

जद कूड़ दी मस्या आए, सच छिप जादां ऐ,
जद जुल्म दे बद्दल औन, धर्म कुम्हलांदा ऐ। (२)
जद मौज प्रभु दी आए, ओह जाहरी कला दिखाए,
जुल्म हटावन नूं, जी नाम जपावन नूं,
इक जोत निराली आई.....

ओह सब दा सांझी वाल, ते नाम जपौंदा ऐ,
मन हुकम गुरु दा, अमृत जाम पिलौंदा ऐ। (२)
ओह बन्दा बनके आया, सचखंड दा भेद बताया,
मिलके सावन नूं, जी नाम जपावन नूं।
इक जोत निराली आई.....

असी जन्म–जन्म दे मैले, उजल करौंदा ऐ,
बन रूह दा धोबी, आप मैल नूं लौंदा ऐ। (२)
साडी पेश ना कोई जावे, ओह हरदम ही समझावे,
रस्ते पावन नूं, जी नाम जपावन नूं।
इक जोत निराली आई.....

पिता हुकम सिंह दा प्यारा, नूर इलाही ऐ,
गरीब 'अजायब' चाहे सहारा, होऐ सहाई ऐ। (२)
मिलके है संगता आंइयाँ, गुलाब देवी नूं देयो वधाईयां,
भडांरा कृपाल मनावन नूं जी नाम जपावन नूं।
इक जोत निराली आई.....

इक दर्दमंद दिल की हालत

(संत कृपाल सिंह जी)

इक दर्दमंद दिल की हालत तुम्हें बतायें।
क्या चीज़ है मुहब्बत आओ तुम्हें सुनायें।

अफशाऐ राजे उल्फ़त, तौहीने आशकी है। (२)
मिट जाएं लब पे लेकिन (२) क्यों नाम उनका लायें।

दुनियां से क्या गरज है, दुनियां से पूछना क्या। (२)
मैं तुझसे पूछता हूँ (२) क्या चीज है वफायें।

बीमार ने ये कहकर, फुर्क़त में जान दे दी। (२)
अब कौन राह देखे (२) वह आयें या न आयें।

मुझको जगाने वाले, अब खुद भी जागते हैं।(२)
मजबूर दिल की आहें (२) खाली गई न जायें।

सावन गले लगाकर

(संत कृपाल सिंह जी)

सावन गले लगाकर, बांहो का हार डालो।
शैदा बना के अपना, उल्फ़त में मार डालो।

आंखों में बस रहे हो, घर दिल में कर चुके हो।
अब तो हया का परदा, रुख से उतार डालो।

मजनूं की कब्र पर ये, कुत्बा लगा हुआ था।
नामे वफ़ा पे सब कुछ, तन–मन भी वार डालो।

उल्फ़त में हाय अब तो, इक जान बच रही है।
उसको भी ऐ ज़माल अब, बाज़ी में हार डालो।

ऐह मानस जामे नूं

(संत अजायब सिंह जी)

ऐह मानस जामे नूं, सोहनयां लावीं तूं हुण लेखे। । टेक । (२)

ना संगत विच तूं औंदा वे, ना अंदर झाती पौंदा वे। (२)
जे अपना मन समझावे वे, तूं लाहा खट के जावें । (२)
छडदे अड़ीयां, मन समझा लै, दिल चौं कढ भुलेखे। ऐह मानस.....

तूं याद प्रभु नूं करिया वे, ना विच गर्भ दे सड़या वे। (२)
मालिक ने आन बचाया, वे तूं बाहर आन भुलाया। (२)
करलै बंदगी बचना जे तूं, जिंदगी लावीं लेखे। ऐह मानस.....

गुरु पूरा लभीं अपना वे, जूनां तों जेकर बचना वे। (२)
विषयां विच काल फसावे, वे कोई विरला बचके जावे।(२)
बिना गुरु तों रूह जे मिल जाऐ, गिन–गिन लैंदा लेखे।ऐह मानस.....

जो हिरदा साफ बनाऐ वे, ओथे ही मालिक आये वे। (२)
बोले 'अजायब' नकारा वे, मिलाया कृपाल प्यारा। (२)
ऐह गल्लां दा मजबून नहीं, कोई वी करके देखे। ऐह मानस.....

ऐह दुनियां परौणी सजना ओए

(संत अजायब सिंह जी)

ऐह दुनियां परौणी सजना ओए, इस जगत सरां नूं छडना ओए।
भांडा जो घड़या (२), भजना ओए, ऐथों कूच नगारा वजना ओए।
वीर मेरया जिन्दगी, जिन्दगी दा कोई दिन मेला ऐ, हुण नाम जपन दा वेला ऐ।

जो मेरी–मेरी करदा ऐ, ओह मरनो मूल ना डरदा ऐ।
जो बाज गुरु तों (२), मरदा ऐ होमें विच सड़दा बलदा ऐ। वीर मेरया.....

जेहड़ी सोहनी शक्ल निराली ऐ, बिना नाम तो जिन्दगी खाली ऐ।
दुनियां दी झूठी (२), लाली ऐ समझो ऐह जहर पियाली ऐ। वीर मेरया.....

जो राम–राम ना कहिदां ऐ, ओह डंड जमां दा सहिदां ऐ।
जा विच चौरासी (२), पैंदा ऐ नरकां दे दुखड़े सहिदां ऐ। वीर मेरया.....

'अजायब' जदों घबराया सी, चलके कृपाल जी आया सी।
छाती नाल फड़के (२), लाया सी रुड़दे नूं आन बचाया सी।वीर मेरया.....

ऐह ते देश पराया ओए सजना

(संत अजायब सिंह जी)

ऐह ते देश पराया ओए सजना।
तूं प्यार क्यों ऐना, पाया ओए सजना। । टेक ।

आया जो ऐथे, सबने तुर जाना, रहना ना ऐथे, कोई राजा राना। (२)
जिंदगी बिरछ दी, छाया ओए सजना, तूं प्यार क्यों.....

कोई दिन ऐथे रैन बसेरा, झूठे सब नाते कोई ना तेरा। (२)
सतगुरु ने समझाया, ओएं सजना, तूं प्यार क्यों.....

करके सिमरन, मन समझा लै, भुल्लाँ गुरु तों, माफ करा लै। (२)
दाते दा नाम क्यों, भुलाया ओए सजना, तूं प्यार क्यों.....

पल्ला गुरु, कृपाल दा फड़ लै, भवसागर तों, 'अजायब' तूं तर लै। (२)
झुठा जगत, झुठी माया ओए सजना, तूं प्यार क्यों.....

उठ जाग मुसाफिर

(संत कबीरदास जी)

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहां जो सोवत है।
जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो खोवत है। । टेक ।

उठ नींद से अखियां खोल जरा, और अपने गुरु से ध्यान लगा।
यह प्रीत करन की रीत नहीं, गुरु जागत है तूं सोवत है।उठ जाग.....

जो कल करना सो अज करले, जो अज करना सो अब करले।
जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया, फिर पछताये क्या होवत है।उठ जाग.....

नादान भुगत करनी अपनी, ऐ पापी पाप में चैन कहां।
जब पाप की गठड़ी शीश धरी, तब शीश पकड़ क्यों रोवत है।उठ जाग.....

उड़के गुराँ नूं मिलिये

(गुरुवाणी)उड़के गुराँ नूं मिलिऐ,जे खम्ब विकदे होन बजारी।

खम्ब विकंदड़े ये लहां, (२)
घिना सावी तोल। जे खम्ब.....

तन जड़ाई आपने, (२)
लहां सो साजन टोल। जे खम्ब.....

सजन सच्चा पातशाह, (२)
सिर शाहां दै शांहो। जे खम्ब.....

जिस पास बैठयां सोहियै, (२)
सबना दा बसाहो। जे खम्ब.....

ओ दर दर दे फिरने नालों

(संत अजायब सिंह जी)

ओ दर दर दे फिरने नालों, सतगुरु दे दर ते ढह जा।
ओ धंधे सब झुठे छडके, लाहा खट जग तों लै जा।

नाम भुलावें दुःख उठावें, कीते कर्मा दा फल पावें। (२)
नाम गुरु दा जप लै सच्चा, भाणें दे विच रह जा। लाहा खट.....

तेरा तेरा कहिंदा ऐं तूं, सुक्खां दा साह लैंदा ऐ तूं। (२)
रस्ता झुठा छड के सजना, सच्चे रस्ते पै जा। लाहा खट.....

जो वी शरण गुरु दी आवें, मुहों मंगिया मुरांदा पावें। (२)
छडके झुठे झगड़े सारे, गुरु शरण विच पै जा। लाहा खट.....

'अजायब' सच्चा प्यार होणा, लब जाऐ कृपाल सोहना। (२)
सच्चा सतगुरु मिल गया, सतगुरु दी शरणी पै जा। लाहा खट.....

ओह सोहना ऐना सोहना सी

(महाराज कृपाल सिंह जी)

ओह सोहना ऐना सोहना सी, जां दिसदा सी चन चड़दा सी।
मन मोती लै लै हझुंआँ दे दरबार ओदे विच जड़दा सी।।

ओहदे चार चुफेरे देखी में, घुमदी सी मस्ती कुदरत दी।
ओह इको–इक ही देखी में, दुनियां ते हस्ती कुदरत दी।।

ओनू वेख–वेख के फुलां ते, इक नवीं जवानी औंदी ऐ।
कलीयां दे हासें खिड़दे सी, अखियां विच मस्ती गौंदी ऐ।।

औदे नैणा चौं लै चमक–चमक, बिजली चमकारे सिखे सी।
ऐसे लई भिनी रेनडियें, पऐ चमकन तारे सिखे सी।।

औंदा तेज सी ऐना मथे दा, चन सूरज वी शरमौंदे सी।
अंखिया दी मस्ती तक–तक के, नरगस नूं झुटे औंदे सी।।

ओह सोलाह कला संपुरण सी, हर साज दी मिठी तान सी ओह।
बे समझा लई इन्सान सी ओह, पर भगतां लई भगवान सी ओ।।

ओ केहो जैहासी कैसा सी, नहीं दिती जा तसबीह सकदी।
जे कदे कोई गलती कर बैठे, औहदी मूर्खता नहीं जी सकदी।।

ओह नूर इलाही शांतमई, जद मस्ती दे विच औंदा सी।
डुबे होऐ पापी बन्दया दे, बन्ने ते बेड़े लौंदा सी।।

ओह निगाह नाल ही कर देंदा सी, कर दौलत मंद फकीरां नू।
सी कासे हथ फड़ा देदां, कई हैकड़ खां अमीरां नू।।

ओह चमका दे दे धरती दे, जरे नूं सूरज करदा सी।
जैनू लौकी कारु कहिदें सी, ओह कुकर ओदे दर दा सी।।

ओह सी परतख परमाण नहीं, कोई शै भी ओदे तुलदी नही।
ऐहे दुनियां दी दौलत दिसदी, जो औदी धुड़ी दे वी मुल दी नहीं।।

ओह अख जा गहरी करदा सी, सागर दा सीना सड़दा सी।
ओह धूरी वट जो वैंदा सी, सूरज ना डरदा चड़दा सी।।

ओंनू चन सितारे अम्बर वी, झुक–झुक के सजदे करदे सी।
बन–बन के बद्दल सावन दे, औदा आ–आ पानी भरदे सी।।

ओह कौन सी महरम दस देवां, ओह सावन सिंह प्यारा सी।
ओह जयमल सिंह दीयां अखां दा, अरशा तो आया तारा सी।।

ओ अकल के अन्धे देख जरा

ओ अकल के अंधे देख जरा, तैनूं सतगुरु दितियां अखियां ने
हर कदम ते ठोकर खाना ऐ, ऐहे अखीयां कास नूं रखियां ने,
ओ अकल के.....

कई मारे मर गये अखीयां दे, कई तारे तर गये अखियां दे, (२)
ऐ जहर ते अमृत अखीयां विच, ऐ रमजां किसने लिखियां ने,
ओ अकल के.....

इक अख कौडी दे मुलदी ऐ, इक अख मौती नाल तुलदी ऐ(२)
इक अख दे बैरी हजारां ने, इक अख दिया लखां सखियां ने,
ओ अकल के.....

तेरी अख माया तो रजदी नहीं, सतगुरु वाले पासे लगदी नहीं(२)
हुन भुल के असल ठिकाने नूं, जा होर टिकाने फसियां ने,
ओ अकल के.....

ऐ पैं गईयां होर हिसाबां नूं, पई वेखन रोज किताबां नूं, (२)
कदे झात ना मारी दिलबर वल, जिसने तैनूं दितियां अखियां ने,
ओ अकल के.....

राह बिखड़ा मंजिल दूर तेरी, मगरुरों अख बे नूर तेरी (२)
जदों चल देयां डिग पैने आ, आसां सतगुरु दियां रखियां ने,
ओ अकल के.....

दास ना दास ओ प्रेमी सी, 'निर्मल' परवाने सड़दे ने (२)
की रीस करां परवाने दी, थां–थां ते मरदियां सखियां ने,
ओ अकल के.....

ओ सिक्खा सिक्खी

(संत अजायब सिंह जी)

ओ सिक्खा सिक्खी दा निभोणां औखा ऐ। । टेक ।

मैं मेरी हटोनी पैंदी ऐ, भेंटा सिर दी चड़ौणी पैंदी ऐ। (२)
सिक्ख नाम रखाऊँणां सौखा ऐ।
ओ सिक्खा.....

पहलां अन्दरों मैल नूं धोना पवे,
फिर सोहणे दी याद विच रोना पवे। (२)
ठन्डा भरना पैंदा होका ऐ।
ओ सिक्खा.....

जो पीया नूं मिलना चौंदा ऐ,
सच्चे दिल तों प्रेम कमांऊँदा ऐ। (२)
सोहणां रब मिलने दा मौका ऐ।
ओ सिक्खा.....

जीऊँदे ही जग ते मरना पवे,
सुख छडके सूली ते चड़ना पवे। (२)
बाहरो सेवक सदाऊँणां सौखा ऐ।
ओ सिक्खा.....

जे विष्यां तों सिक्ख आज़ाद होवे,
अन्दर गुरु कृपाल दा राज होवे। (२)
'अजायब' दरगाह च जाणां फेर सौखा ऐ।
ओ सिैखा.....

कोई गुण ना

(गुरुवाणी)

कोई गुण ना गुरु जी विच मेरे औगुणां दा मैं भरेया। (२)

सब अवगुण मैं, गुण नहीं कोई (२)
क्यों कर कन्त, मिलावा होई, औगुणा.....

ना मैं रूप ना, बांके नैणां (२)
ना कुल ढंग, ना मीठै वैणां, औगुणा.....

हम अवगुण भरे, एक गुण नाहीं (२)
अमृत छाड, विखै विख खाही, औगुणा.....

माया मोह, भ्रम भऐ भूले (२)
सुत दारा स्यों, प्रीत लगाई, औगुणा.....

एक उत्तम पंथ, सुणेयो गुरु संगत (२)
तहं मिलत जम, तरास मिटाई, औगुणा.....

एक अरदास, भाट कीर्त की (२)
गुरु 'रामदास', राख्यों शरणाई औगुणा.....

क्या हुआ जे जन्म लिया

(मस्ताना जी)

क्या हुआ जे जन्म लिया, पर कदर जन्म दा पाया ना,
सतगुरु की भक्ति वाला, इस पर रंग चढ़ाया ना। (२)

दर दर बन्दे फिरे भटकदा, खोज अन्दर दा लाया ना,
सतगुरु तेरे कोल सी वसदा, नजर तेरी विच आया ना। (२) क्या.....

बिना दाग तैनूं चोला सी मिलया, दागो दाग कराया ऐ,
कभी नाम दा साबुन लाके, इक भी दाग मिटाया ना। (२) क्या.....

काम क्रोध मोह लोभ लुटेरे, ऐ भी तेरे पीछे हैं,
लूटेया खूब खबर ना किती, भेद इनों का लाया ना। (२) क्या.....

कभी ना आया साध संगत में, कभी भी हर गुण गाया ना,
देश तेरे की अपरम्पार माया, भेद तूं उसका पाया ना। (२) क्या.....

करलै भजन

(गुरुवाणी)

कर लै भजन श्वांस मुक जाणगे, छड जावें बन्देया महल बंगले। (२)
गाफला तूं क्यों नहीं चित में विचार दा, कोई रोज मेला झूठे संसार दा। (२)
बाग जो लगाऐ सारे सुक जाणगे, छड.....
महल अटारियां रहन सुनिंया, चलदी गड्डी दे वांग कुल दुनियां (२)
कोठिया शरद खाने जेड़े रंगले, छड.....
ओह नहीं दिन याद पुट्ठा तूं लटकदा, दुनियां दी हवा लैन नूं भटकदा। (२)
जपेंगा जे नाम दूर दुःख जाणगें, छड.....
खाक में रुलाते योधे बलवीर जी, थिर नहीं रहने बादशाह वजीर जी। (२)
खाक विच रुल गये अमीर कगंले, छड.....
उड़ जुगा भौर मार के उडारी नूं, छड़ जुगा देही खरी ते प्यारीं नूं।(२)
जम सेला लेके नेड़े ढुक जाणगे, छड.....
बीत जुगा वेला फिर पछतावेगा, भैड़ीयां जूनां दे विच कष्ट उठायेंगा। (२)
बुरके मरण जीव अंग–अंग दे, छड.....
गाफला तूं करदा गुमान कास नूं, सके वीर तेरे फूंक आन लाश नूं। (२)
सत डडें खोपड़ी च ठुक जाणगें, छड.....

क्यों गफलत विच मन सोया है

(संत अजायब सिंह जी)

क्यों गफलत विच मन सोया है, ऐथों कूच नगारा वजना है।
की माण करें इस भाडें दा, जो घड़या आखिर भजना है।
जो करदै मेरी–मेरी ऐ, अंत वेले मिट्टी दी ढेरी ऐ (२)
जद जावें ना लौंदा देरी ऐ, कुछ नाल ना जावे सजना ऐ।क्यों गफलत...
सुंदर तन जो हथ विच आया है, ना तेरा ऐह भी पराया है (२)
बानी ने ऐह फरमाया है, ऐह तन वी ऐथे छडना है। क्यों गफलत...
समां मिलया मन समझांई तूं नाम जप लाहा खट जांई तूं (२)
गुरु सच्चे दी याद मनाई तूं, नरकां चों जिसने कडना है।क्यों गफलत...
कोई जग असमेध करौंदा है, कोई अठ सठ तीर्थ नहौंदा है (२)
'अजायब' गुरु कृपाल नूं ध्योंदा है, जिसने मेरा पर्दा कजना है,क्यों गफलत...

करां सिफत की गुरु कृपाल दी मैं

(संत अजायब सिंह जी)

करां सिफत की गुरु कृपाल दी मैं, जिने कुल संसार बनाया ऐ,
रंगा–रंगा दे साज के भाडेयाँ नूं, विच अपना आप लुकाया ऐ,
किते बन आरोगता सुख देवे, किते रोग बन उधम मचाया ऐ,
हाऐ–हाऐ कर तड़फदी जान आपे, रबा रख लई दुःख सताया ऐ,
आपे बन ताबीब ते वैध आया, जाने रोग आपे जेड़ा लाया ऐ,
आपे नवज देखे परखे दोष तीने, वात पित बलगम जो समाया ऐ,
आपे बन पहाड़ दी जड़ी बुटी, आपे धाता नूं फुक दिखाया ऐ,
आपे रस–रासायन तैयार कर दा, वटे गोली ते चूरन छनाया ऐ,
काडा करके रोगी दे मुंह पावै, आपे संग थीं अन्दर लगाया ऐ,
आपे उठ बैठावदां रोगिया नूं, आपे धरती ते निसल सुवाया ऐ,
आपे चोज विनोद पया कर वेखे, जर्रे–जर्रे दे विच समाया ऐ,
'अजायब' कृपाल दा हुकम लै के, फेर ध्यान सचखण्ड वल लाया ऐ।

करीं ना मान वतनाँ दा

(संत अजायब सिंह जी)

करीं ना मान वतनाँ दा, मना परदेसिया सुण लै।
तूं भूल गया देश है अपना, बेगाने देश विच रहके। (२)
झूठा ऐ है जगत सुपना, सोचया कदी वी ना बैठके। (२)
सच्चा इको गुरु है अपना, जिसने ध्यान रखना ऐ।। करीं ना.....
ऐह कुटुम्ब कबीला, जो आखिर कोई नहीं तेरा। (२)
सुन्दर तन रंगीला, जो कहिंदा ऐ मेरा है मेरा। (२)
बन जाए खाक दी ढेरी, रहे ना मान जतना दा ।। करीं ना.....
काल दा जाल डाडा है, भुन–भुन जीवाँ नूं खा रिहा।(२)
भुला के नाम सच्चे नूं, कर्म कांड विच पा रिहा। (२)
बचे ताँ नरक दी अग्ग चों, गुरु वल ध्यान रखना ला।। करीं ना.....
अजे वी समां है तेरा, गुरु दी शरणी पै जा तूं। (२)
मना किते भुल ना जावीं, नाम जप लाहा लै जा तूं।(२)
'अजायब' जे सुख लैने सारे, पालन कर कृपाल दे वचना दा।।करीं ना.....

करके वेला याद

(संत अजायब सिंह जी)

करके वेला याद जिंदड़ीयें रोवेंगी, नाम बिना दुःखां वाले हार परोवेंगी।। टेक ।
मात गर्भ दी जगह भयानक, रचना प्रभु रचाई। (२)
कुम्भी नर्क ते बन्द कोठड़ी आपे होए सहाई, जे उसदी होवेंगी,
नाम बिना दुःखां.....

लिव लगी जद नाल प्रभु दे, जठर अगन ना साड़े। (२)
पुठा लटके औखा होवें, हरदम नाम पुकारे, उजल होवेंगी,
नाम बिना दुःखां.....

मानस देही लाल अमुल्ला, भागां नाल थिआवें। (२)
जे गुरु ना मिलिया नाम ना जपया, कोडी बदले जावे, बैठ के रोवेंगी,
नाम बिना दुःखां .....

जल विच तूं हैं, थल विच तूं हैं, धन कृपाल प्यारे। (२)
अन्दर बाहर घट–घट तूं हैं 'अजायब' दे काज सँवारे, कृपाल दी होंवेंगी,
नाम बिना दुःखां.....

करउ बेनती सुनहु मेरे मीता

(गुरु अर्जुनदेव जी)

करउ बेनती सुनहु मेरे मीता (२) संत टहल की बेला। ।टेक।

ईहां खाटि चलहु हरि लाहा, आगे बसनु सुहेला । (२) करो.....

ऐहु संसार बेकार सहसे महि, तरिओ ब्रह्म ज्ञानी। (२)
जिसहि जगाइ पिआए हरि रस, अकथ कथा तिनि जानी। (२) करो.....

जा कउ आए सोई विहाझुह, हरि गुरु ते मनहि बसेरा। (२)
निज घरि महलु पावुह सुख सहजे, बहुरि ना होइगो फेरा। (२) करो.....

अंतरजामी पुरख बिधाते, शरधा मन की पूरे। (२)
'नानक' दासु इहो सुखु मांगै मोकउ करि संतन की धूरे। (२) करो.....

कहिदें महिमा सतसंग दी

(संत अजायब सिंह जी)

कहिदें महिमा सतसंग दी, सच्ची ऐ जोत निराली।
जी कहिंदे महिमा सतसंग दी, सच्ची ऐ जोत निराली।।

सतसंग सुनदी तारां रानी, राजे चुकी ऐ खंडाव निशानी (२)
जोड़ी जुड़ी खंड़ाव पुरानी, संगत शरदा वाली। जी कहिदें.....

सतसंग सुन नाई सैनां तरया, विच कचहरी जाऐ ना डरया (२)
सैनेदा कम संता करया, करी आप रखवाली। जी कहिदें.....

सतसंगत दा राह चलाया, अमृत वाला मींह बरसाया (२)
रूहाँ दा व्यापार चलाया, करके आप दलाली। जी कहिदें.....

सावन शाह दे खेल न्यारे, पापी ते अपराधी तारे (२)
'अजायब' दे काज सवारे, बनके बाग दा माली। जी कहिदें.....

कृपाल यही संदेशा देता

(संत अजायब सिंह जी)

किरपाल यही संदेशा देता, हवा यही सिखलाती है,
सिमरन करते चले चलो तो, मंजिल खुद मिल जाती है।(२)

छल फरेब के किले एक दिन, दुनियां में ढह जाते हैं,
रेतों की दीवार देर तक, कभी नहीं टिक पाती है।(२) सिमरन.....

इतने सारे पाप साथ में, इतने सारे पापी हैं,
कृपाल ताकत तेरी जय हो, सबका भार उठाती है। (२) सिमरन.....

ना कोई बैरी ना ही बेगाना, जो भी है सब अपना है,
एक नूर से सब जग उपजयो, गुरुबानी बतलाती है।(२) सिमरन.....

गुरु कृपाल तुम्हारी उँगली, थाम रखी है जिसने भी,
उसके आगे काल काँपता और मौत घबराती है। (२) सिमरन.....

अजायब कृपाल तों मंगलै माफी, (२)
जे जिंदड़ी सुख चाहती है। सिमरन.....

कृपाल अनामी अन्तरयामी

(संत अजायब सिंह जी)

कृपाल अनामी अन्तरयामी, कट दे संकट मेरे। (२)

भवसागर चों बेड़ा साडा, बनो मल्लाह ते तार दिओ,
नाम सच्चे दियाँ झड़ीयाँ लाके, तपदीयाँ रूहां ठार दिओ।(२)
बन्धन तोड़ो, चरनी जोड़ो, आन डिगा दर देरे।
कट दे संकट मेरे। कृपाल अनामी.....

हो जाऐ बीमा जिन्दगी मेरी दा, तेरी झलक एक पल दाता,
नूरी दर्शन हो जाऐ तेरा, मुक्के विछोड़े दी सल दाता। (२)
सतगुरु मेरा, पा जा फेरा, गुण गावां नित तेरे।
कट दे संकट मेरे। कृपाल अनामी.....

मन दा पड़दा चुक देयो दाता, तेरा खुला दीदार होवें,
तेरे घर विच घाटा ना कोई, साड़ा बेड़ा पार होवे। (२)
दु:खियाँ हाँ डाडा, कोई ना साडा, वास्ते पौनीयाँ तेरे,
कट दे संकट मेरे। कृपाल अनामी.....

तेरी दया तैं आपे वरताई, मेरे विच गुण कोई ना,
ढुँढ लिया जग सारा फिरके, दर तेरे बिना ढोई ना। (२)
तूं पाई फेरी, मैं हो गई तेरी, छडके झगड़े झेड़े।
कट दे संकट मेरे। कृपाल अनामी.....

सेवक दा प्यार होवे तां, सतगुरु दियाल होवे,
शिष्य होवे 'अजायब' वरगा, गुरु ओदा कृपाल होवे। (२)
मान वडयाई, पल च मुकाई, जां बन गए तेरे चेरे,
कट दे संकट मेरे। कृपाल अनामी.....

कृपाल गुरु आजा

(संत अजायब सिंह जी)

कृपाल गुरु आजा (२) संगत पुकार दी।
तेरे हथ विच चाबी ओ दाता, सारे संसार दी। ।। २ ।।

संगत पुकार दी है, दोवें हथ जोड़ के,
कित्थे चले गयों दाता, संगत नूं छोड़ के। (२)
देंदा रह दिखाली सदा, मेरी ऐ पुकार जी। तेरे हथ विच.....

संगत दे वालीया, देर ना लगावीं वे,
सुनके आवाज साडी, छेती–छेती आवीं वे। (२)
दर्शना नूं बैठी, संगत तैयार जी। तेरे हथ विच.....

संगत दा वैद्य तेरे, हथ च दवाई वे,
ताला किसे होर लाया, तैं चाबी लाई वे। (२)
जोगे नूं बचाया आप, बन पहरेदार जी। तेरे हथ विच.....

नानकी पुकारया तूं, झट विच आया सी,
पुकार वाला फुलका, प्यार नाल खाया सी। (२)
ओसे तरहां आजा तूं, मैंनूं ना विसार जी। तेरे हथ विच.....

सुनदा पुकार दाता, मुड़ तो तूं आया वे,
मक्खण लुभाणे दा जहाज, बन्ने लाया वे। (२)
संगत नूं बचा लै ऐ पुकार 'अजायब' साध दी। तेरे हथ विच.....

कोई ना किसे दा बेली

(संत अजायब सिंह जी)

कोई ना किसे दा बेली, दुनियां मतलब दी। (२)
जदों मां पिओ बेटा जनिया, तदों घर दा मालिक बनया।(२)
होया जिवें होशियार तेरा वधया प्यार, चगें लगदे भाई बेली। दुनियां...

मुच्छां फुटियां दमक रंग मारी, मारे विच असमान उडारी।(२)
चित दुनियां च लाया सच्चे रब नूं भुलाया, सदा खिड़ी ना रहे चमेली। दुनियां...
जद घर विच मान वधाया, कुल मालिक दिलों भुलाया। (२)
करी गुरां नाल प्यार, तेरा हो जाए उद्धार, किते जिंदड़ी ना जाऐ अकेली। दुनियां...

कर ठगियां घर नूं लियावें, धीया पुत्रां नूं आन खुआवें। (२)
तैथों पुछना हिसाब किवें देवेंगा जवाब, तेरी कदर ना पैणी धेली। दुनियां...

जवानी गई बुढेपा आया, बुढा बाबा नाम धराया,
सुनो गुरु कृपाल आ 'अजैब' नूं संभाल, चकलो, चकलो होली होली। दुनियां...

कृपाल गुरु दा विछोड़ा मैनूं पै गया

(संत अजायब सिंह जी)

कृपाल गुरु दा विछोड़ा मैनूं पै गया, दसां केहनूं दुःख फोलके। ।टेक।

पिया कृपाल तेरी जोत इलाही वे, तुर गयों छड के तूं मेरया माही वे। (२)
अखियां नूं बिरहों विछोड़ा लै गया। दसां केहनूं...

होई ना पुरानी मेरे सगना दी मेंहदी वे, तेरयां विछोड़यां च जिंद दुःख सहंदीवे। (२)
मेरा सगन मुनारा ढेह गया, दसां केहनूं...

बनया यतीम अज ऐस मैं जहान दा, रह गया सहारा इको तेरे सच्चे नाम दा।(२)
तेरे प्यार दे फुलां च भौंरा रह गया, दसां केहनूं...

वासी सचखंड दा तूं आया विच जग दे, पैंदी हैं झलक तेरी विच रग रग दे। (२)
तन करके विछोड़ा पै गया, दसां केहनूं...

तेरे उत्ते जिंदड़ी मैं घोल घुमाई वे, तेरयां विछोड़यां च हो गया सुदाई वे। (२)
तेरे प्यार विच रोना सदा पै गया, दसां केहनूं...

पीर दा विछोड़ा तीर कालजे च वजिया, रखी कृपाल ने 'अजायब' दी आ लज्जियां। (२)
दिल लै गया ते पिंजरा रह गया, दसां केहनूं...

कृपाल गुरु जी साथों

(संत अजायब सिंह जी)

कृपाल गुरु जी साथों, दुःख ना सहारे जांदे,
दुनियां दे विच रहके मन नहीं जे मारे जांदे। (२)

करी जावे नित पाप, साडा मन घबराये ना,
सतसंग वल सीधा, चल कदी आवे ना। (२)
साडे मन दे जो फुरने, एक पल ना विसारे जांदे, दुनियां.....

पजां चोरां कोलों, सानूं आन बचा दयो,
तपदीयां रूहाँ ताई, ठंड वरता दयो। (२)
साडे दिलां विच पाप, जो साथो ना उतारे जांदे, दुनियां.....

धन कृपाल धन, शब्द अपार है,
लख–लख जीवां दा, करया उद्धार है। (२)
तेरे बिना डुबे बेड़े, पार ना उतारे जांदे, दुनियां.....

दिन रात सच्चे पिता, याद मनावा मैं,
तक–तक राह तेरा, ओसियाँ पावां मैं। (२)
'अजायब' कहे कृपाल जी दे गुण ना विसारे जादें, दुनियां.....

काहे रे बन खोजन जाई

(गुरुवाणी)

काहे रे बन खोजन जाई ।। टेक।। (२)
सर्व निवासी सदा अलेपा (२)
तो ही संग समाई। काहे.....
पोहप मध जियों बास बसत है (२)
मुकर माहें जैसे छाई। कहो.....
तैसे ही हर बसे निरन्तर (२)
घट ही खोजो भाई। काहे.....
बाहर भीतर ऐको जानो (२)
ऐहे गुरु ज्ञान बताई। काहे.....
जन नानक बिन आपा चीने (२)
मिटे ना भ्रम की काई। काहे.....

खेल नियारे बक्शन हारे

(संत अजायब सिंह जी)

खेल नियारे बख्शन हारे, कृपाल सतगुरु प्यारे।।
तेरे रंग निराले दाता, जीवन बक्शन वाले,
दरशन जिसनूं होऐ तेरे, हो गये मतवाले। (२)
नाम जपा के रस्ते पाके, तपदे हिरदे ठारे। कृपाल.....
तेरा बनके सच्चे दाता, लख लख शुक्र मनावां,
तेरे हाथ है डोर असाडी, ज्यैं भेजे त्यैं जावां। (२)
चिर दियां ख्वाहंशा पूरीयां आसां, लाज रखी दातारे। कृपाल.....
तेरे दर 'अजायब' आके, हो गया खुशहाल,
नाम जपाया चरणी लाया, होके सतगुरु दयाल। (२)
मेरीयाँ यादां सुन फरियादां, सतगुरु बख्शन हारे। कृपाल.....
मैं परदेशी दास 'अजायब' तेरी याद मनावां,
बिसर ना जाना सतगुरु मेरे, कृपाल–कृपाल गावां। (२)
कृपा करो कृपाल प्यारे, आये हाँ तेरे द्वारे। कृपाल.....

गुरु बिन नहीं बन्दे कल्याण

(संत अजायब सिंह जी)

गुरु बिन नहीं बन्दे कल्याण। (२)

मैं लिपटा रहा झूठ में, सुनी ना गुरु की बात,
रैन बसेरे को घर समझा, भटका दिन और रात। (२)
ओ मन मूरख अब तो टिक जा (२)
कर सतगुरु का ध्यान।
गुरु बिन.....

जिस पल पंछी कर जाता है, इस पिंजरे को खाली,
साथ छोड़ जाते हैं सारे क्या मां क्या घरवाली (२)
पड़े वहीं पर रह जाते हैं (२)
धन दौलत और मान।
गुरु बिन.....

ओ मेरे मन मथुरा बन जा, बन जा गोकुल धाम,
रोम–रोम में सदा बिराजे, कृपाल गुरु का नाम (२)
गुरु चरण में रत जा बन्दे (२)
ले गुरु का वरदान
गुरु बिन.....

कभी पूतना पार उतारी, कभी कंस सा पापी तारा,
जब–जब पाप बढ़ा धरती पर तुमने आकर उसे उतारा (२)
जन्म–जन्म का प्यासा अजायब (२)
बिन दर्श नहीं कल्याण।
गुरु बिन.....

गुरुदेव मेरी नइया

(संत कबीरदास जी)

गुरु देव मेरी नइया उस पार लगा देना,
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना। (२)

मुमकिन है झंझटों में, मैं तुमको भूल जाऊँ (२)
पर नाथ कहीं तुम भी (२), मुझ को ना भूला देना गुरुदेव.....

दल बल के साथ माया, घेरे जो आके मुझको (२)
तुम देखते ना रहना (२), झट आके बचा लेना। गुरुदेव.....

तुम इष्ट मैं हूँ सेवक, तुम देव मैं पुजारी (२)
यह बात अगर सच है (२), सच करके दिखा देना। गुरुदेव.....

आंखों में समां जाओ, पलकों मे रहा करना (२)
दरिया भी इसी में है (२), मौजों में रहा करना। गुरुदेव.....

गुरु बिन कौन मिटावैं भव दुःख

(गुरु ब्रह्मानन्द)

गुरु बिना कौन मिटावै, भव दुःख गुरु बिना कौन मिटावै रे।

गहरी नदिया वेग बड़ो है, बहत जीव सब जावैरे (२)
कर कृपा गुरु पकड़ भुजा से, खैंच तीर पार लावैरे। गुरु.....

काम क्रोध मध लोभ चोर मिल, लूट–लूट कर खावैरे (२)
ज्ञान खड्ग देकर माही, सबको मार भगावै रे। गुरु.....

जाना दूर रात अंधियारी, गैला नजर ना आवैरे (२)
सीधे मार्ग पर पग धर कर, सुख से धाम पुगावैरे। गुरु.....

तन मन धन सब अर्पण करके, जो गुरु देव रिझावैरे (२)
'ब्रह्मानंद' भव सागर दुस्तर, जो सहजे तर जावैरे। गुरु.....

गुरुदेव बिना ज्ञान नहीं

(संत अजायब सिंह जी)

गुरु बिना ज्ञान नहीं, ऐवें भुलिया फिरे अनजाना। (२)
लखां जप तप करलै, तेरे कम किसे नहीं औने। (२)
जल धारे कर कर के, फेर लगपऐ धुणीआं तपौणे। (२)
समा आया अन्त जदों, तैनूं गुरु बिना किसेना छुड़ाना।
गुरु.....

समझाया सच करके, ऐह जगत है कूड़ पसारा। (२)
गाफला तूं बुरा फसियां, तैनूं गुरु बिना कोई ना सहारा।;२)
गुरु कोलों की छुपिया अन्तर जामी घट–घट जाणां।
गुरु.....

मान वडियाई जग दी, जरा दात कुटुंब प्यारा। (२)
बैठ नहीं रहेणा सदा, मैला है कोई दिन दा नजारा। (२)
पल्ला फड़ पूरे गुरु दा, तेरा मुक जाऐ आऊणा जाना।
गुरु.....

गुरु बिन मुक्त नहीं, सब कहिंदे संत सियाने (2)
जूनां विच फिरना पवे, जेकर नाम दा भेद ना जाने।(2)
लोक लाज विच फसके, तूं भुलिया असल ठिकाना
गुरु.....

मुक जान सब झगड़े, जद शरण गुरु दी लब जाऐ। (२)
आन जान तां मुकदा, जदों तीर कलेजे विच लग जाये।(२)
कृपाल गुरु बक्श लवो, तेरा आ गया 'अजैब' निमाणां।
गुरु.....

गुरु बिन कौन सहाई नरक में

(गुरु ब्रह्मानंद जी)

गुरु बिन कौन सहाई नरक में, गुरु बिन कौन सहाई रे। । टेक ।

मात–पिता सुत बन्धव नारी, स्वार्थ के सब भाई रे।(२)
परमार्थ का बंधू जगत में, सतगुरु बन्ध छुड़ाई रे, गुरु.....

भवसागर जल दुस्तर भारी, गर्भ से दुःखदाई रे। (२)
गुरु खैवटिया पार लगाके, ज्ञान जहाज बिठाई रे, गुरु.....

जन्म जन्म का मेट अन्धेरा, संशय सकल नसाई रे। (२)
पारब्रह्म परमेश्वर पूरन, घट में दे दिखाई रे, गुरु.....

गुरु के बचन धार हिरदे में, भाव भक्ति मन लाई रे। (२)
ब्रह्मानंद करो नित सेवा, मोक्ष पदार्थ पाई रे, गुरु.....

गुरु मेरा चन वरगा

(संत अजायब सिंह जी)

गुरु मेरा चन वरगा, मेरी प्रीत ना चकोरां वाली।(२)

पर उपकार जो करे, लिखें जान ना दातेया तेरे,
औगुणा दा मैं भरिया, कोई गुण ना गुरु जी विच मेरे।(२)
हो जाए तेरी मौज़ दातेया, भरें झोलियां तूं पल विच खाली। गुरु मेरा चन....

दुनियां दे तारण लई, कुल मालिक जग विच आया,
बन्दे दा तूं चोला पहन के, विच अपना आप छुपाया। (२)
बाग लाके सावन ने, तैनूं सौंपया बाग दा माली। गुरु मेरा चन....

मेर तेर दुनियां दी, एक पल विच आन मुकाई,
होका देके सतनाम दा, रूहां तपदियां ठंड वरताई। (२)
दर तेरे जो आ गया, कीती मौज तैं जग तों निराली।गुरु मेरा चन...
.

सारा जग ढुंढ लिया, ना मिलया सहारा कोई,
रख लवीं पैज दातेया, 'अजायब' करे अरजोई। (२)
रख लैं गरीब जाणके, तूं हैं संगत दा वाली। गुरु मेरा चन....

गुरु कृपाल दा मुखड़ा

(संत अजायब सिंह जी)

गुरु कृपाल दा मुखड़ा मना जाके तकना जरा,
दर्दी दिलां दा दुखड़ा मना जाके दसना जरा। (२)

नाम जपलै मना आलस छडदे, हंगता होमें नूं अन्दरो कडदे। (२)
किते जाऐ ना जीवन सखणां मना, जाके दसना जरा।
गुरु कृपाल दा मुखड़ा.....

बिना बन्दगी जो वी उमर विहावें, बीतिया समां फिर हथ न आवे। (२)
विच दरगाह दे जाके की दसना मना, जाके दसना जरा।
गुरु कृपाल दा मुखड़ा.....

बेगाने घर विच प्रीत लगाई, अपने घर दी तैं खबर ना पाई। (२)
दिन थोड़े ही ऐथे वसना मना, जाके दसना जरा।
गुरु कृपाल दा मुखड़ा.....

तेरे राहां तो मैं वारी जावां, अखां दिया पलकां दी सेज बिछावां। (२)
सोहना दर्श अखां विच वसना मना, जाके दसना जरा।
गुरु कृपाल दा मुखड़ा.....

दुःख विछोड़े दा आन हटावों, दुःखिये 'अजैब' दा दर्द मिटावो।(२)
रोना पै गया भुल गया हँसना मना, जाके दसना जरा।
गुरु कृपाल दा मुखड़ा.....

गुरु कृपाल जी तेरा सहारा

(संत अजायब सिंह जी)

गुरु कृपाल जी तेरा सहारा। (२)। टेक ।

तेरी जुदाई नित सतावे, नाम बिना मैनूं चैन ना आवे। (२)
तेरे ही नाम दा चलया फुहारा, गुरु कृपाल.....

हरदम तेरी मैं याद मनावां, तेरे बिना मुल कौडी ना पावां (२)
तेरी दया मेरे दीन दयारा, गुरु कृपाल.....

ताने मेहणे झल्ले सारे, तेरे बिना दुःख कौन निवारे। (२)
मेहर करीं मेरे सच्चया ओ यारा, गुरु कृपाल.....

रल मिल याद मनोंदियां सईयाँ, नाम सच्चे दिया धुमां पईयाँ।(२)
तूं अपरम्पार अगम अपारा, गुरु कृपाल.....

दास 'अजायब' याद मनावे, हरदम नाम गुरु दा गावे। (२)
तैं बक्शया नाम अटुट भंडारा, गुरु कृपाल.....

गुरु समान नहीं दाता

(संत कबीरदास जी)

गुरु समान नहीं दाता जग में, गुरु समान नहीं दाता।
वस्तु अगोचर दई सतगुरु ने–(२), भली बताई बातां। जग.....
काम क्रोध कैद कर राखे–(२), लोभ को लीनो नाथा।जग.....
काल करे सो हाल ही करले–(२), फिर ना मिले ये साथा।जग.....
चौरासी में जाए परोगे–(२), फिर भुगतो दिन रातां। जग.....
शब्द पुकार–पुकार कहत है–(२), करले संतन साथा। जग.....
सुमर बन्दगी कर साहेब की–(२), काल निवाऐ माथा।जग.....
कहत 'कबीर' सुनो ऐ धर्मन–(२), मानो वचन हमारा। जग.....
पर्दा खोल मिलो सतगुरु से–(२), आयो लोक दयारा।जग.....

गुरु कृपाल मेरे घर आना

(संत अजायब सिंह जी)

गुरु कृपाल मेरे घर आना। (२)
जैसे तुम सावन दीवाने, मैं तेरा दीवाना। । टेक ।

एक बार भी सच्चे मन, से जिसने तुझे ध्याया,
भर भर झोली दोनों हाथों, तुमने प्यार लुटाया। (२)
मेरी डोर तुम्हारे हाथों, तुम मेरे जीवन साथी।
तुम भगतों के भगत तुम्हारे, ठीक नहीं मुझको ठुकराना।
मैं तेरा दीवाना.....

शिबरी के झूठे बेरों से प्यारे, तुमने मजा उठाया,
दुर्योधन के मेवे तज के, साग विदुर का खाया। (२)
केवल दास नहीं हूँ सतगुरु, मैं दासों का दास तुम्हारे।
जैसे सबकी लाज रखी है, मेरी भी लाज रखाना।
मैं तेरा दीवाना.....

कैसे तुम्हें बुलाऊं सतगुरु, पता नहीं है ज्ञान नहीं,
किसी तरह का कोई तुकब्बर, मेरे बस की बात नहीं। (२)
पल–पल के दर्शन को गुरु जी, प्यासी आंखें तरस रही हैं।
यही बेनती है 'अजायब' की, मुझे नहीं तड़फाना।
मैं तेरा दीवाना.....

गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु बोल

(संत अजायब सिंह जी)

गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु बोल, प्रेम से गुरु गुरु।
बड़े भाग मानस तन पाया, इसका लाभ उठा ले।
जितना नाम ध्या सकता है, उतना नाम ध्या ले।
जितना सोया वही बहुत है, अब तो आंखें खोल, प्रेम से.....

जिसने सच्चे मन से फेरी, गुरु नाम की माला।
उसके भेद भ्रम सब मिट गए, ऐसा हुआ उजाला।
गुरु नाम का अमृत पी ले, जीवन में रस घोल, प्रेम से.....

ताप शाप संताप मिटाता, गुरु का पावन नाम।
प्रेम भाव के भूखे सतगुरु, कृष्ण कहो या राम।
जो पल सिमरन में बीते हैं, वे पल हैं अनमोल, प्रेम से.....

याद किया जब भी भगतों ने, नंगे पैरों दोड़ा आया।
सदा दीन को गले लगाया, सदा दिया दुर्बल को सहारा।
खैर नाम की पावो कृपाल जी, अजायब रहा बोल, प्रेम से.....

गुरु तों बगैर बंदे

(संत अजायब सिंह जी)

गुरु तों बगैर बंदे जिन्दगी ना रोल ओए जिन्दगी न रोल। (२)
जंगला पहाडां विच ना मत्था मार ओए। (२)
वसदा ऐ अन्दर बाहरों होणा ना दीदार ओए। (२)
मालिक बाहरों लभदा ऐ बंदे, रहिंदा तेरे कोल ओए। जिन्दगी ना रोल।।
गुरु तों बगैर...

विषयाँ दी मस्ती विच रब नूं भुला लिया। (२)
आया लाहा लैन हत्थों मूल वी गवा लिया। (२)
इक दिन वजना बंदे मौत वाला ढोल ओए। जिन्दगी न रोल।।गुरु तों बगैर...
पानी देया बुलबुलया ओए तेरी मुनियाद ना। (२)
सच्चे रब तांई बन्दे कीता कदे याद ना।
नदी कंडे रूखड़ा बंदे वजना ऐ झोल ओऐ। जिन्दगी ना रोल।।गुरु तों बगैर...

नाम सच्चा गुरु सच्चा सतसंग सार है। (२)
'अजायब' कृपाल बिना जिन्दगी ख्वार है। (२)
मुक्ति जे चाहुना ऐ बन्दे सच्चा गुरु टोल ओए। जिन्दगी ना रोल।।गुरु तों बगैर...

घट ही में अविनाशी साधो

(गुरु ब्रह्मानंद)

घट ही में अविनाश साधो, घट ही में अविनाशी रे।

काहे रे नर मथुरा जावें, काहे जावै काशी रे,
तेरे मन में बसे निरंजन, जा बैकुंठ विलासी रे। घट ही में.....

नहीं पाताल नहीं स्वर्ग लोक में, नहीं सागर जल राशि रे,
जो जन सुमरन करत निरंतर, सदा रहे तिन पासी रे। घट ही में.....

जो तू उसको देखा चाहै, सबसे होए उदासी रे,
बैठ एकान्त ध्यान नित कीजै, होए जोत प्रकाशी रे। घट ही में.....

हिरदे में जब दर्शन होवे, सकल मोह तम नाशी रे,
'ब्रह्मानंद' मोक्ष पद पावै, कटे जन्म की फांसी रे। घट ही में.....

चरण कमल तेरे धोए-धोए पीवां

(गुरु नानक)

चरण कमल तेरे धोऐ–धोऐ पीवां, मेरे सतगुरु दीन दयाला।(२)

पार ब्रह्म परमेश्वर सतगुरु आपै करने हारा,
चरण धूड़ तेरी सेवक मागें, तेरे दरशन को बलिहारा। (२)

मेरे राम राऐ ज्यों राखें तियों रहीये,
तुध भावै तां नाम जपावै, सुख तेरा दिता लहीयै। (२)

मुकत भुगत जुगत तेरी सेवा, जिस तू आप कराईए,
तहां बैंकुंठ जहि कीर्तन तेरा, तू आपै सरधा लाये। (२)

सिमर–सिमर–सिमर नाम जीवा, तन मन होए निहाला,
चरण कमल तेरे धोए पीवां, मेरे सतगुरु दीन दयाला। (२)

कुरबान जाई उस वेला सुहावी, जित तुमरै दवारे आया,
'नानक' को प्रभ भये कृपाला, सतगुरु पूरा पाया। (२)

चार पदार्थ जे

(गुरु अर्जुनदेव जी)

साध जना की सेवा चारौ पदारथ जे को मागै,
जे को अपना दुःख मिटावै
हर–हर नाम हिरदे सद गावै। (२)
जे को अपनी शोभा लोरै,
साध संग ऐहो होमे छोरै। (२)
जे को जन्म मरण ते डरै,
साध जना की शरणी परै। (२)
जिस जन को प्रभ दर्श प्यासा,
नानक ताकै बल बल जासा। (२)

चलो मन सतगुरु के दरबार

(संत अजायब सिंह जी)

चलो मन सतगुरु के दरबार। (२)
सुरत शब्द का मेल जोड़ के करदे बेड़ा पार। (२) चलो.....

पाप शाप त्रय ताप मिटाये, गुरु का पावन नाम,
गुरु जी की चरन धूर में सब ही स्वर्ग और सुरधाम। (२)
गुरु की माया गुरु ही जाने, लीला अपरम्पार। (२) चलो.....

तीन लोक में कहीं नहीं है, गुरु से बड़ा सहारा,
सचमुच बल देता है प्यारे, सतगुरु का जयकारा। (२)
बड़े भाग्य से मिल पाता है, गुरु का पावन प्यार। (२) चलो.....

सन्त महात्मा सभी देवता, गुरु को शीश नवाते,
जय हो सतगुरु प्यारे तेरी, शेषनाग गुण गाते। (२)
जिसने नाम जपा गुरु तेरा, उसका बेड़ा पार। (२) चलो.....

आ पहुँचा अब द्वारे तेरे, अजायब गरीब बेचारा,
मैं अपराधी कोट जन्म का, भूला जीव तुम्हारा। (२)
नाम जहाज चढ़ाओ कृपाल जी, मुझको कर दो पार। (२) चलो.....

चड़े चेत हर चेत प्राणी

(संत अजायब सिंह जी)

चड़े चेत हर चेत प्राणी, बिन सिमरन पछतावेगां । टेक ।

लख करोड़ वर्ष जे जीवे, ओडक नूं मर जावेगां। (२)

छुटेंगा जम जाली तों, जद भजन गुरु दे गावेगां। (२)

नाम भुलावें बहुत दुख पावैं, पुट्ठी खल लहावेगां। (२)

आज़िज होके सतगुरु अग्गे, औगुण कद बक्शावेगां। (२)

ऐ मन पापी औगुण हारे को तूं, मोड़ कदों घर लयावेगां।(२)

'अजायब' कृपाल दा नाम ध्यालै, नहीं तां पछोतावेंगा। (२)

चिटा कपड़ा ते रूप सुहाना

(गुरु नानक देव जी)

चिटा कपड़ा ते रूप सुहावना, चिटा कपड़ा,
चिटा कपड़ा ते रूप सुहावना, दुनियां ते छड जावना, बन्देया,
बन्देया दुनियां ते छड जावना, चिटा कपड़ा। । टेक ।

कपड़ रूप सुहावणा (२) छडि दुनियां अन्दर जावणां।दुनियां.....

मंदा चंगा आपणा (२) आपैं ही कीता पावणां। दुनियां.....

हुकम किए मन भांवदे (२) राहि भीड़ै अगै जावणां।दुनियां.....

नंगा दोजकि चालिआ (२) ता दिसै खड़ा डरावणां।दुनियां.....

करि अउगुण पछोतावणां (२) करि अउगुण पछोतावणां।दुनियां...
..

चलो नी संइयों सिरसे नूं चलिये

(संत किरपाल सिंह)

चलो नी संइयों सिरसे नूं चलिये, ताधां सोहने यार दिंयां चलो नी सइयों,
चलो नी सइयों। (२)

आप सदा मालिक संग रेहन्दे, रात–दिने असीं दुःखड़े सेहन्दे,
बेहरे गमां विच हरदम बेहन्दे, आर दियाँ ना पार दिया।
चलो नी सइयों.....

भांगा भरियां रूहां तेरियां, नाल तेरे जो हरदम रहियां
असां मुसीबतां लख लख सहियां, बैठ गिटियां गाल दियां।
चलो नी सइयों.....

पूरी आस उम्मीद ना होई, हदों बाहर बैठ में रोई,
तैं बिन प्रीतमा जीवंदयाँ मोई, जान तेरे तों वार दियाँ।
चलो नी सइयों.....

पाके गल्लां–गल्लां विच दुःखड़ा, जग सारा पया दिसे रूखड़ा,
छेती आन विखावीं मुखड़ा, दुःखड़ी तेरे दीदार दियां।
चलो नी सइयों.....

तू मालिक मैं बांदी तेरी, दर्शन पिया देंई इक वेरी,
जल्दी करीं ना लावीं देरी, भुखड़ी तेरे दीदार दियां।
चलो नी सइयों.....

कित्थे गयों है सावन प्यारे, बांदी रो–रो उम्र गुजारे,
गिननी आं रात बैठ मैं तारे, दिन तक–तक राह गुजार दियां।
चलो नी सइयों.....

सौ सौ वारी मैनूं ख्वांबा आइयां, भुल्ल गयो मैनूं मेरे साईयां,
पहले नाल मेरे क्यों लाइयां, गल्लां ऐह आजार दियां।
चलो नी सइयों.....

प्यारे सावन तेरे बिन मोइयां, दर्शन बिना मैं पागल होइयां,
परदियों बाहर आ सावन रोईयां, गल्लां कर हुण प्यार दियां।
चलो नी सइयों.....

मैथो चंगिया जुतियां तेरियां, मैं तत्ती दूर पावां फेरियां,
हाय छेत्ती आवी गमां ने घेरियां, भुखड़ी सावन दीदार दियां।
चलो नी सइयों.....

चोरां तेरा घर लुटया

(संत अजायब सिंह जी)

चोरां तेरा घर लुटया तैनूं सुतियां जाग ना आई। (२)

मालिक वडंदा है, सारी रात कसतुरी दे खजाने,
नाम दे खजाने लुटदे ओए, लाहा लैनगे जो होये मस्ताने। (२)
मालिक मिलदा है, जिनां गुरु नाल प्रीत लगाई, चोरां.....

पंजे डाकू पहिलवान है, फड़ जीवां नूं ऐ मार मुकांदे,
गुरु पल्ले जिनां जीवां दे, गुरु वाले तों बड़ा डर खांदे। (२)
खाली जांदे दुनियां तों, जिनां खादी वेच कमाई, चोरां.....

सारा दिन धंधिया दी, तैनूं चड़दी रहे मगरूंरी,
मौत दा नगारा वजिया ओए, रह गई त्रिशना आस अधुरी। (२)
जागिया ना तूं अड़या ओए, तैनूं सुतिया रैन विहाई, चोरां.....

जाग–जाग सुतिया ओए, चोरां घेर लिया चार चुफेरा,
लुटिया ना जाऐ सजना ओए, ऐहे नाम दा खजाना तेरा। (२)
सतगुरु सूरमें ने, रूह घेरी होई आन छुड़ाई, चोरां.....

सुतिया तूं जाग बन्दिया ओए, तैनूं कहिंदे संत प्यारे,
सुता होया नहीं जागना ओए, जदों लंबे गोड़ पसारे। (२)
सुती रूह 'अजायब' चिरदी, आके गुरु कृपाल जगाई, चोरां.....

चंद लख चड़ जावै जी

(गुरुवाणी)

चंद लख चड़ जावें जी, प्यारेयो सतगुरु बाज हनेरा।

बलहारी गुरु आपने (२) देयो हाड़ी सदवार।प्यारेयो.....

जिन मानस ते देवते कीऐ (२) करत ना लागी वार।प्यारेयो....

.

जे सौ चंदा उग वै (२) सूरज चड़े हजार। प्यारेयो.....

ऐते चानण होंदेया (२) गुरु बिना घोर अंधार।प्यारेयो.....

छोटी जात दा कबीर जुलाहा

(संत कबीरदास जी)

छोटी जात दा कबीर जुलाहा,
नाम जप उँच्चा हो गया। ।। टेक ।। (२)

मुस–मुस रोवें कबीर की माई,
ऐह वारक कैसें जीवे रघुराई। (२)
नाम.....

तनणा बुनना सब तजयो कबीरा,
हर का नाम लिख लेहो शरीर। (२)
नाम.....

जब लग तागा बाहो बेही,
तब लग विसरै राम सनेही। (२)
नाम.....

ओछी मत मेरी जात जुलाहा,
हर का नाम लेहो मैं लाहा। (२)
नाम.....

कहत 'कबीर' सुनो मेरी माई,
हमरा इनका दाता इक रघुराई। (२)
नाम.....

जाग मुसाफिर जाग

(संत कबीरदास जी)

जाग मुसाफिर जाग घना दिन सो लिया रे (२)

पहले सोया मात गर्भ में, ऊँधा पांव पसार,
भक्ति करके बाहर आयो, भूल गयो करतार। (२)
जन्म तेरा हो लिया रे।
जाग.....

दूजा सोया पिता गोद में, हँस–हँस दाँत दिखाए,
बहन भाई तेरा करे लाड रे, मंगल चरना गाये। (२)
लाड तेरा हो लिया रे।
जाग.....

तीजा सोया तिरिया सेज पर, गले में बहियाँ डाल,
तिरिया जाल में फंस गया बन्दे, ये है मोह का जाल। (२)
विवाह तेरा हो लिया रे।
जाग.....

चोथा सोया बूढ़ा बनके, कोने मे खाट लघाऐ,
हलन चलन की शक्ति कोनी, लीनी सेवा कराऐ। (२)
बुढ़ापा आ लिया रे।
जाग.....

पांचवे सोया शमशानो में, लम्बे पांव पसार,
कहत कबीर सुनो रे साधो, दीना अग्नी में डार। (२)
दाग तेरा हो लिया रे।
जाग.....

जामां इन्सान ऐ अमुल्ला लाल ओए

(संत अजायब सिंह जी)

जामां इन्सान ऐ अमुल्ला लाल ओए, मिट्टी च ना रोलीं रख लई संभाल ओए। (२)
नाम जप गुरां दा ते सुख पावेंगा, गुरु तो बगैर नरकां नूं जावेंगा।

वड्डे–वड्डे ऐथे अवतार धार गये, मिल गया गुरु कारज संवार गये।(२)
जे मिलया ना गुरु फेर पछोतावेगां, गुरु तों बगैर नरकां नूं जावेंगा।

सुपने दी नियांई सारे सुख माया है, ढलदा परछावां बदलां दी छाया है। (२)
इक दिन ऐथे सारे छड़ जावेंगा, गुरु तों बगैर नरकां नूं जावेंगा।

नाम नूं भुलाके बनी ना कंगाल ओए, सच्चा नाम जप होजा मालों माल ओए। (२)
सचखण्ड विच जाके सुख पावेंगा, गुरु तों बगैर नरकां नूं जावेंगा।

बानी गुरु ग्रंथ विच सच लिखिया, गुरु तों बगैर ओंदी ना कोई सिखिया। (२)
सच्चा गुरु मिले मुक्ती नूं पावेंगा, गुरु तों बगैर नरकां नूं जावेंगा।

काया मन्दिर विच हरी बैठा आप है, गुरु विचोला बन करदा मिलाप है। (२)
मिल गया गुरु मुक्त हो जावेंगा, गुरु तो बगैर नरकां नूं जावेंगा।

आदि अंत तों ही रीत चली शुरू दी, गुरु ग्रंथ विच महिमा भरी गुरु दी। (२)
'अजैब' कृपाल मिले सुख पावेंगा, गुरु तों बगैर नरकां नूं जावेंगा।

जप लै तूं नाम गुरु दा

(संत अजायब सिंह जी)

जपलै तूं नाम गुरु दा, कर लै कुरबानी ओए,
नाम दे बाजों जीऊनाँ झुठी जिन्दगानी ओए। (२)

कायां दा मन्दिर सोहना बनया इंसान है, मन्दिर दा मालिक अन्दर बैठा भगवान है। (२)
मेला है कोई रोज दा दुनियां ऐह फानी ओए। जप लै.....

बचपन दा मौका ऐवें खेड गवांया ओए, मारे जवानी ठाठां रब नूं भूलाया ओए। (२)
ना घटया हंकार तेरा ढल गई जवानी ओए। जप लै.....

मिलिया इंसान जामा ऐंवें गवांई ना, आया हथ लाल अमुला मिट्टी च रुलांवी ना। (२)
मिलना ना वारो वारी जामा इन्सानी ओए। जप लै.....

संता दी संगत करलै इज्जत जे चाहुँना ऐ, सतगुरु दा नाम जपलै देरी क्यों लोना ऐ। (२)
करलै सत संगत सच्ची छड़के मनमानी ओए। जप लै.....

फिरदां तू जंगल भौंदा मालिक है कोल ओए,दुनियां दा राजा बनके होया क्यूं रोल ओए। (२)
मिलिया कृपाल सोहना, 'अजैब' दा जानी ओए। जप लै.....

जेड़े गुरु भगती तों हीणे

(संत अजायब सिंह जी)

जेड़े गुरु भगती तों हीणे, डरदें रहिऐ ओना लोकां तों। (२)

ऐसे लोगण स्योंक्या कहिऐं जो प्रभु किये भगत ते बाजह,
तिन तें सदा डराने रहिए। डरदे रहिये ओना.....

बन्दगी बाजों उमर विहाई, सिर तक न्यायी काम न आई। (२)
धिग खाने ते धिग ही पीने; डरदे रहिये ओना.....

सन्ता दी जो निदिंया करदे, विच चौरासी जमदें मरदें। (२)
लखां फटकार ओना दे जीणे, डरदे रहिये ओना.....

सिमरन करके बन्दा चंगा, नाम बिना गन्दें तो गन्दा। (२)
जो गुरु मंत्र तो हिणे, डरदे रहिये ओना.....

सतसंग दे विच चल ना आऊँदें, बातन ही असमान गिराऊँदें। (२)
ओह तां जहर प्याले पीणे; डरदे रहिये ओना.....

जागण भाग कृपाल ध्याईए, अजायब डर काल मुकाईऐ। (२)
बाज गुरु सब काल चबीणे; डरदे रहिये ओना.....

जप नाम गुरु दा ओए

(संत अजायब सिंह जी)

जम नाम गुरु दा ओए, मिलया मानस जनम अमोला। (२)
जे मिलना मालिक नूं कोई लब लै गुरु विचोला। (२)

एह मंदिर मालिक दा अन्दर बैठा आसन ला के। (२)
नहीं बाहर लबना ओए मिलना मालिक अन्दर जाके।(२)
छड़ अड़ींया मुरखा ओए, औना इक दिन मौत विरोला, जप.....

जग छडना पैणा ओए, जेहनू करदै मेरा–मेरा। (२)
रात उम्र गुजारी ओए, दिने आ गया मौत सवेरा। (२)
जेहड़ा उड़दा फिरदा ओए, इक दिन खुसंना उड़न खटोला, जप.....

क्यों भूलया दाते नूं, जिसने बक्शया मानस जामा। (२)
किते रोल ना देवी ओए अंश मालिक दी तू इन्साना। (२)
खट लाहा लै जावीं तैनूं मिलिया मानस चोला, जप.....

दुनियां दी दौलत जो सारी ऐथेही रह जावे। (२)
विच दरगाह दे जाके, गुरु तो बाज ना कोई छुड़ावे। (२)
कृपाल गुरु धन है 'अजायब' दा चुकया भरम दा ओला। जप.....

जे बन्दिया तैं रब नूं

(संत अजायब सिंह जी)

जे बन्दिया तै रब नूं मिलना, जे बन्दिया तैं रब नूं मिलना,
मन बदींयाँ तो मोड़ लवीं, ओए चित गुरु चरना वल जोड़ लवी। (२)

बुरे कर्मा दी सजा सोहनयाँ, धक्के खादां ऐं फिरदा,
गुरु बिना कोई बात ना पुछदा, बिछुड़ गयों कई चिरदा।(२)
जे लभना तूं मालिक अपना (२), कंध पड़दे दी तोड़ लवीं।ओए चित....

माया नागिन बड़ी भयानक जाऐ अपने खावे,
ड़ाड़ा जाल बिछाया इसने कोई गुरमुख ही बच जावे। (२)
जे नरकां तों बचना चाहुंने (२), सिमरन वल मन मोड़ लवीं।ओए चित....

पुन्न दान ते जप तप सारा ऐथे ही रह जावें,
करी कमाई नाम शब्द दी मालिक नाल मिलावें। (२)
लभिया अमृत नाम प्याला (२), ऐंवें ना तूं रोड़ लवीं। ओए चित....

अर्ज सुनो कृपाल प्यारे सचखण्ड रूहाँ पहुँचावो,
मैं अनजान 'अजैब' नकारा, अपने चरनी लावो। (२)
कर बन्दगी सतसंगत सुन लै (२), जेल चौरासी दी तोड़ लवीं।ओए चित.....

जपियो जिन गुरु कृपाल

(संत अजायब सिंह जी)

जपियो जिन गुरु कृपाल दयाल,
ओह मात गर्भ फिर जून न आयो। ।टेक।
जिस याद कियो फरियाद कियो।(२)
तिस प्रेम जहाज से पार लगायो। जपियो.....
जिस प्रीत करी विप्रीत हरी। (२)
उस जनम मरन दा दुःख मिटाओ। जपियो.....
जिस नाम लियो अमृत पान कियो। (२)
तिस काल के जाल को तोड़ गिरायो। जपियो.....
मन में जाप कियो आपा त्याग दियो। (२)
सच आतम सो परमात्म पायो। जपियो.....
जिस नाम जपियो भगवान रटयो।(२)
सो सचखण्ड के बीच सिधायो। जपियो.....
गुरु सुख नंदन महके चंदन। (२)
'अजायब' की वंदन शीश निवायो। जपियो.....

जे पारस होना ऐ जिन्दड़ीये

(गुरु अमरदास जी)

जे पारस होना ऐ जिन्दड़ीये, पढ़ सतगुरु दी बाणी। ।टेक।
आवहु सिख सतगुरु के प्यारेयो(२)
गावहु सची बाणी, जिन्दड़ीये पढ़ सतगुरु दी बाणी।जे पारस होना ऐ.....
बाणी तां गावहु गुरु केरी (२)
बाणीआं सिरि बाणी, जिन्दड़ीये पढ़ सतगुरु दी बाणी।जे पारस होना ऐ.....
जिन कउ नदरि करमु होवै (२)
हिरदै तिनां समाणी, जिन्दड़ीये पढ़ सतगुरु दी बाणी।जे पारस होना ऐ.....
पीवहु अमृत सदा रहु हरि रंगि(२)
जपिहु सारिगपाणी, जिन्दड़ीये पढ़ सतगुरु दी बाणी।जे पारस होना ऐ.....
कहै 'नानकु' सदा गावहु (२)
एह सची बाणी, जिन्दड़ीये पढ़ सतगुरु दी बाणी।जे पारस होना ऐ.....

जी जुग भावैं चार जीविऐ

(गुरुवाणी)

जी जुग भावैं चार जीविऐ, बिना भजन नहीं छुटकारा।

बडे–बडे जो दीसै लोग (२)
तिनको व्यापै चिन्ता रोग। बिना.....

कोउ न बड़ा माया बडयाई (२)
सोई बड़ा जिन राम लिव लाई। बिना.....

भूमियां भूम ऊपर नित लूजै (२)
छोड़ चले तृष्णा नहीं बुझै। बिना.....

कहो 'नानक' ऐह तत विचारा (२)
बिन हर भजन नाहीं छुटकारा। बिना.....

जी अज दी सुलखणी घड़ी

(संत अजायब सिंह जी)

जी अज दी सुलखणी घड़ी, मेरे सतगुरु आण मिलाई। (२)

मेरे विच गुण कोई ना, मैं तां हां पापण हत्यारी,
जंगला च रही ढुंढदी, अपने पिया मिलन दी मारी। (२)
भुली होई जन्मां दी, मैं तां दर तेरे ते आई। जी अज दी....

तैथों बिना सांई मेरेया, झल्ले दुनियां ते दुःख मैं बथेरे,
जमदी मरदी रही हर थां, आखिर आण के डिगी दर तेरे। (२)
हुण ना विछोड़ी दातेया, तेरे दर ते निमाणी जिंद आई।जी अज दी.
....

आसरा ना रहया कोई वी, इको तकया सहारा तेरा,
थक गई मैं भाल भाल के, किवें लभ जाऐ प्यारा मेरा। (२)
मैं हथ बन्न करां बेनती, मैनूं हर थां होणा जी सहाई,जी अज दी...
..

मिलो कृपाल प्यारेया, लावो लेखे विच जिंदगी मेरी,
माफ करी भुलां मेरीयां, मैं आई हां शरण हुण तेरी।(२)
जी अरज 'अजायब' करे, दासी बन तेरी मैं आई। जी अज दी....

जिन्हां जपिया कृपाल प्यारा

(संत अजायब सिंह जी)

जिन्हां जपिया कृपाल प्यारा, नरकाँ नूं नहिओ जाणगे। (२)

जन्म मरण दा दुःख है भारी, मिल गए सतगुरु कट गई बिमारी। (२)
मिल गया सच्चे गुरु दा सहारा, नरका नूं नहिओ जाणगे।। जिन्हां.....

दरगाह विच कोई पेश ना जावे, जामन बनके गुरु ही छुड़ाये, (२)
गेड़ा कटिया चौरासी वाला, नरका नूं नहिओ जाणगे।। जिन्हां.....

चौरासी लख जून औपाई, मानस को प्रभ दी वडियाई, (२)
गुरु मिल जायें तां भव जल तारां, नरका नूं नहिओ जाणगे।।जिन्हां.....

आशिक बन तेरे दर जो आया, जमण मरण पल च मुकाया, (२)
जिन्हां गुरु उतों तन मन वारां, नरकां नूं नहिओ जाणगे।। जिन्हां.....

गरीब 'अजायब' तरले पावे, शाह कृपाल दा शुक्र मनावे, (२)
सच्चा लभ गया यार प्यारा, नरकां नूं नहिओ जाणगे।। जिन्हा.....

जो मांगे ठाकुर अपने ते

(गुरु अर्जुनदेव जी)

जो मांगे ठाकुर अपने ते, सोई–सोई देवे। (२)

चतुर दिशा कीनो बल अपना, सिर ऊपर कर धारियो।
कृपा कटाख अवलोकन किनो, दास का दुःख बिदारयो। (२)जो मांगे.....

हर जन राखै गुरु गोबिन्द, राखो गुरु गोबिन्द।
कंठ लाऐ अवगुण सब मेटे, दयाल पुरख बक्शींद। (२) जो मांगे.....

जो मांगे ठाकुर अपने ते सोई–सोई देवे
'नानक' दास मुख ते जो बोले, ईहाँ ऊहाँ सच होवे(२) जो मांगे.....

जिसके सिर ऊपर तू स्वामी

(गुरु अर्जुनदेव जी)

जिसके सिर ऊपर तू स्वामी, सो दुःख कैसा पावै।
बोल ना जाने माया मद माता, मरना चीत ना आवै।।
मेरे राम राये, तू संता का संत तेरे (२)
तेरे सेवक को भौ किछ नाही (२)
जम नहीं आवै नेरे, जिसके.....
जो तेरे रंग राते स्वामी (२)
तिनका जनम मरन दुःख नासा (२)
तेरी बक्श ना मेटे कोई,
सतगुरु का दिलासा, जिसके.....
नाम ध्यायन सुख फल पायन (२)
आठ पैहर आराधै (२)
तेरी शरन तेरे भरवासै,
पँच दुष्ट लै साधै, जिसके.....
ज्ञान ध्यान किछ कर्म ना जाना (२)
सार ना जाना तेरी (२)
सबसे वडा सतगुरु 'नानक'
जिन कल राखी मेरी, जिसके.....

जोत रब दी है आई

(संत अजायब सिंह जी)

जोत रब दी है आई, सारे देयो जी बधाई,
नी मैं खिड खिड, खिड–खिड हँस दी फिरां, ते घर घर दसदी फिरां,
आया सोहणा, मैं घर घर दसदी फिरां। मैं दसदी फिरां। टेक।
अज देवी देवते मनौंण सारे खुशीयां, ते परियां शब्द अज गौंदियां।(२)
खुशी विच अज सारी दुनियां बधाई देवे, घर घर सगन मनौंदिया,
नी मैं दिल विच, दिल विच हँसदी फिंरा, ते घर...
हँसु हँसु करे मुख झलया ना जाऐ, तेज चेहरे उत्ते चमकां पैंदिया।(२)
आया ऐ इलाही नूर जग तों न्यारा बन मिल के सहेलियां कैहदियां।
नी मैं भज भज, भज भज तकदी फिंरा, ते घर घर...
पिता ऐ हुक्म सिंह माता ऐ गुलाब देवी, घर विच चानण आ गया।(२)
नाम कृपाल बन जगते मिसाल, आ 'अजायब' दा हनेरा ठा गया।
16 पी. एस., 16 पी. एस. वसदी फिरां, ते घर घर...

जो बानी पूरे सतगुरु

(संत अजायब सिंह जी)

जो बानी पूरे सतगुरु दी ओह जनम मरन मकौंदी ऐ।
जो नाम गुरु दा जपदा है, दरगाह विच मुकत् करौंदी ऐ।

जित्थे बानी दा अन्दर जाप होवे, कुल मालिक प्रतख आप होवे। (२)
ओह धुरकी बानी आई ऐ, जिन सगली चिंत मिटाई ऐ। (२)
सच्चे गुरुआं दी बानी पूरी ऐ, पापां दा नास करौदी ऐ।
जो बानी ...

बानी दी सिफत ना हौंदी ऐ, मैल जन्म–जन्म दी धौंदी ऐ। (२)
सच्चे गुरु दी जो बानी रटदा है, महां जाल काल दा कटदा है (२)
जो शरदा करे विश्वास धरे, ओनूं मालक नाल मिलौंदी ऐ।
जो बानी ...

कीर्तन बानी दा हो रेहा अन्दर विच, चाहुदें सुनना मस्जिद मन्दिर विच। (२)
ऐह काया ही हर मंदिर है, बैठा ओह सोहना अन्दर है (२)
बानी सच्चे कुल मालिक दी, दरगाह विच मुकत् करौंदी ऐ।
जो बानी...

ऐह महापुरुषां दी बानी ऐ, ऐह रतनां दी खानी ऐ। (२)
गुरुआं दे नाल मिला देवे, सचखण्ड दा भेद बता देवे। (२)
ऐह बानी सच्चे सतगुरु दी होमें दा रोग हटौदी ऐ।
जो बानी ...

सावन ने झड़ीयाँ रच लईयां, रूहाँ मुरझाईयाँ बच गईयाँ। (२)
जीवां ते होया दयाल प्रभु, अन्तर जामी कृपाल प्रभु। (२)
बानी दी सिफत 'अजायब' करें, सोहना विछुड़या यार मलौंदी ऐ।
जो बानी ...

जे सजना तैं मुर्शद खुश करना ते

(संत अजायब सिंह जी)

जे सजना तैं मुर्शद खुश करना ते, तड़फ बनौणी पैंदी ऐ।

घा खोदना पवें जिन्द दुखड़े सहे, कही वौणी पवे, नाम गुरुदा लवे (२)
सिर टोकरी उठौणी पैंदी ऐ, जे.....

मस्ताने वांगू लिट अगे, तू प्यार च प्रीतम खिंच अगे (२)
मस्ताने वांगू सजना ओए, जिन्द घटेच रुलानी पैंदी ऐ। जे.....

दर प्रीतम दे तूं अलख जगा, इक दिन सजना तैनूं पाऊॅ राह (२)
कबीर दे वागू सजनां ओए, जिन्द जीभी च गडौणी पैंदी ऐ। जे.....

तूं अमर गुरु वांगु कर सेवा, इस रुख नूं लगदा वेख मेवा (२)
जे सुन्डी सिर तो गिर जावे, सिर उत्ते टकौणी पैंदी ऐ। जे.....

तूं देख लै सजना लैहणे वल, उस राह ते सजना तूं वीं चल (२)
जे हुकम वी मालिक कर देवे, देही चिकड़ नवौणी पैंदी ऐ। जे.....

तूं देख लै बीबी अमरो वल, जिन पैर दे विच पवाया सल (२)
वस प्यार दे आके विच सजना, धार खून दी चलौंणी पैंदी ये।जे.....

लोक लाज देवीं तू छड सजना, तैनूं तारू तेरा रब सजना (२)
ऐनू करदे हवाले प्रीतम दे, फिर उसनू बचौणी पैंदी ऐ। जे.....

मनसूर वरगी तेरी अख होसी, तांही सूली उपर चढ़ होसी (२)
समस तबरेज दे वागूं वीरा ओए, खलड़ी लुहौणी पैंदी ऐ। जे.....

ऐ मंजिल लगदी औखी ऐ, रब आशकां नूं ऐ सोखी ऐ (२)
इस मंजिल उत्ते हर वेले, तकलीफ उठौणी पैंदी ऐ। जे.....

ऐथे विरला आशक चलदा ऐ, जेडा मौतों मूल ना टलदा ऐ (२)
मेरे प्रीतम प्यारे नूं सूली दी, सूल बनौणी पैंदी ऐ। जे.....

मालिक दा भाणां मनके चल, तेरा प्रीतम सजना तेरे वल (२)
गुरु अर्जुन वांगू सजना ओए, सिर रेत पवौणी पैंदी ऐ। जे.....

'अजायब' देख नजारे नूं साधू मिलिये प्रीतम प्यारे नूं (२)
प्रीतम नूं अपने चेले दी, तकदीर बनौणी पैंदी ऐ। जे.....

झूठा संसार है

(संत अजायब सिंह जी)

झूठा संसार है, जिन्दगी लाचार है।
आओ कृपाल जी तेरी इंतजार है, तेरी इंतजार है। (२)

मेरे दाता जी,गुनाहगार असी साडे कागज ना फोल,वे,कागज ना फोल वे।(२)
बेड़ी मंझधार है कर देयो पार है।
आओ कृपाल जी तेरी इंतजार है, तेरी इंतजार है।।
झूठा संसार.....

आओ प्यारे, सुन लो बेनती, सुन लो बेनती। (२)
सच्चा तेरा प्यार है, तेरा ही आधार है।
आओ कृपाल जी तेरी इंतजार है, तेरी इंतजार है।।
झूठा संसार.....

असी हाँ मैले, सानू ऊजल करदे ऊजल करदे। (२)
करना दीदार है, रूह शरमसार है।
आओ कृपाल जी तेरी इंतजार है, तेरी इंतजार है।।
झूठा संसार.....

तुसी बख्शो दाता जी, तुसी बख्शंद हो, तुसी बख्शंद हो। (२)
'अजायब' दी पुकार है, खड़क रही तार है।
आओ कृपाल जी तेरी इंतजार है, तेरी इंतजार है।।
झूठा संसार.....

झूठे छडके व्यवहार

(संत अजायब सिंह जी)

झूठे छडके व्यवहार, करी गुराँ नाल प्यार।
सच्ची शरधा नूँ धार, प्यार गुराँ नाल पा लवीं।।

होमें हंगता नूं मार, वैर इरखा विसार।
मिल जाए निरंकार, चित चरणा च ला लवीं।।

घड़ी नाम ना विसार, तेरा हो जाए उद्धार।
बेड़ा लग जाए पार, पहलाँ मन समझा लवीं।।

'अजायब' मिले कृपाल, हो जाए जे दयाल।
कर देवे मालो माल, मन बदियाँ तों ठा लवीं।।

झुठी दुनियां च फँसया दिल मेरा

(संत अजायब सिंह जी)

झुठी दुनियां च फँसया दिल मेरा, कोई आके बंधन तोड़ गया,
लख वारी ओ जी सदके, जेहड़ा सुरत शब्द नूं जोड़ गया। (२)

भटके दुनियां विच रूह मेरी (२) मिलया ना कोई दर्दी,
फंसी फसाई दुनियां दे विच, दुनियां हैं बेदर्दी,
भुलके रस्ता ओजड़ पै गई (२) रस्ते वल मुँह मोड़ गया।लख वारी.....

मैं मूर्ख पापण हत्यारी (२) ऐबां दे विच अड़ गई,
याद प्रभु दी भूल गई मैं, हेठ पापां दे दड़ गई,
तरस मेरे ते कीता आके (२) काल दे संगल तोड़ गया,लख वारी.....

मैं अनजान ना कुछ वी जाणा (२) मैं धक्के खांदी फिरदी,
मिल जाऐ कृपाल दयालू, तांध दिलां विच चिरदी,
रूह अजायब दी घर तों भुल गई (२) फड़के घर नूं मोड़ गया,लख वारी.....

ठाकुर तुम्ह शरणाई आइआ

(गुरु अर्जुन देव जी)

ठाकुर तुम्ह शरणाई अइआ। (२)

उतरि गइओ मेरे मन का संसा,
जब ते दरसन, दरसन पाया। (२) ठाकुर तुम्ह.....

अनबोलत मेरी बिरथा जानी,
अपना नामु, नामु जपाइआ। (२) ठाकुर तुम्ह.....

दुखु नाठे सुख सहजि समाए,
अनद अनद, अनद गुण गाइआ। (२) ठाकुर तुम्ह.....

बाह पकरि कढि लीना जन अपुने गृह,
अंध कूप, कूप ते माइआ। (२) ठाकुर तुम्ह.....

कहु 'नानक' गुरू बंधन काटे,
बिछुरत आनि, आनि मिलाइआ। (२) ठाकुर तुम्ह.....

तुम से मेरा जनम-जनम का नाता

(संत अजायब सिंह जी)

तुम से मेरा जनम–जनम का नाता हे कृपाल गुरु।
मेरा जन्म जन्म का नाता हे कृपाल गुरु। (२)

तुम हो पारब्रह्म परमेश्वर, मैं हूँ अंश तुम्हारा,
तुमसे बड़ा नहीं है जग में, कोई और सहारा। (२)
मैं सेवक तुम स्वामी मेरे, तुम ही भाग्य विधाता, हे कृपाल.....

सच्चे मन से एक बार भी, जिसने तुम्हें पुकारा,
जनम मरण के इस चक्कर से, मिला उसे छुटकारा। (२)
महिमा अपरम्पार तुम्हारी, पार नहीं मिल पाता, हे कृपाल.....

मेरे सतगुरु पतित पावन है, पावन नाम तुम्हारा,
मैं अपराधी महा पतित मैं, मैंने तुझे बिसराया। (२)
ना मुझ जैसा याचक सतगुरु, ना तुम जैसा दाता, हे कृपाल.....

तिल तिल का अपराधी सतगुरु, मैं भूला जीव बेचारा,
कोट पाप को मिटाने वाला, ऐसा नाम तुम्हारा। (२)
कृपाल गुरु ने कृपा करके, 'अजायब' को घर पहुंचाया, हे कृपाल.....

तेरे चरणां दा आसरा

(गुरुवाणी)

तेरे चरणां दा आसरा, होर आसरा ना कोई।

चित चरण कमल का आसरा (२)
चित चरण कमल संग जोड़िए। होर.....

मन लोचे बुरयाईयाँ (२)
गुर शब्दी ऐहो मन होड़िऐ। होर.....

बाँह जिनां दी पकड़ीये (२)
सिर दीजै बांह ना छोड़िये। होर.....

गुरु 'तेग बहादुर' बोलिया (२)
धर पईये धर्म ना छोड़िये। होर.....

तक लै मना ओए कृपाल प्यारे तांई

(संत अजायब सिंह जी)

तक लै मना ओए कृपाल प्यारे तांई।(२)

दर्शन गुरु दा जिसने कीता, अमृत नाम प्याला पीता।(२)
पक लैं मना ओए कृपाल सहारे तांई।। तक लै.....

जिसने वी दिल विच गुरु नूं बैठा लिया, गेड़ा चौरासी वाला मुका लिया।(२)
रखलै मना ओए गुरु प्यार नजारे तांई।। तक लै.....

गुरु दा प्यार जिस हिरदे च आऐगा, सचखण्ड दा बुहा खुल जाऐगा
रट लैं मना ओए सचेगुरु दे इशारे तांई।। तक लै.....

दुःखियां दे दुःख एक पल च निवारदा, ठलिया ना जावे ओह समुन्द्र प्यार दा।(२)
दया जद होवे इक पल विच तारे सांई।। तक लै.....

दस्सी ना कहानी जाऐ गुरु दे प्यार दी, करां की सिफत मैं सच्चे दिलदार दी।(२)
दसलै 'अजैब' कृपाल दे नजारे तांई।। तक लै.....

तपदे हिरदे ठारे आके

(संत अजायब सिंह जी)

तपदे हिरदे ठारे आके, नाम दा मींह बरसा गया।
दर्द निवारन दुःखियाँ वाले, सच्चा सतगुरु आ गया। (२)

जिस थां ते कृपाल प्यारा, ओथे बाग बहारां,
समय–समय सिर लाऐ बूटे, अज खिड़ियाँ गुलजाराँ। (२)
नाम दे बुटे लाऐ उसने सतसंग पानी पा गया। दर्द निवारन.....

धन–धन कृपाल प्यारा, अपनी चरणी ला लिया,
पंच शब्द दा रस्ता दसके, अपने विच मिला लिया। (२)
दुई दवैत दा भेद मिटाके, इको शब्द सिखा गया। दर्द निवारन.....

हर थां ते कृपाल प्यारा, अखिंया विच समाया है,
घट–घट दे विच वसदा सोहना, विरले ने ही पाया है। (२)
दुनियां दे सब इलम छुड़ा के, इको शब्द सिखा गया।दर्द निवारन.....

दास 'अजायब' अर्जा करदा, सुन कृपाल प्यारया,
दर तेरे ते ढठे आके, रखीं लाज दातारया। (२)
नाम दान दी झोली भरके, झोली भरण सिखा गया। दर्द निवारन....

तेनूं वारो वारी आखे मना ओए

(संत अजायब सिंह जी)

तेनूं वारो वारी आखे मना ओए वेला बन्दगी दा, ओए वेला बन्दगी दा,
भुलीं ना ठिकाना जित्थे पुठा लटकाया सी
बन्दगी सहारे ओथों गुरु ने छुड़ाया सी
हुण लग जा गुरु दे आखे। मना ओए वेला.....

बीत गया वेला फिर हाथ नहीं औना है।
नाम तो बगैर फिर पये पछौताना है।
तेरी जिन्दगी है पानी च पतासे। मना ओए वेला.....

आया सी परौणा बैह गया मलके ठिकाना ओए,
भुल गया चेता आखिर जिस घर जाना ओए,
गल्ल पैनीं ना ऐह हासे। मना ओए वेला.....

सच्चे दिल नाल जो करदा कमाई है,
आखिर वेले गुरु होंदा सहाई है,
'अजैब' होजा कृपाल भरवासे। मना ओए वेला.....

तेरा नाम ध्याइए जी

(संत अजायब सिंह जी)

तेरा नाम ध्याइए जी, धन कृपाल गुरु। (२)

जनम मरन दा दुखड़ा लगिया। (२)
जप नाम हटाइये जी, धन कृपाल।।
तेरा नाम.....

दर्श बिना दिल धड़के मेरा। (२)
अखाँ विच समाइए जी, धन कृपाल गुरु।।
तेरा नाम.....

विच दरगाह दे कोई ना राखा। (२)
तेरा ध्यान बनाइए जी, धन कृपाल गुरु।।
तेरा नाम.....

अमृत सोमा सतगुरु पूरा। (२)
सच्चा तीर्थ नहाइए जी, धन कृपाल गुरु।।
तेरा नाम.....

बन्द अखियाँ सानूं होया हनेरा। (२)
तैथों अख बनाइए जी, धन कृपाल गुरु ।।
तेरा नाम.....

तैथों बिना किसे प्यार ना करिया। (२)
यश तेरा ही गाइए जी, धन कृपाल गुरु।।
तेरा नाम.....

फड़िया 'अजायब' ने पल्ला गुरु दा। (२)
चरनी शीश नवाइए जी, धन कृपाल गुरु।।
तेरा नाम.....

तेरा नाम रसमुल्ला जी

(बाबा सोमनाथ)

तेरा नाम रसमुल्ला जी, जिन्होंने स्वाद लिया। (२)

बन्द करे जो नव द्वारा, रंध्र दसवें में चित जो ठहरा (२)
इन्द्रि मन को रोक लिया जी, जिन्होंने स्वाद लिया, तेरा नाम.....

आवत धुर से अनहद बानी, सुनत झीनी अन्तर श्रवणी,
दो नैनी ध्यान लगाया जी, जिन्होंने स्वाद लिया, तेरा नाम.....

मंत्र गुरु वाक्य अन्तर सुमिरे, शांत चित मन एकाग्र धरे,
जंत्र शब्द बजाया जी, जिन्होंने स्वाद लिया, तेरा नाम.....

संहस दल कमल से त्रिकुटी आये, पारब्रह्म में सुन्न समाये,
महासुन्न से भंवर गया जी, जिन्होंने स्वाद लिया, तेरा नाम.....

सत लोक और अलख अगम, निजगति राधा स्वामी धाम,
दास 'सोम' समाया जी, जिन्होंने स्वाद लिया, तेरा नाम.....

तेरा सब दुनियां तों

(संत अजायब सिंह जी)

तेरा सब दुनियां तों, सोहना है दरबार गुरु जी।

तेरा देखके नूरी मुखड़ा, होवे दूर दिलां दा दुःखड़ा। (२)
जे कोई आवे नाम दा भुखड़ा, कीता पार गुरु जी। तेरा.....

सतसंग लगदा है महावारी, जिसते ढुकदी खलकत भारी। (२)
बनके आये तुसी उपकारी, विच संसार गुरुजी। तेरा.....

जेहड़े रमज तेरी नूं जानण, सोई मौज प्रेम दी मानणं। (२)
हो गया अन्दर ओनां दे चानण, बे बहार गुरु जी। तेरा.....

पांच शब्द दा सिमरण दसके, मारे तीर ज्ञान दे कसके। (२)
सिधा सचखण्ड दा राह दसके, हर पुकार गुरु जी। तेरा.....

तारे कई जन्मा दे रोगी, कामी क्रोधी कपटी भोगी। (२)
आया दर तेरे ते 'अजायब' करन पुकार गुरु जी। तेरा.....

तेरे नाम दा भरोसा भारी

(संत कबीरदास जी)

तेरे नाम दा भरोसा भारी रखी लाज प्यारयांदी,
रखी लाज प्यारयां दी। (२)

नाम जपो जी ऐसे–ऐसे,
ध्रुव प्रह्लाद जपयो हर जैसे। (२) रखीं लाज.....

दीनदयाल भरोसे तेरे,
सब परिवार चढ़ायो बेड़े। (२) रखीं लाज.....

जां तिस भावै तां हुक्म मनावै,
इस बेड़े को पार लगावै। (२) रखीं लाज.....

गुरु प्रसाद ऐसी बुध समानी,
चूक गई फिर आवन जानी। (२) रखीं लाज.....

कहो 'कबीर' भज सारंग पानी,
उरवर पार सब ऐको दानी। (२) रखीं लाज.....

तेरे नाम दी वैरागण बनके

(संत अजायब सिंह जी)

तेरे नाम दी वैरागण बनके, ढुँढा गली ओ गली। (२)

फिरदी दर–दर धक्के खावां, मिल जाऐ पीया तां गल लांवा। (२)
बाज पीया दे तरले पावां, ढुँढा गली ओ गली। तेरे नाम दी.....

दुःख बिरहों दा वड–वड खावे, दस पीया दी कोई ना पावे। (२)
तन मन वारां जे मिल जावे, ढुँढा गली ओ गली। तेरे नाम दी.....

अन्दर बाहर दिल नूं टोहवां याद करां ते पल–पल रोवां। (२)
हंझुआं वाले हार परोवां, ढुँढा गली ओ गली। तेरे नाम दी.....

गुरु कृपाल मेरे गृह आऐ, सुत्ते दीऐ भाग जगाऐ। (२)
तेरी महिमा कही ना जाये, ढुँढा गली ओ गली। तेरे नाम दी.....

सतगुरु तेरीयां धन कमाईयाँ, झड़ीयां नाम दीयां तैं लाईयां। (२)
रूहाँ सचखंड विच पुचाईयां, ढुँढा गली ओ गली। तेरे नाम दी.....

खेल तेरी कृपाल नियारी, आए हों बनके पर उपकारी। (२)
रूह 'अजायब' दी आ ठारी, ढुँढा गली ओ गली। तेरे नाम दी.....

तेरे नाम ने बनाऐ

(संत अजायब सिंह जी)

तेरे नाम ने बनाये राजे जोगी, जंगलाँ च हांका मार दे। (२)

उँचे भाग जीना दे जागे, सच्चा नाम जपन नूं लागे। (२)
डिग्गे दर तेरे ते कामी क्रोधी, जंगला च हांका मार दे।।तेरे नाम ने.....

जिसने नाम सच्चे नूं रटिया गेड़ चौरासी वाला कटिया। (२)
बक्शे आए होमे दे रोगी, जंगला च हांका मार दे।। तेरे नाम ने.....

असी पापी हां औगुण हारे चलके आये तेरे दवारे। (२)
वैद्य बन राजी कर रोगी, जंगला च हांका मार दे।। तेरे नाम ने.....

नाम जपण दी रीत चलाके घट–घट विच तूं वसदा आके। (२)
राजी करें कपटी ते भोगी, जंगला च हांका मार दे।। तेरे नाम ने.....

करो कृपाल जी पूरी इच्छया 'अजायब' नूं पावो भिच्छया। (२)
बन आया तेरे दर दा जोगी, जंगला च हांका मार दे।।तेरे नाम ने.....

तेरे प्रेम बावरी कीता

(संत अजायब सिंह जी)

तेरे प्रेम बांवरी किता, हुण कोई पेश ना जांदी ऐ। (२)

लोंकी कहेदें प्रेम सुखाला, ऐतां झपट है शेरां वाला, (२)
ऐतां नाग जहरीला काला, थर–थर रूह घबरौंदी ऐ। तेरे प्रेम.....

तेरा प्रेम हड़ां विच रड़के, कदम उठावां तां दिल धड़के, (२)
अदरों तार प्रेम दी खड़के, जिंद पई गोते खादीं ऐ। तेरे प्रेम.....

तेरी सूरत चन्द मिसाल, वागं चकोरां साडा हाल, (२)
डाडा पाया प्रेम दा जाल, साडी रूह कुरलोन्दी ऐ। तेरे प्रेम.....

सुनियो सतगुरु जी कृपाल, साडा दुखियां दा की हाल, (२)
बक्शो सतगुरु दीन दयाल, रूह पई वास्ते पौंदी ऐ। तेरे प्रेम.....

जेहड़ा प्रेम कमोणां चाहवे पहिला सिर नूं भेंट चड़ावे, (२)
'अजायब' दरश पिया दा पावे, बानी ऐह फरमौंदी ऐ। तेरे प्रेम.....

तेरी हरदम याद मना रहे

(संत अजायब सिंह जी)

तेरी हरदम याद मना रहे दरश दिखा जा तूं (२)
असी भुज रहे विच वियोग दे ठंड वरता जा तूं। (२)

दुनियां विच भांबड़ भख रहे, अगनी विच जीव है मच रहे, (२)
दाता तरस करो जी आन के, फेरा पा जा तूं। (२) तेरी.....

नाम जपना कल विच ओखा है, शरणी पै जाना सौखा है, (२)
बेड़ी अड़ गई विच मझधार दे, बन्ने लाजा तूं। (२) तेरी.....

तैथों बिछड़ के औखे हो रहे, दिन राती दाता रो रहे, (२)
असी रखीयाँ आसां तेरीयाँ, साडी आस बुझा जा तूं। (२) तेरी.....

कृपाल गुरु जी प्यारा है 'अजायब' नूं ऐहो सहारा है, (२)
दर्शन दी प्यासा लग रही, प्यास बुझा जा तूं। (२) तेरी.....

तू डाडा बेपरवाह कुदरतां तेरीयां

(संत अजायब सिंह जी)

तू डाडा बेपरवाह कुदरतां तेरीयां। (२)

कुदरत करके बन्दा आया, पांच तत दा चोला पाया।(२)
विच चमड़ी दे भरिया साह, कुदरतां तेरीयां।। तू डाडा.....

घट–घट दे विच वसदां ऐ प्यारे, तेरे दाता चोज नियारे (२)
तू हैं शाहां दा शांह, कुदरतां तेरीयां।। तू डाडा.....

इस काया विच मंदिर रचया, पड़दा पाके अन्दर वसया। (२)
आपे ही दसदा राह कुदरतां तेरीयां।। तू डाडा.....

मोह माया तों आन छुड़ावैं, नाम जपाके पार लगावें। (२)
पावै सचखण्ड दे राह, कुदरतां तेरीयां।। तू डाडा.....

कुदरत नूं कृपाल ही जाणें अपनीयां रूहां आप पछाणें। (२)
सुनी अरज 'अजायब' दी आ, कुदरतां तेरीयां।। तू डाडा.....

तेरी कुदरत तूं ही जाणे

(संत अजायब सिंह जी)

तेरी कुदरत तूं ही जाणे, होर ना दूजा जाणेगा,
जिस ते मेहर हो जाए तेरी, तैनूं ओही पछाणेगा। ।टेक।

जुग जुग दे विच आए पहलां, नाम कबीर सदाया है,
कर्म काण्ड तों ठाके दुनियां, परमार्थ विच लाया है। (२)
दुःख तसीहे झल्ले सारे (२), दसया भेद ठिकाने दा,
जिस ते मेहर .....

नानक बनके दुनियां तारी, अंगद नाम धराया है,
अमर देव गुरु रामदास जी, अर्जुन देव सदाया है। (२)
गुरु अर्जुन जी लोह ते बैठे (२), शुकर मनाया भाणे दा,
जिस ते मेहर .....

हरि गोबिन्द हरि राय साहिब जी, हरि कृष्ण जी प्यारे ने,
सतगुरु तेग बहादुर साहिब, शीश धर्म तों वारे ने। (२)
गुरु गोबिन्द सिंह रतनाकर राव ते (२), कीता मान निमाणे दा,
जिस ते मेहर .....

तुलसी साहिब नाम दे रसीए, स्वामी जी नूं तार दित्ता,
स्वामी जी ने जयमल सिंह नूं, नाम दे बेड़े चाढ़ दित्ता। (२)
जयमल सिंह दा सावन प्यारा (२), दुध चों पानी छाणेगा,
जिस ते मेहर .....

सावन सोहना बाग लगाया, विच बिठाया माली है,
नाम ओदा कृपाल प्यारा, संगत दा ओह वाली है। (२)
सुनियो अर्ज गरीब 'अजायब' दी (२), रखियो मान निमाणे दा,
जिस ते मेहर .....

तेरी सोच करे कृपाल

(संत अजायब सिंह जी)

तेरी सोच करे कृपाल सोचां क्यों करदा। (२)

कुल मालिक ओह सारे जग दा। (२)
ओह है दीनदयाल, सोचां क्यों करदा। तेरी सोच.....

बिना बन्दगी कुछ सोच ना चलदी। (२)
भाँवें सोच लईए लख वार, सोचां क्यों करदा।
तेरी सोच.....

निचों उँच करे मेरा गोबिन्द। (२)
ओह सुनदा है सबदी पुकार, सोचां क्यों करदा। तेरी सोच.....

मैं मैं छड़के तूं तूं करलै। (२)
तेरी रखिया करे प्रतिपाल, सोचां क्यों करदा।
तेरी सोच.....

विच दरगाह दे गुरु दा सहारा। (२)
पिछे हट जाए काल कराल, सोचां क्यों करदा। तेरी सोच.....

अन्दर साफ जिन्हां दे सच्चे। (२)
ओह हरदम करदा संभाल, सोचां क्यों करदा।
तेरी सोच.....

सुली दी फिर शूल बनावे। (२)
मोह माया दा कटदा जंजाल, सोचां क्यों करदा। तेरी सोच.....

लख शुकराना गुरु मेहरबाना। (२)
लिया आके 'अजायब' संभाल, सोचां क्यों करदा। तेरी सोच.....

तू मेरा पिता तू है मेरा माता

(गुरु अर्जुनदेव जी)

तू मेरा पिता तू है मेरा माता, तू मेरा बन्धप तूं मेरा भ्राता। टेक ।
तूं मेरा राखा सभनी थांई (२), तां भौ केहा काड़ा जीयो। (२)तूं.....
तुमरी कृपा ते तुध पछाना (२), तूं मेरी ओट तूं है मेरा माना।(२) तूं.....
तुध बिना दूजा अवर ना कोई (२), सब तेरा खेल अखाड़ा जीओ।(२) तूं.....
जीय जन्त सब तुधं अपाऐ (२), जित जित भाना तित–तित लाऐ।(२) तूं.....
सब किछ किता तेरा होवे (२), नांही किछ असाड़ा जीयो। (२)तूं.....
नाम ध्याऐ महासुख पाया (२), हर गुण गायें मेरा मन सितलाया।(२) तूं.....
गुरु पूरे वजी वधाई (२), 'नानक' जिता बिखाड़ा जीयों। (२)तूं.....

तुम बिन कौन सहाई दाता

(संत अजायब सिंह जी)

तुम बिन कौन सहाई दाता, तुम बिन कौन सहाई जी। (२)तुम बिन.....
जन्म–जन्म के दर–दर भटके, लख–लख ठोकर खाई जी... (२)तुम बिन.....
भूले भटके राही दाता, आये तेरी शरनाई जी... (२) तुम बिन.....
बड़े–बड़े मुनि ऋषि हैं तारे, हमको लो तराई जी... (२) तुम बिन.....
बड़े–बड़े पापी हैं तारे, वड़ी वडयाई जी... (२) तुम बिन.....
तुम हो अगम अगोचर दाता, दे दो आन दिखाई जी... (२)तुम बिन.....
भजन बिना है, मुक्ति नाही, सीख तुम्हीं से पाई जी... (२)तुम बिन.....
तेरा नाम जहाज है दाता, सफर बड़ा सुखदाई जी... (२) तुम बिन.....
चरन कमल पर बलि–बलि जावै, तेरा ध्यान लगाई जी... (२)तुम बिन.....
तुम हो बड़े 'कृपाल' ओ दाता, 'अजायब' मिले गुरु आई जी..(२)तुम बिन.....

तुसी अर्ज सुनो कृपाल गुरु

(संत अजायब सिंह जी)

तुसी अर्ज सुनो, कृपाल गुरु, साडा मन बदीयां तो मोड़ दियो। (२)

मन सतसंगत विच औंदा नहीं, बदीयां करनो शरमोंदा नहीं। (२)
करो तरस जीवां ते दयाल प्रभु, चित गुरु चरनां विच जोड़ दियो। तुसी...

असी जन्म–जन्म दे रोगी हां, कामी, क्रोधी कपटी भोगी हां। (२)
तेरी आत्मा तूं ही संभाल गुरु, साडे मन दा पड़दा तोड़ दियो। तुसी...

मन परमार्थ तो डरदा ऐ, छड़ भजन बहाने करदा ऐ। (२)
कई जन्मा तों है भटक रिहा, करो मेहर मालिक संग जोड़ दियो। तुसी...

तेरे फुलां दी सुगन्धी भौंरा प्यार करे, दया मेहर दी सदा इंतजार करे। (२)
गुनहगार 'अजायब' दी अरज सुनो, मन सिमरन दे विच जोड़ दियो। तुसी...

दर्शन देख जीवां गुरं तेरा

(गुरुवाणी)

दर्शन देख जीवां गुरु तेरा, पूर्ण कर्म होऐ प्रभ मेरा। (२)

ऐहो बेनती सुण प्रभ मेरे (२)
देहे नाम कर अपने चेरे (२)

अपनी शरण राख प्रभ दाते (२)
गुरु प्रसाद किनै बिरलै जाते (२)

सुन्हौ बिनों प्रभ मेरे मीता (२)
चरन कमल बसहै मेरे चीता (२)

नानक इक करे अरदास (२)
बिसर नाही पूरन गुण तास (२)

देख लया असीं देख लया

(संत अजायब सिंह जी)

देख लया, असीं देख लया, लाल सावन दा देख लया। ।टेक।

राह विच आईयां जिनियां ज्यादा दुश्वारियां। (२)
ओनियां ही पक गईयाँ गुरु नाल यारियां। (२)
नाम नाल वी दिल ला के देख लया।
देख लया .....

कई जन्मां विच लखां गुनाह असी कीते। (२)
भर भर जहर प्याले असी पीते। (२)
तेरी खातिर मरके जी के देख लया।
देख लया .....

गल्लां दिल दियाँ, दिल विच ही रह गईयाँ। (२)
मजबूरियाँ दिल दियाँ सब कुछ कह गईयाँ। (२)
असी दुनियां तों मन नूं मोड़ लया।
देख लया .....

लखां जप तप असी जीवन विच कीते। (२)
धुणियाँ तपाइयाँ नाले जल धारे कीते। (२)
'अजायब' कृपाल सहारे होके, जनम मरन नबेड़ लया।
देख लया .....

दर्श पिया दा पा लवाँ

(संत अजायब सिंह जी)

दर्श पिया दा पा लवाँ मैं तेरा विछोड़ा ठा लवाँ। (२)
वे मैनूं रात दिने तड़फाँदा, तेरे दर्श बिना जिन्द थोथरी,
वे मेरा लखां दा जीवन जान्दा।

वे विछड़ीं ना वे विछड़ीं ना, गुरु सच्चा टोलिया,
वे जिन्दगी दा वे जिन्दगी दा मौका जोड़िया। (२)
हुण छडके झूठी रीति वे, आकर लै सच्ची प्रीति वे।
मन अजे बाज नहीं आंदा, तेरे दर्श बिना जिन्द थोथरी।
वे मेरा लखां दा जीवन जान्दा।।
दर्श पिया दा...

वे मिलया है वे मिलया है जामा इन्सान दा,
वे जावे ना वे जावे ना वेला नाम दा। (२)
ऐह जिन्दगी रतन अमोल है भा कोडियाँ दे न रोल वे।
खट लाहा क्यों शरमान्दा, तेरे दर्श बिना जिन्द थोथरी।
वे मेरा लखां दा जीवन जान्दा।।
दर्श पिया दा...

वे आवीं तू वे आवीं तू, सतसंग कर लै,
वे मौका है वे मौका है, सच्चा रंग चाढ़ लै। (२)
हुण रब सबब बनाया वे, ऐह सोहना समा थिआया वे।
फिर वेला बीतदा जान्दा, तेरे दर्श बिना जिन्द थोथरी।
वे मेरा लखां दा जीवन जान्दा।।
दर्श पिया दा...

वे सन्तां दा वे सन्तां दा नाम उच्चा हो गया,
वे जपदा जो वे जपदा जो, सुच्चा हो गया। (२)
'अजायब' दी देख प्रीति वे कृपाल ने रखिया कीती वे।
आ ठण्ड कलेजे पांदा, तेरे दर्श बिना जिन्द थोथरी।
वे मेरा लखां दा जीवन जान्दा।।
दर्श पिया दा...

दाता जी कित्थें गयों

(संत अजायब सिंह जी)

दाता जी कित्थें गयों, प्रीतमा वे कित्थें गयों। (२)
हत्थी अपनी बाग सजाके, आपे तूं ऐह बुटे लाके, (२)
नहीं सी छड जाना सानूं मालीया, वे कित्थे गयो। दाता जी...
पता जे हुंदा नाल ही जादें काहनूं ऐड्डे दुखड़े उठादें, (२)
जे चिर लौना सी रखवालीयां, वे कित्थे गयों। दाता जी...
हुण तां डोले जग दा बेड़ा बन्ने लावें होर हुण केड़ा, (२)
तेरे बाजों कोण बचावे खुशहालीयां, वे कित्थे गयों। दाता जी...
सुन फरियाद 'अजैब' दी आवीं आके दुखियां दे दर्द मिटावीं, (२)
सोहना आके दर्श दिखाजा संगत दिया वालीया, वे कित्थे गयों।दाता जी...

देजा सहारा कृपाल प्यारे

(संत अजायब सिंह जी)

देजा सहारा कृपाल प्यारे, ऐस गमां दे सताये नूं,
मैंनू ना ठुकराई ओ बाबा, दुनियां दे ठुकराये नूं। (२) देजा सहारा...
की दसां मेरे सतगुरु तैनूं, नाल जो मेरे होई,
मेरे हाल ते मेरी किस्मत, फुट–फुट के हैं रोई (२)
तेरे सिवा इस गुनाहगार दा, दिसदा जगविच होर ना कोई।देजा सहारा...
पत्थर समझ के राह दा मैनूं, सबने ठोकर लाई,
मेरे हाल ते मेरी आत्मा ने रज के लानत पाई। (२)
अल्लाह, राम, रहीम ने सतगुरु सुनी ना आण के मेरी दुहाई।देजा सहारा...
तेरे सिवा मैं किस नूं समझा सतगुरु हर कोई दिसे पराया,
तोड़ गया मेरे दिल दा शीशा जिसनूं मैं अपना बनाया। (२)
जिस उत्ते मैं लहु डोलिया उसने भी मैंनूं ठुकराया। देजा सहारा...
अज जुल्म दी कैद विच बाबा, पलदिंया ने तकदीरां,
बेदर्दी काल दे अग्गे, चल दिंया ना तदबीरां। (२)
तेरी राहां विच जान वार दियां खुलदियां जान ऐहे तकदीरां।देजा सहारा...
सार 'अजायब' दी लयो कृपाल जी, जिंद जान तैथों वारां,
मैं पगली नूं तेरा सहारा, एक पल कदी ना विसारां। (२)
तेरे बिना मेरा होर ना कोई लाज रखो गल लाये नूं। देजा सहारा...

देजा तूं दर्श हुण लाईयाँ

(संत अजायब सिंह जी)

देजा तूं दर्श हुन लाईयाँ कानूं, देरियाँ,
दर तेरे ते आवागें जी नारा शांह कृपाल दा लावांगे।। टेक। (२)

देजा खां नजारा आके सावन दे प्यारेया, (२)
लभया ना सानू असी बहुत तैनूं भालया। (२)
पार तेरे ही सहारे हो जावागें। जी नाराशांह कृपाल दा लावांगेजी नारा शांह.....

तुर गयों साईयाँ साथों होके कांनू दूर जी, (२)
केरा ता वखाजा ऐहो सावाँ जेहा नूर जी। (२)
तेरे बिना होर की इलाज करावांगे। जी नारा शांह.....

वांग मनसूर असी, पक्के होके खड़ागें, (२)
तेरे ही विछोड़े विच सूली उत्ते चढ़ांगे। (२)
तेरे बिना ठोकरां खावागें। जी नारा शांह.....

असी गुनाहागार बाबा तैनूं हां पुकार दे, (२)
सारी संगत खड़ी है विच मझधार दे (२)
'अजायब' कृपाल बिना ठोकरां खावागें। जी नारा शांह.....

देखी बहुत निराली महिमा

(संत अजायब सिंह जी)

देखी बहुत निराली महिमा सतसंग दी। । टेक । (२)

सतसंग में है मोती हीरे, मिलते हैं पर धीरे–धीरे। (२)
जिसने खोज निकाली, महिमा.....

सतसंग ही सब संकट टारे, डुबते को सतसंग ही तारे। (२)
सदा रहे खुशहाली, महिमा.....

सतसंग उत्तम तीर्थ भाई, करते हैं जो नेक कमाई। (२)
कर्महीन रहे खाली, महिमा.....

सतसंग में सब मिलकर आवो, जीवन अपना सफल बनावो। (२)
अन्त पिटे नहीं ताली, महिमा.....

दिखादे दिखादे दिखादे दाता जी

(संत अजायब सिंह जी)

दिखादे दिखादे दिखादे दाता जी,
तूं दर्श दी झलक दिखादे दाता जी। ।टेक।

चिर दियाँ दिल विच लगियाँ ताघां, सीने च वजदियाँ बिरहों दिया सांगा। (२)
बुझादे बुझादे बुझादे दाताजी, तूं जिन्दड़ी दी तपश बुझा दे दाता जी।।
दिखादे दिखादे .....

प्रेम तेरे विच पगली होई, याद तेरी विच जिन्दड़ी खोई। (२)
मिलादे मिलादे मिलादे दाताजी, सच्चा सतगुरु आन मिलादे दाता जी।।
दिखादे दिखादे .....

असी बिछुड़े हाँ भरमा च आके, आप तूं बैठा सचखंड जाके। (२)
हटादे हटादे हटादे दाताजी, साडे मन उत्तों पड़दा हटादे दाता जी।।
दिखादे दिखादे .....

दर्श दिखाओ कृपाल जी आके, 'अजायब' नूं ठारो अमृत प्याके। (२)
पिलादे पिलादे पिलादे दाताजी, सानूं अमृत नाम पिलादे दाताजी।।
दिखादे दिखादे .....

दुःख भंजन तेरा नाम जी

(गुरु अर्जुनदेव जी)

दुःख भंजन तेरा नाम जी। । टेक ।
आठ पहर आराधिऐ, पूरन सतगुरु ज्ञान। (२) दुःख.....
जित घटि बसै पार ब्रहम, सोई सुहावा थाँव जी। (२) दुःख.....
जम कंकर नेड़ ना आवई, रसना हर गुण गाओ। (२) दुःख.....
सेवा सुरति ना जाणीआ, ना जापै आराध जी। (२) दुःख.....
ओट तेरी जग जीवना, मेरे ठाकुर अगम अगाधि। (२) दुःख.....
भए कृपाल गुसाईआ, नठे सोग संताप जी। (२) दुःख.....
तती वाउ ना लगई, सतगुरु राखै आप जी। (२) दुःख.....
गुरु नारायण दायु गुरु, गुरु सचा सिरजणहार जी। (२) दुःख.....
गुरु तुठै सब किछ पाइआ, जन नानक सद बलिहार जी। (२) दुःख.....

दुखाँ वाली घड़ी

(संत अजायब सिंह जी)

दुखाँ वाली घड़ी बंदे रखनी तैं याद है,
थोड़ी मुनियाद है जी थोड़ी मुनियाद है। (२)

दुनियां दे धन्धयाँ च होया गलतान तूं,
रखना सी याद भुल गया भगवान तूं। (२)
नाम तों बगैर जिन्द होणी बर्बाद है, थोड़ी मुनियाद है जी।
थोड़ी मुनियाद है।।
दुखाँ वाली.....

मात पिता बहन भाई पास आवे कोई ना,
गुरु तों बगैर विच दरगाह दे ढोई ना। (२)
पल–पल छिन–छिन होना ऐ हिसाब है, थोड़ी मुनियाद है जी।
थोड़ी मुनियाद।।
दुखाँ वाली.....

माता दे गर्भ विच पुट्ठा हो के वसया,
चेता ना भुलावी तेरी कीती ओत्थे रखया। (२)
गुरु पैज रखदा ऐ आद तों जुगाद है, थोड़ी मुनियाद है जी।
थोड़ी मुनियाद है।।
दुखाँ वाली.....

ऐब साडे माफ करीं सतगुरु प्यारेया,
बक्शो गुनाह साडे सावन दातारेया। (२)
सुनयो अजायब दी ऐह दिली फरियाद है, थोड़ी मुनियाद है जी।
थोड़ी मुनियाद है।।
दुखाँ वाली.....

दुनियां दे विच रूहां ते

(संत अजायब सिंह जी)

दुनियां दे विच रूहां ते, सदा नहीं ओं रहदियाँ।
लाहा खट के जान, भजन जो बैंदिया। (२)

छड के जहान सबने तुर जाना,
अपना ऐ घर हुन होया बेगाना। (२)
अपना वस जे होंदा, जुदाइयां कानूं पैंदिया। दुनियां.....

हुस्न जवानियां नूं हर कोई चाहवे,
मत्थे दियां लिखियां नूं कौन मिटावे। (२)
करमाँ दे अनुसार, ते दुःख–सुख सहनदिंया। दुनियां.....

जिन्हाँ ने गुरु उत्तों तन मन वारिया,
भाना मिट्ठा मन के ते शुकर गुजारेया। (२)
चौरासी दे गेड़ फेर ना पैंदिया। दुनियां.....

धन कृपाल रूहां आन के तैं तारियां,
गरीब 'अजैब' दियां कटियां बिमारियां। (२)
मन्जिल तय कर जान, जो रस्ते पैंदिया। दुनियां.....

धन–धन सतगुरु मेरा

(गुरु अर्जुनदेव जी)

धन–धन सतगुरु मेरा, जेहड़ा विछड़याँ नूं मेलदा । टेक ।

जैसा सतगुरु सुनीदा (२), तैसो ही मैं डीठ,
जेहडा विछड़याँ नूं मेलदा। धन–धन.....

विछड़याँ मेले प्रभु (२), हर दरगाह का बासीठ,
जेहडा विछड़याँ नूं मेलदा। धन–धन.....

हर नामों मंत्र दरडाऐ दा (२), कटे होमैं रोग,
जेहडा विछड़याँ नूं मेलदा। धन–धन.....

'नानक' सतगुरु तिना मिलाया (२), जिन धुरों प्या संजोग।
जेहडा विछड़याँ नूं मेलदा। धन–धन.....

धन कृपाल प्यारेया

(संत अजायब सिंह जी)

धन कृपाल प्यारया, बेड़े डुबदे पार लगावें। । टेक ।

होमें वाली अग भड़की, सारा जग ही मचदा जावे,
तैथों बिना होर कोई ना जेहड़ा सड़दिंया आन बचावे। (२)
होके वस प्रेम प्यार दे काल पिंजरे चों आण छुड़ावें। धन.....

सिफतां ना होण तेरिया, जाके विच परदेशां दे छाया,
पहाड़ां दियां चोटियां ते, नाम सावन दा चमकाया। (२)
नूर तेरा दिसे हर थां, सतनाम दा जाप करावे। धन.....

जात–पात छूत–छात दे, सब बन्धन तोड़े आके,
सच्चे कुल मालक नूं, मिलना है अन्दर जाके। (२)
रूहां विछड़यां जुगां–जुगां तो, इक पल विच आन मिलावे, धन.....

तेरे हथ डोर सब दी, अैवें साडे ते परदा पाया,
बन्दे दा तूं चोला धारके, साथों अपना आप लुकाया।(२)
जे हो जाऐ तेरी मौज मालिका, तोपां चलदीयां बन्द करावें। धन.....

औजड़ जांदियां नूं दया, करके ते रस्ते पावों,
मंगते हां तेरे दर दे, खैर नाम सच्चे दी पावों। (२)
हो गया 'अजायब' आपदा कृपाल, गुरु चरनी लावें। धन.....

धुन घट विच वज रही

(गुरु अंगददेव जी)

धुन घट विच वज रही जी,
प्यारेयो गुरु बिना जुगत ना पाईऐ। (२) । टेक ।

अखाँ बाजों देखना (२), बिन कन्नी सुनना जी। प्यारेयो.....

पैरां बाजों चलना (२), बिन हत्थी करना जी। प्यारेयो.....

जीभां बाजों बोलना (२), ऐयों जीवत मरना जी। प्यारेयो.....

'नानक' हुक्म पछाण के (२), ऐयों खसमें मिलना जी। प्यारेयो.....

नाम की महिमा अपरम्पार

(संत अजायब सिंह जी)

नाम की महिमा अपरम्पार, जांवा सतगुरु के बलिहार । टेक।

पलक झपकते कट जाते हैं, उसके कष्ट कलेश,
जिसके मन मन्दिर में रहते, सतगुरु जी हमेश। (२)
और नाम से बड़ा नहीं है, कोई भी आधार। नाम.....

नाम जपा कबीर नानक ने, जग में किया उजाला,
लेकर प्रभु का नाम पी गई, मीरां जहर प्याला। (२)
नित नियम से करो नाम से, जीवन का श्रृंगार। नाम.....

प्रभु से बेमुख रहा जो कोई, उसने जन्म गंवाया,
उसका जीवन सफल हो गया, जिसने नाम ध्याया। (२)
जो भी चढ़ा नाम की नईया, उतर गया भव पार। नाम.....

नाम की महिमा नाम ही जानें, जां जिस नाम ध्याया,
अजायब कृपाल के चरणी लग के, कोटि कोटि यश गाया। (२)
जो भी द्वारे आया गुरु के, उसका बेड़ा पार। नाम.....

नाम मिले नाम मिले

(गुरू अर्जुन देव जी)

नाम मिले नाम मिले ताँ जींवा सतिगुरु नाम मिले । टेक ।

तेरा कीता मैं जातो नाहीं। (२)
मैनूं जोगि कितोई, सतगुरु.....

मैं निरगुनियारे को गुण नाहीं। (२)
आपै तरस पयोई, सतगुरु.....

तरस पइया मिहरामति होई। (२)
सतिगुरु सजन मिलेया, सतगुरु.....

नानक नाम मिले ता जीवां। (२)
तन मन थीवै हरिया, सतगुरु.....

नाम गुरु दा जप लै

(संत अजायब सिंह जी)

नाम गुरु दा जप लै, कुछ खट के लै जा। (२)

आया हथ लाल किते, मिट्टी च ना रुल जाए।
जगत सराँ विच रस्ता ना भुल जाए। (२)
लभ तूं गुरु चौरासी गेड़ कट लै, कुछ खट के लै जा।।नाम गुरु....

ऐब सारे छडके ते, मन समझाँ लवीं,
प्रेम ते प्यार विच शरधा बना लवीं। (२)
दिल सिमरन दे विच रट लै, कुछ खट के लै जा।।

सच्चे रब तांई, बन्दे कर लै तू याद वे,
मिट्टी देया भान्डया की तेरी मुनियाद वे। (२)
पूंजी नाम सच्चे दी वट लै, कुछ खट के लै जा।।
नाम गुरु.....

हो के दयाल कृपाल फेरा पा जावे,
थुड़ ना कोई रहे जित्थे गुरु सच्चा आ जावे। (२)

'अजायब' दिन नीवां हो कट लै,कुछ खट के लै जा।। नाम गुरु.....

नाम गुरु दा सच्चा

(गुरु नानकदेव जी)

नाम गुरु दा सच्चा, होर कूड़ दा पसारा ।टेक।
कूड़ राजा कूड़ प्रजा (२), कूड़ सब संसार, होर.....
कूड़ मंडप कूड़ माड़ी (२), कूड़ बैहसन हार, होर.....
कूड़ सोएना कूड़ रूपा (२), कूड़ पहनन हार, होर.....
कूड़ काया, कूड़ कपड़ (२), कूड़ रूप अपार होर.....
कूड़ मीयां कूड़ बीबी (२), खप होए खार, होर.....
कूड़ कूड़े नेहो लागा (२), बिसरेया करतार, होर.....
किस नाल कीजै दोस्ती (२), सब जग चलन हार, होर.....
कूड़ मिठा कूड़ माखों (२), कूड़ डूबे पूर, होर.....
'नानक' वखानें बेंनती (२), तुध वाजों कूड़ो कूड़ होर.....

नाम जप बन्दया

(संत अजायब सिंह जी)

नाम जप बन्दया लाहा खट बन्दया। (२)
बन्दगी बिना होर सहारा ना, बिना बन्दगी कोई चारा ना।।

रंग ते तमाशे कुछ दिनाँ लई रहनगे,
कीते होए कर्मां दे दुःख सहने पैंनगे। (२)
अड़ी छड अड़िया रस्ते लग अड़िया।
किते मिल जाए डन्ड करारा ना, बिना बन्दगी कोई चारा ना।।
नाम जप.....

सच्चा गुरु लभ जिन्द जमाँ तो छुडौनी जे,
सदा नाम जप जिन्द रब लेखे लाउनी जे। (२)
हुण मौका ऐह कम्म सोखा ए।
होर पाए जे काल पुवाड़ा ना, बिना बन्दगी कोई चारा ना।।
नाम जप.....

घट घट विच बैह के करदा सम्भाल ओह,
रीझदा ना कदे गल्लाँ बहुतियाँ नाल ओह। (२)
हौमे कडनी पवें, दुनियां छडनी पवे।
झूठ लालच रहे विचारा ना, बिना बन्दगी कोई चारा ना।
नाम जप.....

सच्ची जे तड़प सच्चा मुरशिद आवे,
काल पावर दी कोई पेश ना जावे। (२)
'अजायब' दुःख सहिंदा, किवें सुख लैंदा।
जेकर मिलदा कृपाल प्यारा ना, बिना बन्दगी कोई चारा ना।।
नाम जप.....

नाम जप क्यों लाहुनां ऐ देरी

(संत अजायब सिंह जी)

नाम जप क्यों लाहुनाँ ऐ देरी। हथ आया समाँ ऐंवें तू गवाँई ना।टेक।

नाम तों बगैर दस पार किवें होवेंगा,बीत गया समां फेर करमा नूं रोवेंगा।(२)
मानस जामा मिली जिन्दगी उचेरी, हथ आया समाँ ऐंवें तू गवाँई ना।
नाम जप.....

तैनूं पुठों लटकाया दुःख दर्द भुलावीं ना,आया हथ लाल तेरे मिट्टी च रुलावीं ना।(२)
छडदे मान ना कर मेरी–मेरी, हथ आया समाँ ऐंवें तू गवाँई ना।
नाम जप.....

मान वडयाई सब कूड़ पसारा है,सुपने दी नियाई एह जगत नजारा है।(२)
नेड़े आ गई मौत हनेरी, हथ आया समाँ ऐंवें तू गवाँई ना।
नाम जप.....

चन्द रोज दी परौणी ऐह जिन्दगी निमानी ऐ,ऐहदी मुनियाद एक बुलबुला पानी ऐ।(२)
'अजैबो' होई कृपाल दी चेरी, हथ आया समाँ ऐंवें तू गवाँई ना।
नाम जप.....

नाम तुम्हारा हिरदै वासै

(गुरु अर्जुनदेव जी)

नाम तुम्हारा हिरदै बासै सन्तन का संग पावौ। टेक। २।

मागों राम ते इक दान, राम ते इक दान (२)
सगल मनोरथ पूरन होवे, सिमरो तुम्हारा नाम। (२) नाम.....

चरन तुम्हारे हिरदै वासै, सन्तन का संग पावौ (२)
सोग अगन महि मन न बियापै, आठ पहर गुण गावौ। (२) नाम.....

स्वस्थ बेवस्थ हर की सेवा, मध्यन्त प्रभ जापन। (२)
'नानक' रंग लगा परमेश्वर, बौहड़ जन्म ना छापन। नाम.....

नाम तो बगैर बन्दा

(संत अजायब सिंह जी)

नाम तों बगैर बन्दा नहीं किसे कमं दा
जिन्दगी ऐह तेरी ना भरोसा इक दम दा। । टेक ।

नाम तो बगैर बेकार जिन्दगानी ओए,
धारेया ना गुरु की कमं इनसानी ओए,
मिट्टी देया भांडेया ओए मान विच आवीं ना,
गिनती दे सांस लबे ऐवें ही गुवाँवी नां,
नाम बिना सखना ऐह थैला इक चम दा,
जिन्दगी ऐह तेरी ना भरोसा इक दम दा।नाम तो.....

कई वार पुठां तैनूं गर्भ च टंगेया,
नाम नूं भुलाके ओए तूं अजे भी ना सगेंया,
बेगुरेयां दी खल पुट्ठी काल लाहुंदा ऐ,
भोग लै चौरासी विच नरका दे पौंदा ऐ,
नाम जपने नूं दिल अजे भी नहीं मनदा,
जिन्दगी ऐह तेरी ना भरोसा इक दम दा।नाम तो.....

बुलबुला पानी दा नहीं दम दा वसाह ओए,
हीरा हथ आया जावे कौडियाँ दे भा ओए,
गुरु तो बगैर बेगुरां दुख पावेंगा,
नाम सच्चे बिना धक्के दरगाह च खावेंगा,
अजे भी हैं वेला बन्दे क्यों नहीं मनदा,
जिन्दगी ऐह तेरी ना भरोसा इकदम दा।नाम तो.....

सतसंग गुरु सच्चा नाम प्यारा है,
दरगाह दे विच अन्त ऐसे दा सहारा है,
गुरु दे बचन उत्ते जो सिख चलदा,
सचखंड वाला दरवाजा ओहो मलदा,
बिना कृपाल ना 'अजायब' किसे कमं दा,
जिन्दगी ऐह तेरी ना भरोसा इक दम दा।नाम तो.....

नाच रे मन नाच रे

(संत मस्ताना जी)

नाच रे मन नाच रे, तू सतगुरु आगे नाच रे।
धन सतगुरु का बोलिए, तेरा कटे जन्म का पाप रे।। टेक।(२)

राम भजन बिन मुक्ति कोई ना, राम बसाले काया में(२)
कनक कामिनी स्यों नेहों ना छूटे, क्यों फंस गया त्रिगुण माया में(२)
बिन सतगुरु तेरा कोई ना साथी, ना बेटा ना बाप रे। धन सतगुरु...

लोभ मोह बाजार मान्डया वाजे कठन कठारीहो(२)
कामदेव की बजे पखावज, नाचे ममता नारी हो(२)
पांच ठगों से प्यार तोड़ के, कर सतगुरु का जाप रे। धन सतगुरु...

गोरखनाथ मच्छंदर हारे जब, माया ने आंख दिखाई हो(२)
गोरखनाथ का घोड़ा बना, ऊपर चढ़ ऐड़ लगाई हो(२)
फिर न्यों बोली वाह वाह मेरा टरडा घोड़ा, नाचे आपो आप रे।धन सतगुरु...

ब्रह्मा, विष्णु, शिवजी हारे जब, माया ने रूप दिखाया हो (२)
भस्मासुर का रूप धार, शिवजी को पकड़ हिलाया हो (२)
नेजाधारी का फिर नेजा टुट गया, जब लगी कामदेव की थाप रे। धन सतगुरु...

शृंगी ऋषी दुर्वासा मुनि भी, कर करके तप हार गए (२)
बड़े–बड़े बली आए इस दुनियां में काल शिकारी ने मार लिये (२)
वेद व्यास कहे पारा ऋषि को, तुझे ननाकहुं के बाप रे।धन सतगुरु...

साठ हजार वर्ष तप किया नारद ने, एक घड़ी में खोया था (२)
कामदेव की लगी चोट जब मूंड़ पकड़ कर रोया था (२)
बन्दर का फिर मुंह करवा लिया, विष्णु को दिया सराप रे। धन सतगुरु...

घोर कलु में सच्चा सतगुरु, सच्ची ताकत आई ओ (२)
परम सन्तं का जिन्दा राम तैने, माया पकड़ नचाई हो (२)
कहे 'मस्ताना' जी कर सच्चा सौदा, फिर नहीं सांच को आंच रे। धन सतगुरु...

नहीं लभना मानस जनम बहार

(संत अजायब सिंह जी)

नहीं लभना, मानस जन्म बहार, मुड़के नहीं लभना। टेक।

वैदा करके भुल गया चेता, मुश्किल हो गया देना लेखा। (२)
बिसर गया इकरार, मुड़के नहीं.....

गुरु चरना विच प्रीत लगा लै, जनम मरन दी रीत मुकालै। (२)
रहिदां क्यों फरार, मुड़के नहीं.....

अखीयां खोल के वेख नजारा, अन्दर बेंठा मालिक प्यारा। (२)
उठके होश संभाल, मुड़के नहीं.....

बितिया वेला हथ ना आवें, 'अजैब' नूं कृपाल समझावें। (२)
चड़ बेड़े हो जा पार, मुड़के नहीं.....

पाऐं लगों मोहे करौ बेनती

(गुरु अर्जुनदेव जी)

पाऐ लगों मोहे करौ बेनती, कोऊ सन्त मिले वड भागी।।टेक। २।

प्रभ मिलवै को प्रीत मन लागी (२) पाऐ लगो.....

मन अरपों धन राखों आगे (२)
मन की मत मोहे सगल त्यागी। पाऐ लगो.....

जो प्रभ की हर कथा सुनावे (२)
अन दिन फिरौ तिस पीछै बैरागी। पाऐ लगो.....

पूर्व कर्म अंकुर जब परगटे (२)
भेटेओ पुरख रसक बैरागी। पाऐ लगो.....

मिटओ अन्धेर मिलत हर 'नानक' (२)
जन्म–जन्म की सोई जागी। पाऐ लगो.....

पक जा ओ सिक्खा

(संत अजायब सिंह जी)

पक जा ओ सिक्खा सच्चे गुरु दे प्यार विच। (२)

दिल च सफाई रखीं, श्रद्धा बनाई रखीं। (२)
मुक जाए चौरासी, सच्चे गुरु दे दीदार विच।। पक जा.....

आया लाहा लैण, लाहा खट लै तू बन्दया ओए। (२)
मुक्ति है सिक्खा, सच्चे नाम दे व्यापार विच।। पक जा.....

दुनियां दे झगड़े तूं दिल च वसाईं ना। (२)
सच्चा सुच्चा होके मिल जावीं सच्चे यार विच।। पक जा.....

अठों पहर सिमरन, करी जावीं दिल विच। (२)
जोड़ लवीं सुरत नूं अमृत धार विच।। पक जा.....

दे दवो दर्श कृपाल जी, 'अजायब' ताईं। (२)
जोड़ दयो मन साडा, अन्दरली तार विच।। पक जा.....

पाखंड में कुछ नाहीं साधो

(संत कबीरदास जी)

पाखंड में कुछ नाहीं साधो, पांखड़ में कुछ नाहीं रे। टेक । २।

पाखंडिया नर भोगे चौरासी, खोज करो मन माही रे (२) पाखंड.....

चुंज पंख बिन उड़ मेरे हंसला, उड़ता दीसे नाहीं रे (२)
लाख कोस की खबर मंगा दे, तो भी मांनू नाही रे। पाखंड.....

गुफा खुदा कर मांहे वड़ बैठे, बैठो दीसे नाही रे (२)
देही पलट कर जग भरमावें, तो भी मांनू नाही रे। पाखंड.....

चीखा चिना कर मांहे वड़ बैठे, जलतो दीसे नाहीरे (२)
देही पलट कर सिंघ बन आवें, तो भी मानू नांही रे।
पाखंड.....

जटा बंधा के महंत बन बैठे, अखियां खोले नाही रे (२)
आध में जाके तकिया लगावे, तो भी मांनू नाही रे। पाखंड.....

कागां सेती प्रीत लगाके हंस बनेगा नाही रे (२)
कहे 'कबीर' शब्द संग मिलके हंसा तू हो जाई रे। पाखंड.....

पानी देया बुलबुलया

(संत अजायब सिंह जी)

पानी देया बुलबुलया ओए दस की मुनियाद है तेरी। । टेक ।

बैठ नहीं रहना सदा ऐथे, कोई रोज दा है मेला,
उमर विहाई जांवदी ओए, तेरा नाम जपने दा वेला। (२)
ऐवें मना फुलया फिरे, कच्ची कंध तूं रेत दी ढेरी। पानी.....

वड्डे–वड्डे हो गुजरे ओए, इस जगत सरां विच रहके,
ऐवें ना गवां लई जिन्दगी ओए, लाहा खट गुरु शरणी पैके। (२)
मुरशिद बाज बन्दिया ओए, बादशाहियां मिट्टी दी ढेरी। पानी.....

नदी कंडे रुखड़ा ओए, ढाह इक दिन है लग जानी,
सिर उत्ते काल कूकदा ओए, समा आऐ तो आवाज वज जानी। (२)
भागां नाल मिली मानस देही, ओए नाम जप क्यों लौना ऐ देरी।पानी.....

एक दिन छडना ओए, ऐह सोहना देश रंगीला,
लेखा होना सजना ओए बाज, गुरु दे कोई ना वसीला।(२)
कूच दा नगारा वजया ओए, नेड़े आ गई मौत हनेरी, पानी.....

सारा संसार दुखिया ओए, कोई सुखिया नजर ना आया,
नाम दारु रोगां दा, गुरु नानक जी फरमाया। (२)
कृपाल कन्त सोहनया वे हुण, बन गई 'अजायब' तेरी। पानी.....

पीर दा विछोड़ा

(संत अजायब सिंह जी)

पीर दा विछोड़ा दुख, जिंद मेरी सहंदी ना,
सतगुरु नूं देख–देख, भुख मेरी लहंदी ना। । टेक।(२)

जिस तन लागे सोई तन पाई, कौन होर जाने पीर पराई। (२)
बन गया जिंद मेरी, ते जिंदड़ी हुण रहदीं ना,सतगुरु नूं.....

खुशियां दी खेती उजड़ी, गमियां सिर पै गईयां,
दिल दियां मेरीयां सघरां, दिल विच ही रह गईयां। (२)
खुशियां दे ढहे मुनारे, सुख दा साहं लैंदी ना,सतगुरु नूं.....

वड्ड–वड्ड के खादां अन्दरो दुखड़ा प्रीत दा, घड़ी दा विछोड़ा चार जुगां जेहा बीतदा।(२)
सांई है सिर ते जिहदा, मुश्किल ओनू पैंदी ना, सतगुरु नूं.....

सुखां विच सारी दुनियां नेड़े हो बैहंदी ऐ,भीड़पई तों कोई सार ना लैंदी ऐ।(२)
सतगुरु दे बाजों सजना पूरी कदे पैंदी ना,सतगुरु नूं.....

धन कृपाल धन तेरी कमाई ऐ, दुखियें 'अजायब' दी तैं दर्द मिटाई ऐ।(२)
धक्के मैं दर–दर खादीं जे, शरण तेरी पैंदी ना,सतगुरु नूं.....

फिर याद सावन दी

(संत अजायब सिंह जी)

फिर याद सावन दी आई नी, फिर याद सावन दी आई नी। टेक।

इस प्यार दी कल्लर धरती उत्ते, हझुँआं झड़ीयाँ लाईयानी।(२)
सावन भादों घिर–घिर आये, ऐ पर धरत तिहाई नी। फिर.....

घुटां वटी मैं पी जावां, चुप दे जहर पियाले नूं। (२)
पर ऐह विहोवी जीवन दानण, सुलगण नूं अग्ग लाई नी। फिर.....

दिल दी हनेर कोठड़ी अन्दर, इक दीवा पया भरिया नी। (२)
उस हथ दी पछाण ना आई, जिसने तीली लाई नी। फिर.....
जिस राह उतों सोहना लंघिया, मैं खड़ी उडीकाँ ओथे नी। (२)
जेठ हाड़ सिर उतों लंघे, फेरी ना उस पाईनी। फिर.....

'अजायब' ते अन्ना बुत घड़या है, जिस रचना अपनी देखी ना।(२)
तक–तक जिस दे रोम–रोम नूं, रो पई कुल लुकाई नी। फिर.....

बिसर गई सब

(गुरुवाणी)

बिसर गई सब तात पराई, जब ते साध संगत मोहे पाई।।टेक। (२)

ना कौ वैरी नाहे बैगाना (२) सगल संग हमको बन आई।

जो प्रभ कीनो सो भल मानयो (२) ऐ समत साधू ते पाई।

सब में रव रेहा प्रभ ऐको (२) पेख–पेख 'नानक' बिग साई।

बक्शो बक्शन हार पिया जी

(संत अजायब सिंह जी)

बक्शो बक्शन हार पिया जी, बक्शो दीनदयाल पिया। । टेक। (२)

असी पापी हां जीव नकारे, तुसी बक्शिंद हो दीन दयारे। (२)
फिरदे हां असी दर दर मारे मारे, तरस करो कृपाल पियाजी,
बक्शो दीन.....

हंगता होंमे दा रोग मिटावो, काल दे जाल चों आन छुड़ाओ। (२)
मुर्ख नूं दे मत समझाओ, रूहां नूं संभाल पिया जी,
बक्शो दीन.....

तेरा–तेरा मैं सदा ही पुकारां, बेनती करां ते अर्ज गुजारां। (२)
दिल तों पिया जी कदीं ना विसारां, समर्थ प्रभु प्रतिपाल, पिया जी,
बक्शो दीन.....

दुनियां दे सब छड दे सहारे, आके अजायब तेरे डिगया द्वारे। (२)
माफ करो जी अवगुण सारे, अर्ज सुनो कृपाल, पिया जी
बक्शो दीन.....

बदियां तो बच सजना

(संत अजायब सिंह जी)

बदियां तो बच सजना, बदियां तों बच सजना,
जे तूं लभना ऐ प्रीतम प्यारा, बदियां तो बच सजना।। टेक। (२)

नाम तों बगैर सजना, तेरे नाल कोई ना जावे,
पूरे सतगुरु तों बिना, विच दरगाह दे कौन छुड़ावे। (२)
बनके वकील झगड़े, ओहो बनके वकील झगड़े,
रूहां अपनीयां आप छुड़ावे, बदियां तों बच सजना,
नरकां तो बचना जे (२), सतगुरु दा, नाम जप लै,
तेरा बेड़ा हो जाए पार, नाम जप लै,
तैनूं हो जाए सतगुरु दा दीदार, नाम जप लै।
बदियां तो.....

पिछलेया करमां दे, बहना, भाई ते मां पियो सारे,
कट्ठे हो गऐ रल मिल के, रिश्तेदार ते भाई चारे। (२)
सन्तां दे दर डिग पै, तूं संता दे दर डिग पै,
नहीं तां माया ने जाल बिछाया, बदियां तों बच सजना,
मिलना जे मालिक नूं, मिलना जे मालिक नूं,
काम क्रोध लोभ मोह छुड़ाके, काम क्रोध लोभ मोह छुड़ाके,
होंमे हंगता मारी वे, मिलना जे, मिलना जे मालिक नूं,
बदियां तो.....

रचना रचाई दातेया, तेरा अंत किसे ना पाया,
गौण तैनूं देवी देवते, तेरा यश वेदां ने गाया। (२)
आया कृपाल चलके, जी, आया कृपाल चलके
नाम दे के 'अजायब' समझाया,
बदियां तो.....

बन्दा बनके आया

(संत अजायब सिंह जी)

बन्दा बनके आया, रब बन्दा बनके आया।
आके जग जगाया, रब बन्दा बनके आया।। टेक।।

जन्म–जन्म दी रूहाँ सी अटकी, लख–लख कोहां रही सी भटकी। (२)
आपे मेल कराया। रब बन्दा...

लख–लख पापी आये द्वारे, एक नजर से ओने तारे। (२)
बेड़ा पार लगाया, रब बन्दा...

दया मेहर जिन्हां ने पाई, आन मिले ना देर लगाई। (२)
भेद ओना ने पाया। रब बन्दा...

सतसंग में ऐह होका लाया, बन्दे तूं क्यों जग में आया। (२)
प्रेम दा राह बताया। रब बन्दा...

सिमरन भजन दी राह बताई, कर्म दिये सारे छुडवाई (२)
नाम दा जाप कराया। रब बन्दा...

'अजायब' कहे करो नाम कमाई, कृपाल होऐ आपे प्रभु आई। (२)
सच्चा सुख वरताया। रब बन्दा...

बैठा घट–घट विच दातार वे

(संत अजायब सिंह जी)

बैठा घट–घट विच दातार वे, कर मालिक नाल प्यारे वे। । टेक ।

सारी खलकत विच ओदा नूर है, रहिंदा नेड़े ना ओह दूर है। (२)
कर श्रद्धा हो जा पार वे, कर मालिक.....

ना विच मसीतां दे लबदा, करी जाइऐ नित भावें सजदा। (२)
अंदर वड़ के झाती मार वे, कर मालिक.....

ना जंगला विच जा टोल वे, दाता वसदा तेरे कोल वे। (२)
रूह दी जोड़ लै शब्द नाल तार वे, कर मालिक.....

'अजायब' लभ जाए कृपाल जे, दया कर देवे मालो माल वे। (२)
गुरु सच्चे नूं पल ना विसार वे, कर मालिक.....

बन्दा नाम जपने

(संत अजायब सिंह जी)

बन्दा नाम जपने नूं आया, माया ने जंजाल पा लिया। । टेक। (२)

धीयां पुत्र कुटुम्ब प्यारा, नाम बिना कोई देवे ना सहारा। (२)
विच विष्यां दे काल ने फसाया। माया ने जंजाल.....

सन्ता दी सतसंगत करलै, पल्ला पूरे गुरु दा फड़लै। (२)
भाग उच्चे जामां मानस थियाया। माया ने जंजाल.....

मात गर्भ विच पुठा होके लटके, गुरु तो बगैर बन्दा दर–दर भटके।(२)
वेला बितिया कदीं ना हथ आया। माया ने जंजाल.....

आखिर सतगुरु ने कम ओना, बाज गुरु दे है पछतौना। (२)
छड बंदगी तैं रब नूं भूलाया। माया ने जंजाल.....

कूड़ पसारा बन्दे सच लिया जाण ओए,
चन्द रोज मेला आखिर छडना जहान ओए। (२)
'अजायब' डुबदा कृपाल ने बचाया। माया ने जंजाल.....

भावें लख लख तीरथ न्हालै

(गुरुवाणी)

भावें लख लख तीरथ, न्हालै, तेरी मुक्ति ना होनी सतसंग तों बिना।टेक।

नावन चले तीरथी (२), मन खोटे तन चोर।
तेरी मुक्ति ना होनी सतसंग तों बिना भावें लख लख.....

एक भौं लंथी नातिया (२), दो भौं चड़ीयस होर।
तेरी मुक्ति ना होनी सतसंग तों बिना। भावें लख लख.....

बाहरों धोती तूमड़ी (२), अन्दर विषना निकोर।
तेरी मुक्ति ना होनी सतसंग तों बिना। भावें लख लख.....

साध भले अन्नातिया (२), चोर से चोरा चोर।
तेरी मुक्ति ना होनी सतसंग तों बिना। भावें लख लख.....

भुलीं ना गुरां दे उपकार सजना

(संत अजायब सिंह जी)

भुलीं नां गुरा दे उपकार सजना, ओए तेरी रखया करें,
आखदे मनां ओए, तेरे दिल नूं, कदीं ता नाम जपया करें।।टेक। (२)

झूठेयां विकारां विच दिल नूं फँसाई ना, याद सच्चे रब दी तू दिल तों भुलाई ना।(२)
कर लै मना ओए साफ दिल नूं, प्रभु जी आके वसया करे।आखदे मना.....

नाम दे सहारे विच पेट दे सी पलया, लिव लगी नाम दी जरा वी ना तू गलया। (२)
दरगाह दे विच सच्चा नाम सजना, ओए तेरी रखया करें।आखदे मना.....

जगत् समुंदर है दिसदा अथाह ओए, गुरु बेड़ी बिना कोई लभना ना राह ओए। (२)
कर सतसंगत सच्चाई, दिन रात तैनूं दसया करें। आखदे मना.....

गुरु किरपाल जी 'अजैब' नूं बचा लवो, सेवक तू मत देके चरणां च ला लवो। (२)
गुरु दा बचन कट फांसियाँ, दिलां दे विच वसया करे।आखदे मना.....

मैं बलिहारे जावां

(संत अजायब सिंह जी)

मैं बलिहारे जांवा, कृपाल जिन्हां दियां मन्ने। । टेक । (२)

दिल दे शीशे साफ जिन्हां दे (२)
सतगुरु लावें बन्ने। मैं बलिहारे जावां.....

जिन्हां ने गुरु उतो तन मन वारिया (२)
गुरु कटदा चौरासी गेड़ लमें। मैं बलिहारे जावां.....

तू बक्शीदं असी जाण ना सकिये (२)
बक्शो अखियां जीव हां अन्ने। मैं बलिहारे जावां.....

तेरा ही नाम तू शब्द भंडारी (२)
खड़े धरती असमान बन्ने। मैं बलिहारे जावां.....

अजायब दी अर्ज हमेशा (२)
कृपाल गुरु जी लाएयो बन्ने। मैं बलिहारे जावां.....

मैं तो कृपाल से बिछड़

(संत अजायब सिंह जी)

मैं तो कृपाल से बिछड़ के रोई रे । टेक । (२)

पिया से बिछड़ के इस जग आई, दर दर भटकी ठोकर खाई। (२)
बात ना पूछे कोई रे, मैं तो.....

बिन पिया के मैं तड़प रही हूँ, दर्शन को मैं तरस रही हूँ। (२)
वैरन दुनियां होई रे, मैं तो.....

आऊँ जाऊँ मैं दुःख पाऊँ, बिछड़ पिया से मैं पछताऊँ। (२)
काल देश में खोई रे, मैं तो.....

संग बसे मेरे, मैं क्या जानूं, मैं पगली पीर ना पहचानूं। (२)
कृपाल से बात ना होई रे, मैं तो.....

कोई ना जाने देश पराया, तोर दित्ता मुड़ लैण ना आया। (२)
ना जीवाँ ना मोई रे, मैं तो.....

भुल गयों तू वे बेर्ददा, बिछड़ां तैथों दिल नहीं करदा। (२)
कृपाल बगैर कित्थे ढोई रे, मैं तो.....

राह भुल गई मैं किस राह आवां, आके लै चल तरले पावाँ। (२)
मुश्किल डाडी होई रे, मैं तो.....

कृपा करो कृपाल सुनो रे, दाते दीन दयाल सुनो रे। (२)
मैं दुःखियारी रोई रे, मैं तो.....

मैं पापन नूं गल नाल ला लै, अपने बेड़े विच बैठा लै। (२)
'अजायब' कृपाल दी होई रे, मैं तो.....

मन जदों हठीला होवे

(संत अजायब सिंह जी)

मन जदों हठीला होवे, तां बदियां वलों मोड़ लयो,
जे अजे बाज ना आवे, तां गुरु चरना विच जोड़ दयो । टेक ।

आया बंदे तरन दा वेला, लगया ऐ तूं करन कुवेला। (२)
दिन राती करके बंदगी नूं, दुनियां दे बंधन तोड़ लयो।
जे अजे.....

नाम गुरु दा हरदम रट लै, जूनां विचों हुण तूं बच लै। (२)
जे लेखे विच लौनी जिन्दगी, नाम दी पूंजी जोड़ लयो।
जे अजे.....

लगया अंदर तेरे ताला, खोल के हो जा मालो माला। (२)
सतगुरु कोलों लै के कुंजी, बज्जर दा ताला खोल लयो।जे अजे.....

दर्श पिया कृपाल दा पा लै, 'अजायब' जिंद लेखे ला लै।(२)
जे मालिक नूं मिलना हैं तां, सुरत शब्द नाल जोड़ लयो।जे अजे....

मना रे तेरी आदत ने

(कबीरदास जी)

मना रे तेरी आदत ने कोई बदलेगा हरी जन सूर। । टेक ।

चोर जुआरी क्या बदलेंगे, माया के मजदूर,
भंग धतूरा चिलम छतूरा, रहे नशे में भरपूर। मना.....

पांच विषों में लटपट रहता, सदा मतंगें चूर,
इनको सुख सुपने में भी नाहिं, रहे मालिक से दूर। मना.....

सुरत सिमृत वेद की रीती, सतसंग करो जरूर,
जन्म–जन्म के पाप कटेगें, हो जायेंगे माफ कसूर। मना.....

भगती प्रेम गुरु रामानंद लाई, कबीर करी भरपूर,
कहत 'कबीर' सुनो भई सन्तो, बाजे अनहद धूर। मना.....

मैंनू कृपाल मिलन दा चाह वे

(संत अजायब सिंह जी)

मैंनूं कृपाल मिलन दा चाह वे, कर देयो पूरीयाँ आसाँ। । टेक। (२)

तेरीयां उडीकाँ विच रोवां कुरलावाँ मैं, मिल मेरे पीया दिल दी तपश बुझावाँ मैं(२)
मेरा दुःख विछोड़े दा ठाह वे, कर देयो पूरीयाँ आसाँ।मैंनू कृपाल.....

याद तेरी आवे जदों दिल नूं सतांवदी, सोहनया दर्श बिना चैन नहीं आवंदी। (२)
तू हैं शाहां दा शाह वे, कर देयो पूरीयाँ आसाँ। मैंनूं कृपाल.....

वासी सचखंड दा तूं आया विच जग दे, करदा संभाल बैठ विच रग–रग दे। (२)
बेटा सावन देया दर्श दिखा वे, कर देयो पूरीयाँ आसाँ।मैंनूं कृपाल.....

तेरे जेहा जग उत्ते दिसे ना कोई होर वे, पावां तेरे तरले, ना मेरा कोई जोर वे। (२)
मैंनूं नूरी दर्श दिखा वे, कर देयो पूरीयाँ आसाँ। मैंनूं कृपाल.....

शाह कृपाल तेरा यश जग गौंदा ऐ, दास 'अजायब' तेरा नाम ध्यौंदा ऐ। (२)
कृपाल पिया ठण्ड कलेजे पा वे, कर देयो पूरीयाँ आसाँ।मैंनू कृपाल.....

मैंनूं तेरे बिना किसे दी ना

(संत अजायब सिंह जी)

मैनूं तेरे बिना किसे दी ना लोड़ दातेया। (२)

दुनियां झेड़े झगड़े मुल लैंदी, पूरी फेर वी ना पैंदी।(२)
भावें मिल जाए लख ते करोड़ दातया।। मैनूं.....

जित्थें भेजें दाता जावां, तेरा दित्ता सदा ही खावाँ। (२)
मै हाँ पुतली तेरे हथ डोर दातया।। मैनूं.....

कोने कोने ते मैं फिरया, नूर तेरा हर थाँ मिलया। (२)
मैनूं तेरे बिना दिसदा ना होर दातया।। मैनूं.....

जित्थे जावाँ तैनूं गावाँ, तेरा सन्देश पुचावाँ। (२)
तेरा लाया ताला चाबी तू मरोड़ दातया।। मैनूं.....

सोहना शाह कृपाल होया, 'अजायब' दे दयाल। (२)
प्यार मेरा हो जाए चन्द ते चकोर दातया।। मैनूं.....

मैं क्यों कर तोड़ां जी

(गुरुवाणी)

मैं क्यों कर तोड़ां जी गुरुजी, लगी प्रेम वाली डोरी। टेक ।

गलीयां चिकड़ दूर कर (२)
मेरा नाल प्यारे नेहों। गुरुजी.....

जे चलां तां भीजे कांबली (२)
जे रहां तां टुटे नेहों। गुरुजी.....

भीजो सीजो कांबली (२)
अल्ला बरसे मेहों। गुरुजी.....

जाऐ मिला तिना साजना (२)
मेरा टुटे नाहीं नेहों। गुरुजी.....

महरम होऐ सो जाने

(संत कबीरदास जी)

महरम होऐ सो जाने, साधो ऐसा देश हमारा। टेक । २।

वेद कतेब पार नहीं पावत (२), कहन सुनन से न्यारा साधो.....
जात वर्ण कुल क्रिया नाही (२), संध्या नेम उचारा, साधो.....
बिन जल बूंद परत यहां भारी (२), नहीं मीठा नहीं खारा, साधो.....
सुन्न महल में नौबत वाजे (२), किंगरी बीन सितारा। साधो.....
बिन बादल यहां बिजली चमके (२), बिन सूरज उजियारा, साधो.....
बिना सीप यहां मोती उपजे (२), बिन सुर शब्द उचारा। साधो.....
जो लजाये ब्रह्म यहां दरसे (२), आगे अगम अपारा, साधो.....
कहे 'कबीर' वहां रहन हमारी (२), बुझे गुरुमुख्तयारा। साधो.....

मित्र प्यारेनू साडा हाल मुरीदां दा कहना

(गुरु अर्जुनदेव जी)

मित्र प्यारेनु साडा हाल मुरीदां दा कहना, मित्र प्यारेनू।। टेक।(२)

तुध बिन रोग रजाईयाँ दे ओढ़ण (२)
नाग निवासा दे रहना। मित्र प्यारे.....

सूल सुराही खंजर प्याला (२)
विंग कसाईयां दे सहना। मित्र प्यारे.....

यारड़े दा सानू सथर चंगा (२)
भठ खेड़यां दा रहना। मित्र प्यारे.....

मेरा कागज गुनाह वाला पाड़ दे

(संत अजायब सिंह जी)

मेरा कागज गुनाह वाला पाड़ दे, होर कुछ मंगदा नहीं। । टेक। (२)

तूं समरथ तूं अन्तरयामी, मैं गुनाहगार हां नमकहरामी। (२)
बनके पारस लोहे नूं तार दे, होर कुछ मंगदा नहीं। मेरा कागज.....

तेरी महिमा जाण ना सकिये, नूर इलाही पछान ना सकिये। (२)
तीर दया दा कलेजे विच मार दे, होर कुछ मंगदा नहीं। मेरा कागज.....

छडना इक दिन देश पराया, झूठी काया, झूठी माया। (२)
बाहों फड़ पीया कर पार दे, होर कुछ मंगदा नहीं। मेरा कागज.....

असी पापी हां औगुण हारे, बक्शों दाता जीव बिचारे। (२)
होंमे हंगता दे दुःखड़े निवार दे, होर कुछ मंगदा नहीं।मेरा कागज.....

दया करो साथों पाप छुड़ाओ, सिमरन भजन दा जाप कराओ। (२)
कृपाल जी दुखिऐ 'अजायब' नूं तार दे,होर कुछ मंगदा नहीं। मेरा कागज.....

मेरा सतगुरु प्रीतम प्यारा

(मस्ताना जी)

मेरा सतगुरु प्रीतम प्यारा, मैं भुल गई नाम तुम्हारा। । टेक ।

मैं हूँ आत्मा तेरी सतगुरु, तूं मेरा पिता प्यारा, (२)
कैसे तुमसे बिछड़ गई मुझे बीत गया जुग सारा, शहंशाह बीत गया जुग सारा।
मेरा सतगुरु.....

भजन करन को आई थी मैं, करके कौल करारा, (२)
जन्म मरण में कैसे फंस गई मेटो भरम हमारा, शहंशाह मेटो भरम हमारा।
मेरा सतगुरु.....

तीन लोक का पिंजरा घड़ दिया, काल ने जाल पसारा, (२)
पाप पुन्न की डाल हथकड़ी मुझे जेली करके डारा, शहंशाह जेली करके डारा।
मेरा सतगुरु...

ठाकुर मन्दिर पूजत पूजत जुग, बीत गया कई हजारा, (२)
कोई खोजी हो तो जिन्दा राम से मिलादे बैठा घट में राम हमारा, शहंशाह घट में राम हमारा।
मेरा सतगुरु.....

लाख चौरासी के बन्धन में, बांधया जीव हमारा (२)
कर्म धर्म सब कर कर हारी मैं नाह लईं तीर्थ सारा, शहंशाह नाह लई तीर्थ सारा।
मेरा सतगुरु.....

सत्त लोक ऊपर देश अलख आगे, अनामी अगम अपारा, (२)
कहे 'मस्ताना' जी ले लो दवाई अब आ गया है वैद्य हमारा, शहंशाह आ गया वैद हमारा।
मेरा सतगुरु.....

मेरे दाता जी सुनो बेनती

(संत अजायब सिंह जी)

मेरे दाता जी सुनो बेनती, करो मंजूर सुनके बेनती। । टेक।
अरज गुजारां सुन लो पुकारां, सुन लो पुकारां, कदी ना विसारा। (२)
लावो पार किनारे, दाता लावो पार किनारे। मेरे दाता.....

आत्मा निमाणी, सुनदी ना बाणी, सुनदी ना बाणी, होई ऐ निथानी। (२)
हो गई ऐ तेरे सहारे, दाता हो गई ऐ तेरे सहारे। मेरे दाता.....

काल पावर ने, जाल बिछाऐ, जाल बिछाऐ, दिल घबराऐ। (२)
तेरे बिना दुःख कौन टारे, दाता तेरे बिना दुःख कौन टारे।मेरे दाता.....

होए के दयाल हाल सुनो कृपाल जी, नाम दे खजाने देवो करो मालोमाल जी।(२)
दास 'अजायब' पुकारे, दाता दास 'अजायब' पुकारे। मेरे दाता.....

मेरा सतगुरु सोहनां आ गया

(संत अजायब सिंह जी)

मेरा सतगुरु, मेरा सतगुरु सोहनां आ गया। (२)
मैनूं सिधे रस्ते पा गया। मेरा सतगुरु, मेरा सतगुरु.....

अज भागाँ भरेया, दिन आया असी याद गुरु दी गा रहे,
उस कुल मालिक निरंकार दा अज जन्म दिहाड़ा मना रहे। (२)
मेरा सतगुरु, मेरा सतगुरु.....

ओ दुनियां दे कोने कोने ते, सच्चे नाम दा होका ला गया,
ओ बेटा बनके 'सावन' दा अमृत दा मींह वरसा गया। (२)
मेरा सतगुरु, मेरा सतगुरु.....

पिता हुकम सिंह दा लाडला, ओहदा नाम सन्त कृपाल है,
माता गुलाब देवी दा जाया ऐ, पर दुनियां ते इक मिसाल है। (२)
मेरा सतगुरु, मेरा सतगुरु.....

लखां होण बधाइयाँ संगत जी, मेरे गुरु दा भंडारा आ गया,
मैं 'अजायब' सी भुल गया, फड़ सिधे रस्ते पा गया। (२)
मेरा सतगुरु, मेरा सतगुरु.....

मेरे सतगुरु दीन दयाल

(संत अजायब सिंह जी)

मेरे सतगुरु दीन दयाल दया कर, मुझको आन सम्भालो जी । टेक। (२)

मैं पापी घोर दुराचारी, कदमों में मुझे बैठा लो, जी (२)
दुनियां के पाप सदा घेरे, सतगुरु जी मुझे बचा लो जी (२) मेरे सतगुरु...

पांचों दुश्मन सदा हैं पीछे, सतगुरु जी मुझे छुड़ालो जी (२)
मन का वेग चले रथ सा, सतगुरु जी आन रुका लो जी (२) मेरे सतगुरु...

भव सागर में फंसा हुआ, सतगुरु जी पार लगा लो जी (२)
चरणों में तुम्हारे नेह रहे, दुनियां से मुझे निकालो जी (२) मेरे सतगुरु...

मैं भूला भटका राही हूँ, मुझे करके दया बुला लो जी (२)
कहे अजायब भजन कर बन्दे, अपने पर दया करा लो जी(२)मेरे सतगुरु...

मेरे सतगुरु प्यारे जी

(संत अजायब सिंह जी)

मेरे सतगुरु प्यारे जी, वे जग से न्यारे जी (२) । टेक । वे जग से...

ना वे चन्दा ना वे सूरज (२), ना सागर ना तारे जी। वे जग से...
चंदा एक कलंकी पापी (२), सतगुरु पापी तारे जी। वे जग से...
सूरज एक आग का गोला (२), सतगुरु शीतल प्यारे जी।वे जग से...
सागर रहता एक ठौर पर (२), सतगुरु सदा है सारे जी।वे जग से...
तारे दूर गगन में चमके (२), सतगुरु बीच हमारे जी। वे जग से...
उनके समान नहीं कोई जग में (२), सतगुरु एक हमारे जी।वे जग से...
उनकी शोभा ना वरणी जावें (२), सतगुरु पर हम वारे जी।वे जग से...
रहने की है इच्छा मेरी (२), सतगुरु चरण तुम्हारे जी। वे जग से...
कहे 'अजायब' भजन तुम कर लो (२), सतगुरु संग तुम्हारे जी।वे जग से...

मेरे विच ना गुरु जी गुण कोई

(संत अजायब सिंह जी)

मेरे विच ना गुरु जी गुण कोई, औगुणां दा मैं भरिया।। टेक। (२)

सब अवगुण मैं गुण नहीं कोई, क्यों कर कंत मिलावा होई। (२)
ना मैं रूप न बांके नैणा, ना कुल ढंग ना मीठे वैणा। औगुणां दा मैं भरिया।मेरे विच ना...

असी पापी हां औगुण हारे, आके डिग पये तेरे द्वारे (२)
तेरे बिना किते मिलदी ना ढोई। औगुणां दा मैं भरिया। मेरे विच ना...

यतीम समझं के चरणी लायो, गेड़ चौरासी दा फिर ना पायों। (२)
पिछे साडे नाल होई जो होई। औगुणां दा मैं भरिया। मेरे विच ना...

तेरे बिना सब छडते सहारे, दिल साडे विच वस जा प्यारे (२)
हथ बन्न करदा अरजोई। औगुणां दा मैं भरिया। मेरे विच ना...

मैं पापी मैं औगुण हारा, गरीब 'अजायब' दास तुम्हारा। (२)
कृपाल गुरु बिना आसरा ना कोई। औगुणां दा मैं भरिया। मेरे विच ना...

मिलो कृपाल प्यारेया

(संत अजायब सिंह जी)

मिलो कृपाल प्यारेया, तैनूं दिल दा हाल सुनावां। । टेक। (२)

दुखां विच पै गई जिंदड़ी, तैथों बिना शांत ना होवें। (२)
बिरहों दे तीर वजदे, तेरी याद आए तां दिल रोवे। (२)
तैथों बिना मेरा कोई ना, जिहनूं दिल दां भेद बतावां। मिलो.....

याद तेरी आवे सोहनया, जदों शरण तेरी विच बैहंदे।
तन मन होवे उजला, जद बोल मिठड़े सुन लैंदे। (२)
दसां केहनू दिल फोल के तेरे अग्गे, वासते पावां। मिलो.....

दया कुल मालिक दी, बन रूहाँ दा व्यापारी आया।
मौज होई सावन दी, सच्चे नाम दा भंडारी लाया। (२)
हरदम चाह दिल नूं, तेरे चरनां दी धुड़ी विच न्हावां। मिलो.....

बेड़ा भवसागर चों, सतगुरु जी बन्ने लावो।
अरजां 'अजैब' करदा, जीवां नूं पार लघांओ। (२)
होर कुछ मंगदा नहीं, नूरी दर्शन तेरा चाहवाँ। मिलो.....

मिलया सावन दा बेटा

(संत अजायब सिंह जी)

मिलया सावन दा बेटा कृपाल जी, भाग जागे साडे वीरनो।। टेक। (२)

मानस जन्म दुर्लभ थियाया, वडभागी गुरु दर्शन पाया। (२)
आया बनके सोहना मिसाल जी, भाग जागे साडे वीरनो।। मिलया.....

सतसंग करके भरम हटाऐ, औझड़ जांदे मार्ग पाऐ। (२)
सोहना जीवां ते होया दयाल जी, भाग जागे साडे वीरनो।।मिलया.....

विच परदेसाँ दे नाम जपाया, सावन शाह दा नारा लाया। (२)
हिरदे मोंम कित्ते पत्थर ढाल जी, भाग जागे साडे वीरनो।।मिलया.....

महिमा तेरी अजब नियारी, आया बनके पर उपकारी। (२)
सोहना सावन दा चनं लाल जी, भाग जागे साडे वीरनो।। मिलया.....

दर तेरे जो चल के आवे, मुहों मंगयां मुरादां पावे। (२)
'अजायब' ते खुश होया कृपाल जी, भाग जागे साडे वीरनो।।मिलया.....

मेरे सतगुरु पकड़ी बांह

(संत कबीरदास जी)

मेरे सतगुरु पकड़ी बांह, नहीं तो मैं बह जाता। टेक ।

कर्म काट कोयला किया, ब्रह्म अग्नि परिवार (२)
लोभ मोह भ्रम जारिया, सतगुरु बड़े दयार। नहीं.....

कागा से हंसा किया, जाति वरन कुल खोए (२)
दया दृष्टि से सहज, सब चातक डारे धोए। नहीं.....

अज्ञानी भटकत फिरै, जाति वर्ण अभिमान (२)
सतगुरु शबद सुनाया, भनक पड़े मेरे कान। नहीं.....

माया ममता तजि दई, विष्या नाहीं समाये (२)
कहे कबीर सुनो भई साधो, हद तज बेहद जाए। नहीं.....

मुझे अपना बना लो

(संत अजायब सिंह जी)

मुझे अपना बना लो कृपाल दयाल तुझे सब कहते,
सब कहते, सब कहते, कृपाल, दयाल तुझे सब कहते। । टेक।

ना देखो मेरे अवगुण सतगुरु, अवगुण मुझमें बहुत भरे,
काटो मेरे संकट सतगुरु, संकट मैंने बहुत सहे। (२)
सतगुरु करो ख्याल, दयाल तुझे सब कहते। मुझे अपना.....

मन पापी का जोर बड़ा है, पाप कराये सद्‌गुण हरे,
काम क्रोध मद लोभ मोह में, लिपटा दिन और रात रहे। (२)
दया करो रखवाल, दयाल तुझे सब कहते। मुझे अपना.....

बड़े–बड़े ऋषि मुनी हुये जो, वे भी मन की धार बहे।
मुझ इक छोटे जीव की सतगुरु, तुम बिन बहियां कौन गहे।(२)
मेरे सतगुरु दीन दयाल, दयाल तुझे सब कहते। मुझे अपना.....

अपने सेवक की आपै राखे, नीचों ही फिर ऊंच करे।
'अजायब' तेरी शरण में सतगुरु, शरणागत की पैज रहे। (२)
सावन के कृपाल, दयाल तुझे सब कहते। मुझे अपना.....

मन मन्दिर में आओ कृपाल जी

(संत अजायब सिंह जी)

मन मंदिर में आओ कृपाल जी, मन मन्दिर में आओ। । टेक।(२)
मुझको गले लगाओ कृपाल जी, मन मन्दिर में आओ।

सब पर दया करी प्रभु तुमने, समदर्शी है नाम तुम्हारा, (२)
गणका, गीध, अजामिल जो भी, चरण शरण में आया तारा,(२)
तुम पारस मैं लौहा सतगुरु (२) सोना मुझे बनाओ।
मुझको गले लगाओ.....

तुमको कुछ भी कठिन नहीं है, तुम त्रिलोकी के स्वामी (२)
रख दो सिर पर हाथ दया का, घट–घट वासी अर्न्तयामी (२)
जनम–जनम के इस चक्कर से (२) अब तो मुक्त कराओ।
मुझको गले लगाओ.....

भगती भाव के भूखे सतगुरु, सबको गले लगाया तुमने (२)
जिसने तुझे पुकारा सतगुरु, संकट मुक्त कराया तुमने (२)
युगों–युगों से भटक रहा हूँ (२) अब तो राह दिखाओ।
मुझको गले लगाओ.....

मैं हूँ पापी कोट जन्म का, भूला जीव तुम्हारा (२)
अब ना भेजो और द्वारे, मैं दुखियां हाँ भारा (२)
भूली आत्मा भटक रही है (२) 'अजायब' को घर पहुंचाओ।
मुझको गले लगाओ.....

याद गुरु कृपाल दी

(संत अजायब सिंह जी)

याद गुरु कृपाल दी दिन राती आवे,
सुन लवें फरियाद जी, आ दर्श दिखावे। (२)

तेरे दर्श दियाँ तांघाँ लगियाँ, सीने च बिरहों दियाँ सांगाँ वजियाँ।(२)
दुखियाँ दी सुन के आवाज जी, आ दर्श दिखावे। याद गुरु.....

राह तेरा तकदी मैं पागल होई, तेरे बिना किते मिलदी ना ढोई। (२)
जिन्दगी दी न मुनियाद जी, आ दर्श दिखावे। याद गुरु.....

जन्म मरण दा दुखड़ा ठावो, मैं पगली नूं चरणी लावों। (२)
सेवक दी रखो लाज जी, आ दर्श दिखावे। याद गुरु.....

मेरे साइयाँ लावीं ना देरी, मैं परदेसन हो गईयाँ तेरी। (२)
औगुण हारी नूं रखयो याद जी, आ दर्श दिखावे। याद गुरु.....

दुःख विछोड़े दा पल च हटा जा, वेहड़े मेरे विच फेरा पा जा। (२)
'अजायब' दी एहो आवाज जी, आ दर्श दिखावे। याद गुरु.....

रंग रुप दा माण ना करिए

(संत अजायब सिंह जी)

रंग रूप दा माण ना करिए, वे सिर उत्ते मौत खड़ी सजना।(२)

मान वडियाई थोड़े दिनां लई रहनगे, बुरज जवानी वाले पलाँ विच ढहनगे(२)
ओहदी कुदरत कोलों डरिए, वे सिर उत्ते मौत खड़ी सजना।।
रंग रुप दा.....

आया नाम जपने नूं माया जाल पा लिया, सच्चेकुल मालिक नूं दिल तोंभुला लिया।(२)
नाम जपके जहानों तरिये, वे सिर उत्ते मौत खड़ी सजना।।
रंग रुप दा.....

खलड़ी च साह दसों केहड़ी मुनियाद वे, दिलों ना भुलाई रखीं मालिक नूं याद व। (२)
हथ बनके बेंनती करिये, वे सिर उत्ते मौत खड़ी सजना।।
रंग रुप दा.....

मिलो कृपाल सोहना दर्श दिखा दियो, मिल के 'अजायब' दी प्यास नूं बुझा दियो। (२)
सतगुरु दा सिमरन करिऐ, वे सिर उत्ते मौत खड़ी सजना।।
रंग रुप दा.....

रब लभदा ऐ

(संत अजायब सिंह जी)

रब लभदा ऐ बाहर भजदा ऐ,
है मालिक तेरे कोल वे, बाहर ना भुल के टोल वे। (२)

हरदम नाम जपांगा तेरा, वैदा तू करके आया,
सुत्ता नींद तू गफलत वाली, मालिक दिलों भुलाया। (२)
नाम जप अड़िया वे, लाहा खट अड़िया, कुछ पूंजी बन्न लै कोल वे।
बाहर ना भुल के टोल वे।।
रब.....

मेंहन्दी विच जिवें रंग समाया, तेरे विच प्रभु तेरा,
जिवें फुलाँ विच वासना रहिन्दी, अंदर प्रीतम तेरा। (२)
बाहर जावीं ना पछतावीं ना, गुरु लब लै अन्दर फोल वे।
बाहर ना भुल के टोल वे।।
रब.....

काया विच बैठा ला के ताला, सन्तां नूं कुंजी है फड़ाई,
रंग रलियाँ माणदेयाँ पड़दे ना खुलदे, करनी पवे कमाई। (२)
मन मारना पवे, सिर वारना पवे, ताँ पहुँचे सतगुरु कोल वे।
बाहर ना भुल के टोल वे।।
रब.....

प्यार प्रभु दा अंदरों मिलदा, बाहर झूठी मिथ्या,
जिस नूं मिलया अंदरों मिलया, सब सन्तां ने लिखया। (२)
हे दयाल प्रभु कृपाल प्रभु, 'अजायब' आखे बोल वे।
मैनूं रख लै अपने कोल वे। बाहर ना भुल के टोल वे।।
रब.....

रे मन स्याना होजा

(मस्ताना जी)

रे मन स्याना होजा, घेर लिया रे तैने टोटा (२)
सचा सौदा करले रे तेरा कर्जा हो गया मोटा । टेक ।

गर्भवास में करार किया, सतगुरु ने फंद छुड़ाया,
बाल अवस्था खेलकूद में, जवानी में मद छाया। (२)
जवानी बीत बुढापा आ गया, सिर धर लिया पाप बरोटा। रे मन..

...

कौड़ी कौड़ी करके माया जोड़ी, जोड़या था माल बथेरा,
ना कभी आया संत शरण में, तैंने किया था मेरा मेरा। (२)
चिड़िया जैसा रहन बसेरा, अन्त खाक में लेटया। रे मन.....

कभी–कभी रे मन साधू बन जाये, लम्बा शंख बजाता,
झोली खप्पर डाल खाक में, घर–घर अलख जगाता (२)
फिर मांग–मांग कर खाता रे, बिना भजन पराया रोटा। रे मन..

...

फिर जा मन्दिर में टल बजावै, लम्बा तिलक लगाके,
आप घड़े उसे आपै ही पूजै, पत्थर का राम बनाके। (२)
धन पूजा का खा–खा मूर्ख बन गया सन्डा झोटा। रे मन.....

रूह मालिक तों होई दूर

(संत अजायब सिंह जी)

रूह मालिक तों होई दूर ऐनू समझौणा नी,
हुण मिलया मानस जामा कंत नूं पौणां नी। । टेक । (२)

मैनूं मुड़ मुड़ यादां पीया मिलन दीयां आईयां नी,
मेरे दिल नूं दुःखड़ा होए जे पैण जुदाईयां नी। (२)
मेरी रूहदा चोला, नाम दे विच रंगौणा नी। हुण मिलया.....

तूं करके वयदा नाम जपन दा आई नी,
तूं विच दुनियां दे आके याद भुलाई नी। (२)
किते भुल ना जावीं, रूहे कंत मनौणां नी। हुण मिलया.....

तूं कुल मालिक तों दूर विछुड़ी चिर दीं ऐं,
हुण सचे सतगुरु बाजों दर दर फिरदी ऐं। (२)
तूं भुल्लां लै बक्शा, जे कन्त रिझौणा नी। हुण मिलया.....

जे मिल जाए कृपाल दयाल प्यारा नी,
मैनूं डुबदी नूं आ देवे आन सहारा नी। (२)
'अजायब' दी रूह दा सचा विछुड़िया, कंत मिलौणा नी।हुण मिलया.....

रूहां सडियाँ नूं पार लंघा

(संत अजायब सिंह जी)

रूहां साडियाँ नूं पार लंघा, गुरु कृपाल धन वे।
रोवाँ तेरे अग्गे तरले मैं पा, मेरियां दयाल मन वे।। टेक। (२)

तेरीयाँ ऐ आत्मा तूं सुन अरजोई वे, सुन अरजोई वे। (२)
देवीं काल दे जाल तो छुड़ा, गुरु कृपाल धन वे।।
रूहाँ साडियां नूं.....

तेरे उत्ते सोहणया वे मेरा कोई जोर ना, मेरा कोई जोर ना। (२)
भुली आत्मा नूं आ समझा, गुरु कृपाल धन वे।।
रूहाँ साडियां नूं.....

अख साडी बन्द सानु हो गया अन्धेर है, हो गया अन्धेर है। (२)
दया कर देवो पड़दा हटा, गुरु कृपाल धन वे।।
रूहाँ साडियां नूं.....

मैं ताँ तेरे बिना होर किसे नूं नहीं जाण दी, किसे नूं नही
जाण दी। (२)
जग तेरे बिना सूना हो गया, गुरु कृपाल धन वे।।
रूहाँ साडियां नूं.....

भुल जान दुःख सारे वेहड़े मेरे आ जावीं, आके फेरा पा जावीं।(२)
रूह 'अजायब' दी नूं ना तड़फा, गुरु कृपाल धन वे।।
रूहाँ साडियाँ नूं.....

लग जाए ध्यान कृपाल दा

(संत अजायब सिंह जी)

लग जाए ध्यान कृपाल दा, जी जीवन तेरा सुधर जाए। । टेक ।

फिरदा भौंदा मथुरा काशी, अन्दर तेरे है अविनाशी। (२)
ध्यान कट गया मोह जाल दा, जी जीवन तेरा सुधर जाये।लग जाये.....

विषयां तो मन दूर हटा लै, गुरु स्वरूप दा ध्यान लगाले। (२)
दर्शन हो जाए कृपाल दा, जी जीवन तेरा सुधर जाये।लग जाये.....

पांच शबद दा सिमरन रट लै, पांच ठगों की मार से बच ले। (२)
गुरु अमृत प्यालदा, जी जीवन तेरा सुधर जाये। लग जाये.....

झूठे हैं दुनियां दे धंधे, नाम है सचा, जप लै बन्दे। (२)
'अजायब' हो गया कृपाल दा, जी जीवन तेरा सुधर जाये।लग जाये.....

लखां शक्लां तकियां अंखिया ने

(संत अजायब सिंह जी)

लखां शक्लां तकियां अंखिया ने, कोई नज़र मेरी विच खुबदी ना। । टेक ।

जो करदा ऐ, झोली भरदा ऐ, जो शरमांदा है, खाली जांदा है। (२) लखां...

तेरी झात बड़ी मतवाली ऐ, ओह जीवन बक्शन वाली ऐ, (२)
हे सावन दीनदयाल मेरे, तेरा नाम लेयां बेड़ी डुबदी ना। लखां...

तेरा दर्श जिनां ने करया है, ओह दोहां जहांना तो तरया है, (२)
सानूं बक्शो बक्शनहार प्रभु, साडी गल ऐथे कोई भुगदी ना। लखां...

असीं अवगुण हारे हां बक्श लवो, आए दर तेरे ते दर्श दवो, (२)
सानूं नूरी झलक दिखा दाता, सुत्ती रूह जागी कई जुग दी ना। लखां...

रूह दर दर फिर के थक गई ऐ, जमण मरण दे गेड़ विच अक गई ऐ, (२)
सचा सावन दर्श दिखा देवे, रूह 'अजायब' दी जिलण विच खुबदी ना।लखां...

लिख सतगुरु वल पाईयाँ

(संत अजायब सिंह जी)

लिख सतगुरु वल पाईयाँ चिट्ठियाँ, दर्द दियां। । टेक । (२)
लिख सतगुरु वल पाईया।

लैके चिट्ठिऐ सुनेहड़ा जांवी, साडा दुखीयां दा हाल सुनावी।(२)
दसीं दुखीयां दा हाल, आके रूहाँ नूं संभाल,
तेरे बिना रूहाँ मुरझाईयाँ। चिट्ठियां दर्द दियां।
लिख सतगुरु.....

अग्ग भड़की जगत विच सारे, तेरे बिना कोई ना ठारे। (२)
डुबी जाऐ जग सारा, देवे कोई ना सहारा,
घटा पाप दियाँ आ छाईयाँ। चिट्ठियाँ दर्द दियां।
लिख सतगुरु.....

सतसंग तों जीव हटावे, काल विषयां विच भरमावे। (२)
साडा सुन लै सन्देश, सुना तेरे बिना देश।
छेती आ संगत देया साईयां। चिट्ठियां दर्द दियां।
लिख सतगुरु.....

सच छुपिया कूड़ पसारा, तेरे बाज ना कोई सहारा। (२)
तूं है चोला बदलाया, भेद अपना छुपाया,
रूहां कड लै जो काल फसाईयां। चिट्ठियां दर्द दियां।
लिख सतगुरु.....

बन सावन दा चनं आया, आके दुखियां दा दर्द वडांया। (२)
तेरा नाम कृपाल तूं 'अजायब' ते दयाल,
तेरे नाल प्रीतां लाईयां। चिट्ठियां दर्द दियां।
लिख सतगुरु.....

लिखन वालिया तूं

(संत अजायब सिंह जी)

लिखन वालिया तूं, होके दयाल लिख दे।
मेरे हिरदे विच गुराँ दा, प्यार लिख दे। । टेक ।

हथ विच लिख दे, सेवा गुरु जी दी। (२)
मेरा तन मन गुरू उत्ते वार लिखदे। मेरे.....

जीभा ते लिख दे, नाम गुरु जी दा। (२)
मेरे कनां विच धुन दी आवाज लिख दे। मेरे.....

मत्थे ते लिख दे, जोत गुरु जी दी। (२)
मेरी अखां विच गुरू दा दीदार लिखदे। मेरे.....

इक ना लिखीं, मेरे सतगुरु जी दा विछोड़ा। (२)
भावें छुट जाए सारा संसार लिख दे। मेरे.....

लोच रिहा गुरु दर्शन दे तांई

(गुरु अर्जुनदेव जी)

लोच रिहा गुरु दर्शन दे तांई मेरा मन लोच रिहा। । टेक ।
मेरा मन लोचे गुरु दर्शन तांई (२) बिलप करे चात्रक की न्याई,मेरा मन...
त्रिखा ना उतरे शान्त ना आवै (२) बिन दर्शन संत प्यारे जीओ,मेरा मन...
हौं घोली जीयो घोल घुमाई (२) गुर दर्शन संत प्यारे जीओ,मेरा मन...
तेरा मुख सुहावा जीओ सहज धुन बानी (२) चिर होया देखे सारंग पानी,मेरा मन...
धन सो देश जहां तूं बसिया (२) मेरे सज्जन मीत मुरारु जीओ,मेरा मन...
हौं घोली जीयो घोल घुमाई (२) गुरु सज्जन मीत मुरारु जीओ,मेरा मन...
इक घड़ी ना मिलते तां कलयुग होता (२) हुण कद मिलिओ प्रिय तुध भगवन्ता मेरा मन...
मोहे रेण ना विहावै नींद ना आवै (२) बिन देखे गुरु दरबारे जीओ,मेरा मन...
हौं घोली जीओ हौं घोल धुमाई (२) तिस सच्चे गुरु दरबारे जीओ,मेरा मन...
भाग्य होया गुरु सन्त मिलाया (२) प्रभ अविनासी घर माहिं पाया,मेरा मन...
सेव करी पल चसा ना विछड़ा (२) जन 'नानक' दास तुम्हरे जीओ,मेरा मन...
हौं घोली जीयो घोल घुमाई (२) जन 'नानक' दास तुमारे जीओ,मेरा मन...

लिख चिट्ठियां, लिख चिट्ठियां

(संत अजायब सिंह जी)

लिख चिट्ठियां, लिख चिट्ठियां,
लिख चिट्ठियां सावन नूं पांवा, देर ना ला अड़या,
अनामी देश वसेंदेंया, वतनी आ अड़या। । टेक । (२)

अज सावन महीने आऐ वे, सखियाँ ने पींगे पाऐ वे। (२)
मैनूं तेरी याद सताऐं, तू घर आ अड़या, वे देर ना ला अड़या। लिख...

मैं रोज उडीकां रखीयां वे, बागां विच अम्बियां पकियां वे।(२)
अज मौसम रंग रंगीले, खुशी लया अड़या, वे देर ना ला अड़या।लिख...

जदों बदल रिमझिम लाऐ वे, ओदों गीत कोयल ने गाऐ वे। (२)
पिपली पींगा पाइयां, आण झुटा अड़या, वे देर ना ला अड़या। लिख...

अज अम्बर बरसे पाणी वे, मेरा दूर वंसेदा हाणी वे। (२)
अज फेरा बहारां आइयां, तू वी आ अड़या, वे देर ना ला अड़या।लिख...

मेरी झांजर छण–छण बोले वे, कोई भेद दिलां दे खोले वे। (२)
अजायब दी झांजर दा, छणकाटा सुनदा जा अड़या, वे देर ना ला अड़या,लिख...

वड्डे-वड्डे दुनियां दे राजे

(संत अजायब सिंह जी)

वड्डे–वड्डे दुनियां दे राजे, रोंदे जांदे नाम तो बिना।।टेक। (२)

राम रोये होई सीता पराई, रावन रोया लंका गवाई। (२)
बिना नाम तों काल दे खाजे, रोदें जान्दे नाम तो बिना। वड्डे–वड्डे...

संता नूं हासी करी, दान लिद होया, भिख्या खाके अजैसर रोया। (२)
नाम बिना चाहे तख्त बिराजे, रोदें जान्दे नाम तो बिना। वड्डे–वड्डे...

यादव मशकरी दुरवाशा नूं कर गये, रोंदे अनयाई मौत मर गये। (२)
बाज गुरु मर गये बे इलाजे, रोदें जान्दे नाम तो बिना। वड्डे–वड्डे...

रहिंदा अंग संग कृष्ण मुरारी पांडव रोऐ जां बाजी हारी। (२)
चीर दरोपतां दे लत्थे बे हिसाबे, रोदें जान्दे नाम तो बिना।वड्डे–वड्डे...

नाम दा होका सावन ने लाया, काल दा जाल कृपाल मुकाया। (२)
'अजायब' गुरु बिनां काल ना भज्जे, रोदें जान्दे नाम तो बिना। वड्डे–वड्डे...

वाह मेरे सावन

(संत अजायब सिंह जी)

वाह मेरे सावन, वाह मेरे दाता, दुःखियाँ दा सहारा तूं।
घट घट दे विच वसदा होया, फिर है सब तों न्यारा तूं।।
वाह मेरे सावन.....

भिखारी ते राज करावे राजा ते भिखारी हो।
खल मुर्ख ते पंडित करबो, पंडित ते मुकधारी हो। (२)
करके झोली भिखिया लेन्दा (२) बनदा किते दातारा तूं।
घट घट दे विच वसदा होया, फिर हैं सब तों न्यारा तूं।
वाह मेरे सावन.....

जल ते थल कर थल ते कूवाँ, कूप ते मेहर करावे हो,
धरती ते आकाश चढ़ावे, चढ़े आकाश गिरावे हो। (२)
जिसदा जग ते कोई ना राखा (२) आपे बने सहारा तूं।
घट घट दे विच वसदा होया, फिर हैं सब तों न्यारा तूं।
वाह मेरे सावन.....

तेरे बाजों कोई ना खाली, हर इक विच समाणां हो,
घट घट दे विच ज्योत है तेरी, क्या राजा क्या राणां हो।
(२)
लीला तेरी अजब न्यारी (२) हर थां करे इशारा तूं।
घट घट दे विच वसदा होया, फिर हैं सब तों न्यारा तूं।
वाह मेरे सावन.....

कोडे राक्षस वरगे तारे, तारेया वली कंधारी हो,
पापण गणकां तारी दाता, तेरी लीला न्यारी हो। (२)
कदे बैठदा हट खोलके (२) करे कदे जमींदारा तूं।
घट घट दे विच वसदा होया, फिर हैं सब तों न्यारा तूं।
वाह मेरे सावन.....

मांवां नूं है पुत्र प्यारे, तैनूं भगत प्यारे हो,
भगतां दे वस होके दाता, सारे काज संवारे हो। (२)
अजायब दी किस्मत जागी (२) मिलया सावन प्यारा तूं।
घट घट दे विच वसदा होया, फिर हैं सब तों न्यारा तूं।
वाह मेरे सावन.....

शबद नाल जोड़ दातेया

(संत अजायब सिंह जी)

शबद नाल जोड़ दातेया, साडे अन्दर जो शबद प्यारा। टेक।

विषयाँ दी मस्ती ने, नाम जपने तो आन हटाया,
हो गईयां बन्द अखीयां, तेरा दर्श कदी ना पाया। (२)
सानूं ओसे नाल जोड़ दातिया, साड्डे अन्दर जो हो रिहा नजारा।
शबद.....

आपे तू शबद बनया, आपे घट–घट दे विच बोलें,
आपे अन्दर बैठ सबदे, फड़ सच दा तराजू तोलें। (२)
मन साडा मोड़ दातिया, सानू मिल जाऐ शबद सहारा।
शबद.....

कदे महाराजा बनया, कदे वेस फकीरी धारें,
कदे बैठा चुप धारके, कदे फड़ दैंताँ नूं मारें। (२)
साडी आत्मा नूं जोड़ दातियां, साडे अन्दर जो शबद भंडारा।शबद.....

आपे चोला पाके बन्दे दा, आपे दुनियां तों रखदा ऐं ओला,
विछुड़ियाँ आत्मा नूं आपे, मेलदा ऐ बनके विचोला। (२)
आपे भेद खोल दातिया, साडे अन्दर जो शबद प्यारा।
शबद.....

आपे ताला लाया आप नूं, आपे कुंजीयां दा भेद बतावें,
बनया सावन कदे कदी, आ कृपाल सदावे। (२)
'अजैब' कोल आवीं दातेया, देवीं आ के आप सहारा।
शबद.....

शाह कृपाल प्यारेया

(संत अजायब सिंह जी)

शाह कृपाल प्यारेया, अटक जरा इक पल जावीं,
असी रोंदे खड़े नसीबां नूं, साडी सुण दरदाँ दी गल जावीं।
ओ सांई सुण दरदाँ दी गल जावीं। । टेक ।

सोहना घट–घट विच समाया है, ना भेद किसे ने पाया है,
तैनूं दिल अपने विच पा लया, सानूं देंदा अपना बल जांवी।
ओ सांई सुण दरदाँ दी गल जावी। शाह कृपाल.....

तैनूं देवी देवते चौंहदे ने, चन सूरज भी शरमौंदे ने,
शाह सावन देया प्यारेया, सानूं बिसर जरा ना पल जांवी।
ओ सांई सुण दरदाँ दी गल जावी। शाह कृपाल.....

सच्चे नाम दा शाह भंडारी है, तूं दाता असी भिखारी हैं,
दिल अरजां कर–कर हारेया, विछोड़े वाला सल ठांवी।
ओ सांई सुण दरदाँ दी गल जावी। शाह कृपाल.....

करे अर्ज ऐह जीव निमाणां ऐ, तेरा सचखंड विच ठिकाना ऐ,
नूरी दर्शन देजा प्यारेया, हुण देर जरा ना पल लांवी।
ओ सांई सुण दरदाँ दी गल जावी। शाह कृपाल.....

ऐह दुनियां घुमण घेरी ऐ, असी आस रखी इक तेरी ऐ,
'अजायब' देया सहारेया, अंखिया तो पल ना टल जावी।
ओ सांई सुण दरदाँ दी गल जावी। शाह कृपाल.....

शुभ दिहाड़ा भागां भरिया

(संत अजायब सिंह जी)

शुभ दिहाड़ा भागां भरिया, दर्शन होए कृपाल दे, सतगुरु संत दयाल दे। टेक।

सावन शाह दी मौज होई तां, दुनियां ते कृपाल आये,
मन के हुकम गुरु दा सोहना, बन के इक मिसाल आये। (२)
जग विच आके नाम जपा के, कट दित्ते फंद काल दे।
दर्शन होऐ कृपाल दे, शुभ दिहाड़ा.....

कीते पार समुन्दर सारे, सच्चा नाम जपाया ऐ,
सड़दी बलदी दुनियां उत्ते, नाम दा मींह बरसाया ऐ। (२)
धन–धन सतगुरु तेरा सहारा, नाम दा अमृत पियाल दे।
दर्शन होऐ कृपाल दे, शुभ दिहाड़ा.....

सतसंग लाके नाम जपा के, काल दे बन्धन तोड़ दिते,
जन्म जन्म दे विछड़े आके, नाल प्रभु दे जोड़ दिते। (२)
सिफतां कर–कर दिल नहीं रजदा, गुण गावां संत दयाल दे।
दर्शन होऐ कृपाल दे, शुभ दिहाड़ा.....

हुकम सिंह दे घर विच सोहना, नूर इलाही आया ऐ,
गुलाब देवी नूं देयो बधाईयाँ, जिसदी कुख दा जाया ऐ। (२)
गरीब 'अजायब' खुशी मनावे, दित्ता सहारा मेरे हाल ते।
दर्शन होऐ कृपाल दे, शुभ दिहाड़ा.....

सच्चा नाम जप सोहनी जिन्दगी बनाई

(संत अजायब सिंह जी)

सच्चा नाम जप सोहनी जिन्दगी बनाई,
ऐनूं कोड़ियां दे भा ना गंवाई वे, ऐह जन्म अमुला,
कई देर हुण, कई देर तो मिलया, ऐह जन्म अमुला।।टेक।(२)

वड्डे भागां नाल तैनूं जन्म धियाया ऐ,
घर ना ऐ तेरा जित्थे दिल तूं लगाया ऐ। (२)
रख लै संभाल ऐह, लभना ना सदा लई,
हथ आया समा ना गंवाईं वे। ऐह जन्म अमुला.....

नाम दा श्रृंगार तेरी आत्मा दा गहना ओए,
दुनियां रंगीली उत्ते बैठ नहीं रहना ओए। (२)
दरगाह दे विच सच्चे, गुरु दा सहारा,
जप नाम हुन जिन्दगी बनाई, वे। ऐह जन्म अमुला.....

नाम दे रंगन विच मन तू रंगाई, ओए,
गुरु दे प्यार विच दिल नूं टिकाई ओए। (२)
सिमरन भजन, प्यार सच्चा दिल कर,
सुरत शबद विच लाईं वे। ऐह जन्म अमुला.....

गुरु कृपाल सच्चा पर उपकारी ऐ,
दया कर जिन्दगी अजायब दी संवारी ऐ। (२)
रख लै तूं रख हुन, आ गया शरन चल
जिंद लेखे विच लाईं वे। ऐह जन्म अमुला.....

सचया गुरु मेहरबाना

(गुरु अर्जुनदेव जी)

सचया गुरु मेहरबाना, मेरा रंग दे मजीठी चोला । टेक ।

काया रंगण जे थिऐ प्यारे (२) पाईऐ नौ मजीठ। मेरा रंग.....

रंगण वाला जे रंगे साहेब (२) ऐसा रंग ना डीठ। मेरा रंग.....

चोले जिनके रतड़े प्यारे (२) कन्त तिना के पास। मेरा रंग.....

धूड़ तिनां की जे मिलै (२) कहो नानक की अरदास। मेरा रंग.....

सतगुरु प्रीतम प्यारा

(गुरुवाणी)

सतगुरु प्रीतम प्यारा, कोई आन के मिलावै । टेक। (२)

कोई आन मिलावै मेरा प्रीतम प्यारा (२)
हों तिसमें आप वेचाई। कोई.....

दर्शन हर देखन के तांई (२)
हर देखन के तांई कोई.....

कृपा करे तां सतगुरु मेले (२)
हर हर नाम ध्याई। कोई.....

जे सुख दे तां तुझे अराधी (२)
दुःख भी तुझे ध्याई। कोई.....

जे भुख दे तां इत ही राजा (२)
दुःख विच सुख मनाई। कोई.....

तन मन काट–काट सब अरपी (२)
विच अग्नी आप जलाई। कोई.....

पखा फेरी पानी ढोवां (२)
जो देवें सो खाई। कोई.....

'नानक' गरीब ढैह पया द्वारे (२)
हर मेल लेहो वडयाई। कोई.....

साहिबा जी तेरे दर्शन दी लोड़

(गुरुवाणी)

साहिबा जी तेरे दर्शन दी लोड़, सतगुरु मेरा (२) । टेक।

दर्शन देख जीवां गुरु तेरा (२), पूर्ण कर्म होए प्रभ मेरा। साहिबा.....

ऐह बेंनती सुन प्रभ मेरे (२), देह नाम कर अपने चेरे। साहिबा.....

अपनी शरन रख प्रभ दाते (२), गुरु प्रसाद किने बिरले जाते।साहिबा.....

सुनो बिनो प्रभ मेरे मीता (२), चरन कमल बसे मेरे चीता। साहिबा.....

'नानक' एक करे अरदास (२), विसरे नाहीं पूरन गुण तास।साहिबा.....

साडे मिरगा ने खेत उजाड़े

(संत अजायब सिंह जी)

साडे मिरगा ने खेत उजाड़े, जी हर के भजन बिना। । टेक ।

कुंबल–कुंबल खाई गऐ, डुंड कर गऐ न्यारे। (२)
जी हर के भजन बिना। साड़े.....

सिमरन बाजों खेती उजड़े, किथें ढेर लगने खलवाड़े। (२)
जी हर के भजन बिना। साड़े.....

सतगुरु बाजों कोई ना साथी, सब मतलब दे प्यारे। (२)
जी हर के भजन बिना। साड़े.....

सिमरन भजन है सतसंग तेरा, गुरु बिना सब झुठा पसारे। (२)
जी हर के भजन बिना। साड़े.....

झुठा पसारा जगत ऐह सारा, बिना गुरु कौन पार उतारे। (२)
जी हर के भजन बिना। साड़े.....

कहे 'अजायब' कृपाल सिमर लो, नहीं ता काल वंगारे। (२)
जी हर के भजन बिना। साड़े.....

सगल सृष्टि का

(गुरु अर्जुनदेव जी)

सगल सृष्टि को राजा दुखिया। हर का नाम जपत होऐ सुखिया। । टेक ।
लाख करोड़ी बन्ध न परै (२), हर का नाम जपत निसतरै, सगल.....
अनिक माया रंग तिख ना बुझावै (२), हरका नाम जपत आगावै,सगल.....
जह मार्ग ऐह जात अकेला (२), तै हर नाम संग होत सुहेला,सगल.....
ऐसा नाम मन सदा ध्याईयै (२), नानक गुरुमुख परमगत पाईयै,सगल.....
जह मार्ग के गने जाऐ ना कोसा (२), हर का नाम ऊहां संग तोसा,सगल....
जह पैंडे महा अन्ध गुबारा (२), हर का नाम संग उजियारा,सगल.....
जह पंथ तेरा को ना सिजानु (२), हर का नाम तह नाल पछानूं,सगल.....
जह महां भयान तपत बहो घाम (२), तहं हर के नाम की तुम ऊपर छाम, सगल....
जह त्रिखा मन तुझ अकरखै (२), तैंह नानक हर–हर अमृत बरखै,सगल.....

साडा ना कोई वे लोको

(संत अजायब सिंह जी)

साडा ना कोई वे लोको, असी ना जहान दे।
सावन कृपाल बाजों, किसे नूं नहीं जान दे।। टेक।(२)

सावन दा नाम सच्चा, जिन्दगी बनौदां ऐ,
जन्मा दी मैल लगी, पल विच लौंदा ऐ। (२)
दाता करियो इलाज साडा, होमें रोग ठान दे।
सावन कृपाल बाजों, किसे नूं नहीं जान दे।।
साडा ना कोई.....

सतगुरु कृपाल, दातार प्यारेया,
छड के जहान सारा, तैनूं ही पुकारया। (२)
साडे ला दियो ध्यान सिध, सचखण्ड जान दे।
सावन कृपाल बाजों, किसे नूं नहीं जान दे।।
साडा ना कोई.....

वड्डा काल दा पसारा, दया करके बचा लवो,
माया दे जंजाल विचो, आप ही छुड़ा लवो। (२)
आत्मा ते रहम तेरा, असी ना पछाण दे।
सावन कृपाल बाजों, किसे नूं नहीं जान दे।।
साडा ना कोई.....

तूँ है अलख अनामी, तेरा नूरी स्वरूप है,
देखाँ मैं जिधर दिसदा, तेरा ही रूप है। (२)
दया कृपाल सावन दी, 'अजायब' नूं पान दे।
सावन कृपाल बाजों, किसे नूं नहीं जान दे।।
साडा ना कोई.....

साइयां तूं पार लघांवी

(संत अजायब सिंह जी)

साइयां तू पार लघांवी, छडके ना जावीं,
छडके ना जाई वे दाता, छडके ना जावीं।। टेक।(२)

तूं बक्शींद दाता, मैं गुनहागार हां। (२)
नाम दा सहारा दे के करना तैं पार है । (२)साईयां.....

देखया जहान सारा, नहीं कोई अपना। (२)
भव सागर चों दाता, तू ही पार करना । (२)साईयां.....

दया करो दाता जी, परना हटा दयो। (२)
दर आऐ मंगते नूं, झोली खैर पा दयो । (२)साईयां.....

शाह कृपाल दाता, मंगता अजायब जी। (२)
माफ करो भुलां सब, बक्श दयो ऐब जी। (२)साईयां.....

सइयों नी कृपाल गुरु जी आया ऐ

(संत अजायब सिंह जी)

सईयों नी कृपाल गुरु जी आया ऐ, भाग जिन्हां दे चंगे नाम जपाया ऐ। टेक। (२)

अन्दर प्रेम जिन्हां दे सच्चा, सतसंग नूं चल औंदे, (२)
परमार्थ दे रस्ते चलके, जमण मरण मुकौंदे, नाम कमाया ऐ। भाग.....

सिमरन दे विच जुड़ गये जेड़े, लोक लाज सब त्यागी, (२)
मालिक दे घर जाना चांहुदे, ओह रूहां बडभागी, दर्शन पाया ऐ।भाग.....

सतगुरु बाजों कोई ना साथी, धर्मराज दे अग्गे, (२)
लेखा ना कोई पुछदा आके, सन्त शरण जो लगे, मुकत् कराया।भाग.....

कई जन्मा तो विछड़े दाता, औखे हो गये डाडे, (२)
जद मिलया कृपाल गुरु जी, भाग जाग पऐ साडे, मेल कराया ऐ।भाग.....

दर–दर धक्के खादें दाता, किसे ना दुःख वंडाया, (२)
शाह कृपाल नूं तरस आया, 'अजैब' नूं रस्ते पाया, नाम जपाया ऐ।भाग.....

सईयों नी इक नूर इलाही

(संत अजायब सिंह जी)

सइयों नी इक नूर इलाही आया ऐ,
नाम ओदा कृपाल संत कहाया ऐ। (२)

जनम मरण दोहु में नाही, जन पर उपकारी आये,
जीया दान दे भगती लायन, हर स्यों लैण मिलाये। (२)
बानी फरमाया ऐ। नाम ओदा कृपाल संत कहाया ऐ।
सइयों नी.....

करी कमाई संत मत दी, छडे औहदे सारे,
विच परदेशां जाके उसने, तपदे हिरदे ठारे। (२)
नाम जपाया ऐ, नाम ओदा कृपाल संत कहाया ऐ।
सइयों नी.....

जिस धरती ते जाके बैठे, औथे नाम जपाया,
देश देशान्तर फिरके ते, सतनाम दा चक्कर लाया। (२)
अमृत प्याया ऐ, नाम ओदा कृपाल संत कहाया ऐ।
सइयों नी.....

सब दा प्रेमी सब दा प्रीतम, सब दा रखणहार होया,
सब मुलकां सब कौमां मजबां दा, दर्दी ते दातार होया।(२)
नाम जपाके रस्ते पाया ऐ, नाम ओदा कृपाल संत कहाया ऐं।
सइयों नी.....

भागां भरिया पिता हुकम सिंह, जिस दे घर विच आये,
गुलाब देवी दे भाग जाग पये, जिसदी कुख तों जाये।(२)
यश वरताया ऐ, नाम ओदा कृपाल संत कहाया ऐ।
सइयों नी.....

सावन शाह तों नाम खजाने, लैके खूब लुटाये,
खुश होया 'अजायब' गरीब ते, नाम दे बुटे लाये। (२)
सतसंग चलाया ऐ, नाम ओदा कृपाल संत कहाया ऐ।
सइयों नी.....

सईयों नी सावन आया

(संत अजायब सिंह जी)

सईयों नी सावन आया, अमृत बरसाई जावै। । टेक ।

नाम दा भंडारी सच्चा, रूहाँ दा व्यापारी सच्चा।(२)
नाम दा खजानां सच्चा, आके वरताई जावै। सईयों नी.....

सावन दीयां रुतां आईयां, नाम दियां झड़ियां लाइयाँ। (२)
रूहां सचखंड पहुँचाइयाँ, ठण्ड वरताई जावै। सईयों नी.....

जिस थां ते पैर टिकाया, धरती नूं भाग्य लाया।(२)
सतसंग करके सच्चा नाम जपाई जावै। सईयों नी.....

सच्चा भगवान आया, बन्दे दा चोला पाया। (२)
नाम दी दात सच्ची, मुफ्त लुटाई जावै। सईयों नी.....

सावन शाह नाम रखा के, भंडारी कृपाल बनाके।(२)
'अजायब' नूं गरीब समझके, ख़जानां वरताई जावै। सईयों नी.....

सानूं भुलयाँ नूं रस्ते पाया

(संत अजायब सिंह जी)

सानूं भुलयाँ नूं रस्ते पाया, धन कृपाल गुरु जी। । टेक।

जप तप कीते धुणे तपाऐ, जल धारे करके तीर्थ नहाये।(२)
ओझड़ जादेंयां नूं रस्ते पाया, धन कृपाल गुरुजी। सानूं.....

कर्मकाण्ड सब कर–कर हारे, भेष बटाये न्यारे–न्यारे (२)
तैथों बिना किसे दुख ना वंडाया, धन कृपाल गुरुजी। सानूं.....

कोई ना जग विच रहया सहारा, कित्थों लब जाए प्रीतम प्यारा।(२)
आखर तरस पिया नूं आया, धन कृपाल गुरुजी। सानूं.....

अन्दर जांवा बाहर आवां, नूर इलाही देखना चाहवां। (२)
भाग ततड़ी दे घर नूं लाया, धन कृपाल गुरुजी। सानूं.....

विरहों दा दुखड़ा वड–वड खावे, 'अजायब' दी कोई पेश ना जावे।(२)
वैद्य बन कृपाल घर आया, धन कृपाल गुरुजी। सानूं.....

सांस-सांस सिमरो गोबिन्द

(गुरु अर्जुनदेव जी)

सांस–सांस सिमरो गोबिन्द,
मन अन्तर की उतरे चिन्त। टेक ।

पूरे गुरु का सुन उपदेस,
पार ब्रह्म निकट कर पेख। (२) सांस.....

आस अनित त्यागो तरंग,
सन्त जना की धूर मन–मंग। (२) सांस.....

आप छोड़ बेंनती करो,
साध संग अगन सागर तरो। (२) सांस.....

हर धन के भर लेहो भंडार,
'नानक' गुरु पूरे नमस्कार। (२) सांस.....

सत संगत जग सार साधो

(ब्रह्मानंद जी)

सत संगत जग सार साधो, सत संगत जग सार रे। टेक ।

काशी नहाये, मथुरा नहाये, नहाये हरिद्वार रे (२)
चार धाम तीर्थ फिर आवे, मन का नहीं सुधार रे। सत.....

वन में जाये, कियों तप भारी, काया कष्ट अपार रे (२)
इन्द्री जीत करे वश अपने, हिरदे नहीं विचार रे। सत.....

मन्दिर जाये, करे नित पूजा, राखे बड़ो आचार रे (२)
साधु जन की कदर ना जाने, मिले ना सिर्जन हार रे। सत.....

बिना सतसंग ज्ञान नहीं उपजे, करले जतन हजार रे (२)
'ब्रह्मानंद' खोज गुरु पूरा, उतरो भव जल पार रे। सत.....

सतगुरु जी बक्श लियो

(संत अजायब सिंह जी)

सतगुरु जी बक्श लियो, दर ते जिन्द आई निमाणी,
तेरा नाम भुलाया दुःख उठाया, बिन नावैं भरम भुलाणी। (२)सतगुरु जी.....

आवीं मेरिया साईयाँ, मैं आसाँ लइयाँ। (२)
सुनी आ के दर्द कहानी। सतगुरु जी.....

मैं आत्मा तेरी, जावे पेश ना मेरी। (२)
मन करदा ऐ मन मानी। सतगुरु जी.....

लगी प्रीत ना तोड़ियो, चरनी अपनी जोड़ियो। (२)
सानू बक्श दयो सच्ची बानी। सतगुरु जी.....

धन धन कृपाल जी, दाते दीन दयाल जी। (२)
टूटी गंढी 'अजायब' दी तानी। सतगुरु जी.....

सतगुरु जी दरश दिखाओ

(संत अजायब सिंह जी)

सतगुरु जी दरश दिखाओ, सुनके फरियाद साडी (२)
आये हैं तेरे दर ते, सुनियो आवाज साडी। । टेक ।

ऐह जो देश पराया, काल नें फदां पाया (२)
ऐसे विच चित लगाया, थोड़ी मुनियाद साडी। सतगुरु.....

झूठा संसार सारा, झूठा व्यवहार सारा (२)
सच्चा जो नाम तुम्हारा, भुली है याद साडी। सतगुरु.....

होया अन्धेरा सारे, पा जा तूं फेरा प्यारे (२)
फिरदे हां मारे मारे, सुनयो आवाज साडी। सतगुरु.....

सच्चे कृपाल प्यारे, तैथो मैं जांवा वारे (२)
काल दे पिंजरे चों करदे, आत्मा आजाद साडी। सतगुरु.....

'अजायब' जी अरज सुनावे, कृपाल दा नाम ध्यावै (२)
तेरे ही चरणां विच, लगी रहे याद साडी। सतगुरु.....

सतगुरु के गुण गालै बन्दे

(मस्ताना जी)

सतगुरु के गुण गालै बन्दे, जन्म मरण मुक जायेगा।
शरण पड़े की लाज है उसको, जमसे तुझे बचाऐगा।। टेक।। २।।

यह दुनियां है चार दिनों की, जगत मुसाफिर खाना है (२)
यह देश नहीं तेरा बन्दे, तेरा और ठिकाना है (२)
खाली हाथ जगत में, आया हाथ पसारे जायेगा। शरण.....

ऐसा मस्त हुआ विष्यों में, जीवन अपना धूल किया (२)
धरे लिया माया ठगनी ने, भूल गया तू भूल गया (२)
सतगुरु के दरबार में जाकर, क्या पूंजी दिखलाऐगा। शरण.....

झूठे हैं सब जग के नाते, झूठा बहन भ्राता है (२)
साथ तेरे जाने वाला इक, सतगुरु का नाता है (२)
बिन सतगुरु के पागल मनुवा, भव में गोते खाऐगा। शरण.....

कर्म कांड में उमर गुजारी, प्रीत नाम से लाई ना। (२)
मढ़ी मसानी रहा पूजता, अन्दर झाती पाई ना (२)
नाम शबद बिना कहे 'मस्ताना' जी, हीरा जन्म गवाँऐगा। शरण.....

सतगुरु कृपाल जी दर्शन

(संत अजायब सिंह जी)

सतगुरु कृपाल जी दर्शन दिखांदा जा जरा। । टेक । (२)

होमे हंगता अग्ग दे विच जीव असी सड़ रहे, काल दा ऐह देश है, डरदे असी हां दड रहे (२)
करके दया दातया मरदे बचांदा जा जरा।। सतगुरु कृपाल जी.....

थक्के फिर–फिर जग ते कोई वी थाँ ना छाडया, तेरे दर तो बाज दाता, कोई ना दर लभिया।(२)
मंगते दरते खड़े तू खैर पांदा जा जरा।। सतगुरु कृपाल जी.....

जमण ते मरण दा ऐह दुखड़ा निवार दे, महा बिखड़ा भवसागर बांहों फड़के तार दे।
जाल माया मोह दा ऐथों बचादां जा जरा।। सतगुरु कृपाल जी.....

घट घट दे विच वस रिहा पर, देखना मुहाल है। तू रब है रहीम है, पर नाम तो कृपाल है (२)
रहम करके दातिया, विछुड़े मिलादां जा जरा।। सतगुरु कृपाल जी.....

कीते कर्म कांड सारे धुणें वी तपा लऐ, लभिया ना दिल दा जानी तीरथां ते नहा लऐ।
कृपाल जी 'अजैब' दे दुखड़े मिटादां जा जरा।। सतगुरु कृपाल जी.....

सतगुरु कृपाल प्यारा

(संत अजायब सिंह जी)

सतगुरु कृपाल प्यारा, दुनियां नूं तारण आ गया। । टेक। (२)
हुकम सिंह दे घर विच सोहना, बनके बालक आया। (२)
गुलाब देवी नूं देयो वधाईयां, जिसदी कुख दा जाया। (२)
बन आया जगत सहारा। दुनियां.....

घर–घर दे विच होका देंदा, शाह कृपाल प्यारा। (२)
सावन शाह दे खेल नियारे, मैं हां कौन विचारा। (२)
सच लै के नाम सहारा। दुनियां.....

चहुं कुंठा विच फिरके सच्चे, नाम दा होका लाया। (२)
नूर इलाही कुल मालिक ओह, सावन बनके आया। (२)
सावन दी अख दा तारा। दुनियां.....

परवरिश सब दुनियां दी करदा, पड़दे अन्दर रहके। (२)
लगा इश्क जिन्हां नूं सच्चा, प्रगट होया बैह के। (२)
घट–घट दीयां जाणनहारा। दुनियां.....

रब बन्दे दा धारके चोला, दुनियां दे विच आया। (२)
अन्तरयामी पुरख अनामी है, कृपाल सदाया। (२)
आया कृपाल भंडारा 'अजायब' नूं रस्ते पा गया। सतगुरु.....

सतगुरु ने दुनियां तारी

(संत अजायब सिंह जी)

सतगुरु ने दुनियां तारी, नाम दियां लाके झड़ियाँ। । टेक। (२)
सिमरन बाजों रूह कुम्हलाये, मेघ बिना ज्यों खेती जाए। (२)
तपदी होई दुनियां ठारी। नाम दियां.....

नाम जपने दी जुगत सिखोदां, सिमरन दे के मुक्त करोंदा। (२)
कहे करो सचखंड दी तैयारी। नाम दियां.....

दुनियां दे दुःखड़े सिर ते उठावे, विछड़या मालिक फेर मिलावे। (२)
सच्चा बन आया उपकारी। नाम दियां.....

वासी सचखंड दा तूं शाह कृपाल वे, आ गया 'अजायब', तेरे दर से कंगाल वे। (२)
असी मंगते तूं दाता है भंडारी, नाम दियां.....

सतगुरु प्यारे मेरी जिन्दगी संवार दे

(संत अजायब सिंह जी)

सतगुरु प्यारे मेरी जिन्दगी संवार दे।
कर्मा दे मारे तेरे दर ते पुकार दे।। टेक।।

तेरे ते गुरुजी मेरा राई रत्ती जोर ना। (२)
तेरे बाजो दुनियां ते मेरा कोई होर ना। सतगुरु.....

शरन मैं तेरी आया मैनूं ठुकराई ना (२)
दुःख में बथेरे पाऐ होर तड़फाई ना। सतगुरु.....

दुःखां नाल तपया तू दिल मेरा ठार दे (२)
कर्मा दे मारे तेरे दर ते पुकार दे। सतगुरु.....

सतगुरु सच्चा कृपाल दातारिया

(संत अजायब सिंह जी)

सतगुरु सच्चा (२) कृपाल दातारिया,
रुड़िया जान्दा सेवक (२), आके बांहो फड़ तारया। (२)

जिन्द निमाणी भटके दर दर, मिले ना कोई सहारा।(२)
कर्म काण्ड सब कर कर हारी, मिलया ना कोई प्यारा। (२)
सड़दी मेरी जिंदड़ी (२), नी अड़ियो आ के मैनूं ठारिया।। सतगुरु.....

तैथों बिछुड़ी आत्मा तेरी, आपे ही समझा लै। (२)
चंगी हाँ या माड़ी हाँ, हुण अपने विच मिला लै। (२)
तेरा विछोड़ा साथों (२), दाता जावे ना सहारेया।। सतगुरु.....

काल ने जाल बिछाया डाडा, बच के ना कोई जावे। (२)
सच्चा गुरु जिन्हाँ नूं मिलया, एथों आन छुडावे। (२)
भवसागर विच बेड़ा (२), साडा रुड़िया जान्दा तारिया।। सतगुरु.....

सन्त परौणे आए बथेरे, कोई मिलया ना दिल दा जानी। (२)
ठंड आत्मा किसे ना पाई, गांदे रहे जुबानी। (२)
'अजायब' कृपाल (२), बिना कौन सी विचारया।। सतगुरु.....

सतगुरु सच्चे मेरे दाता

(संत अजायब सिंह जी)

सतगुरु सच्चे मेरे दाता, दर तेरे ते आ गये। टेक। । २।

तैथों विछड़े कई जन्मा दे, भोग रहे हां फल करमां दे (२)
कट दे फंद जनम जनमा दे, डाडे हां घबरा गये।। सतगुरु.....

बने भिखारी तेरे दर दे, दया मेहर सतगुरु जी कर दे(२)
बारिश नाम दान दी करदे, बूटे हैं मुरझा गये।। सतगुरु.....

अमृत नाम परवाह चला दे, तपदे हिरदे ठण्ड वरता दे (२)
झोली खैर नाम दी पादे, बन के भिखारी आ गये।। सतगुरु.....

दास 'अजायब' अर्जां करदा, कृपाल गुरु जी रखलो पड़दा (२)
बक्शो सतगुरु तेरा वरदा, शरण तेरी हां आ गये।। सतगुरु.....

सावन गुरु कृपाल जी

(संत अजायब सिंह जी)

सावन गुरु कृपाल जी, दाते दीन दयाल जी।
असीं रखीयां आसां तेरीयां, रूहां अपनी आप संभाल जी। टेक। (२)

सानूं देके सहारा बचा लवो, तुसी अपने चरनी ला लवों। (२)
असीं जूनां फिरिया बथेरियां, साडा कटदो चौरासी दा जाल जी।
सावन.....

जाल मन उत्ते माया दा पै गया, इक तेरा ही सहारा रह गया। (२)
होर ढाईयां सभै ढेरियाँ, देवो आसरा दीन दयाल जी। सावन.....

असीं पापी अवगुण हारेजी, बुरे फंस गये हां जीव विचारे जी। (२)
तूं मालिक असी हां चेरीयां, साडी करयो आप संभाल जी।
सावन.....

तेरे हां पर पापां ने घेरे हां, भले हां बुरे हां पर तेरे ही हां। (२)
करे अरजां 'अजैब' प्यारेया, सुनियो सतगुरु कृपाल जी। सावन.....

सतगुरु सावन शाह अमृत वरस रिहा

(संत अजायब सिंह जी)

सतगुरु सावन शाह अमृत वरस रिहा, गुरु प्यारे, असी आये हाँ तेर द्वारे। टेक।
सच्चे नाम दियाँ झड़ीयाँ लाईयाँ, रूहाँ सचखण्ड विच पहुँचाईयाँ, (२)
लख–लख वारे जावाँ बलिहारे, सतगुरु प्यारे।
असी आये हां तेरे...

सावन सच्चया तूँ चरणी ला लै, गुनाहगारा नूँ आन बचालै (२)
कई जन्मा तो उके, तेरे दर ते झुके, करमां दे मारे।
असी आये हां तेरे...

सावन बनके नूर बरसाया, कृपाल कदी बन आया, (२)
रूहाँ तार देयो, तपदे ठार देयो, सावन प्यारे।
असी आये हां तेरे...

सावन वसिया फुल तां टहक रहे, समय–समय सिर आके महक रहे, (२)
दया मेहर करो, खाली झोली भरो, जयमल जी दे सितारे।
असी आये हां तेरे...

असी दुखिए हाँ काल ने घेरे, बक्शो सतगुरु जीव हां तेरे,
असी मैल भरे, उज्जल कौन करे, तेरे बिना प्यारे।
असी आये हां तेरे...

सच्चया सावन सुन फरियादां, दास 'अजायब' करे तेरीयां यादां, (२)
सतसंग सोहे बारिश, नाम दी होवे, तेरे सहारे।
असी आये हां तेरे...

अमृत नाम प्रवाह चलाया, सानूं भुलयाँ नूं रस्ते पाया, (२)
असी जीव बुरे, औझड़ पैके तुरे, औगुण हारे।
असी आये हां तेरे...

पिता काबल सिंह दे प्यारे, माता जीवनी दे राज दुलारे, (२)
भांबड़ भख रहे सी, जीव मच रहे सी, आके ठारे।
असी आये हां तेरे...

करे दास 'अजायब' पुकारां, सावन कृपाल कदी ना विसारा, (२)
मैनूं मदद तेरी पैज रख लईं मेरी, 'अजायब' दास पुकारे असी।
असी आये हां तेरे...

सतगुरु सोहना मेरा है कृपाल

(संत अजायब सिंह जी)

सतगुरु सोहना मेरा है कृपाल नी सईयों, दीन दयाल नी सईयों। । टेक।

कई जन्मां तों बिछड़ी सी मैं, लभदी प्रीतम प्यारा। (२)
सतगुरु पूरा मिल जाए मैनूं, हो जाए पार उतारा। (२)
नी मिल गया माहीं मेरा, नी शहंशाही मेरा, करे संभाल नी सईयों।
दीन दयाल नी सईयों। सतगुरु सोहना....

सईयों नी मैं दर दर फिर के, डाढी पागल होई। (२)
दिल दा जानी कोई ना मिलया, ना सुनी अरजोई। (२)
नी मिल गया प्यारा, मेरा नी दिली सहारा, मेरा शबद भंडार नी सईयों।
दीन दयाल नी सईयों। सतगुरु सोहना....

जल धारे और धुणे तपाये, थां–थां तीर्थ नहाया। (२)
शिव दवाले ते मन्दिर पूजे, किसे नां दुःख वंडाया। (२)
नी मेरा माहीं, आया नी मैनूं रस्ते पाया, दवे दीदार नी सईयों।
दीन दयाल नी सईयों। सतगुरु सोहना....

सोहना दर्श दिखावो सब नूं, सुन कृपाल प्यारे। (२)
ऐबां भरी 'अजायब' दी जिंदड़ी, लावो पार किनारे। (२)
नी सच्चा सन्त आया, नी मेरा कन्त आया, करे प्यार नी सईयों।
दीन दयाल नी सईयों। सतगुरु सोहना....

सावन केड़या रंगा विच राजी

(संत अजायब सिंह जी)

सावन केड़यां रंगा विच राजी, मैं की जाणां सार सावन दी। । टेक।

सावन आया फुल सब खिड़ गये, काल पावर दे बुहे भिड़ गये। (२)
जित लई सतनाम दी बाजी, मैं की जाणां सार सावन दी, सावन.....

सतसंग करके रहे समझौदें, रूहाँ सचखण्ड ले जाणीया चौंदे। (२)
नाम जप लो ना बनयो पाजी, मैं की जाणां सार सावन दी, सावन.....

सावन शाह बन जग विच आया, जैमल सिंह दा नाम चमकाया। (२)
रोगी होंमे वाले किते राजी, मैं की जाणां सार सावन दी, सावन.....

सावन आओ दरश दिखाओ, जन्म–जन्म दे रोग मिटाओ। (२)
'अजायब' दुखिया हो जाए राजी, मैं की जाणां सार सावन दी। सावन.....

सावन दा बेटा सोहना कृपाल आ गया

(संत अजायब सिंह जी)

सावन दा बेटा सोहना कृपाल आ गया,
शब्द भंडारी सच्चा नाम जपा गया। । टेक। (२)

मेहरां वाले सतगुरु दाता, मेहर वरसा दयो,
तेरे दर ते भिखारी आऐ, नाम दान पा दयो। (२)
सच्ची ज्योत इलाही सोहणां, झलक दिखा गया।
शब्द भंडारी सच्चा, नाम जपा गया।।
सावन दा बेटा.....

मिलया ना वैद्य कोई, जन्मा दे रोग नूं,
करयो तरस, कटो करमां दे भोग नूं। (२)
साडे दर्दां दा दारु देके, पीड़ा हटा गया।
शब्द भंडारी सच्चा, नाम जपा गया।।
सावन दा बेटा.....

काल ने जाल विछाया, भरमां विच पाऊंदा ऐ,
जीवां नूं फड़के खोटे, कर्मां विच लाऊंदा ऐ। (२)
कृपाल सोहणां, सतसंग चलाके, चिन्ता मिटा गया।
शब्द भंडारी सच्चा, नाम जपा गया।।
सावन दा बेटा.....

आ गई हुण कूड़ मस्याँ होया अन्धेर है,
सावन दया चन्ना वे तूं लौना क्यों देर है। (२)
कूक 'अजायब' दी सुनके कृपाल घरे आ गया।
शब्द भंडारी सच्चा, नाम जपा गया।।
सावन दा बेटा.....

सावन कृपाल प्यारे

(संत अजायब सिंह जी)

सावन कृपाल प्यारे, दर्शन दिखादें क्यों नहीं। । टेक। (२)

असी हां पापी भारे, कट देवो संकट सारे। (२)
चलके हां आऐ द्वारे, चरना विच लादें क्यों नहीं। सावन.....

फिरया संसार सारा, मिलिया ना कोई सहारा। (२)
सोहना जो नूर इलाही सब नूं दिखादें क्यों नहीं। सावन.....

होके मैं आत्मा तेरी, बन गई हां मन दी चेरी। (२)
माया दे जाल ने घेरी, आके बचादें क्यों नहीं। सावन.....

मन दियां लहरा मोड़ो, टुट गईयां रूहां जोड़ो। (२)
पापां दा प्याला भन्नके, अमृत पिलांदे क्यों नहीं। सावन.....

सतगुरु मैं जीव नकारा, देना है आप सहारा। (२)
दर्द विछोड़े वाला, अजैब दा ठादें क्यों नहीं। सावन.....

सावन प्यारे बक्शन हारे

(संत अजायब सिंह जी)

सावन प्यारे बक्शन हारे, दुःखिया द दर्द निवार दियो।। टेक।(२)

रूहां सड़दियाँ तपदियाँ साडियाँ। (२)
अमृत पा के ठार दियो। सावन.....

असी भुल गऐ तेरे, नाम नू। (२)
साडी बिगड़ी नूं आके सँवार दियो। सावन.....

बेड़ा सागर विच, ठिल गया। (२)
बनो मल्लाह ते तार दियो। सावन.....

दया करो नाम, जपा लवो। (२)
साडी होंमे हंगताँ नूं मार दियो। सावन.....

हथ बन्न अरजां है, मेरियाँ। (२)
गरीब 'अजायब' दी सार लियो। सावन.....

सावन शाह जी आओ

(संत अजायब सिंह जी)

सावन शाह जी आओ दर्श दिखाओ,
कई जन्मा दे रोग मिटाओ। (२)

दर्श बिना सानूं चैन ना आवे, इक–इक पल युग बीतदा जावे। (२)
काल दी नगरी चों आन बचावो।। सावन शाह.....

मैं गुनाहगार तू बक्शन हारा, समझो यतीम आं देवो सहारा। (२)
बेड़ी मंझधार चों पार लगाओ।। सावन शाह.....

डाकू लुटेरे फिरन चुफेरे, दया करो दाता जीव हां तेरे। (२)
काल दे पंजे चों आन छुड़ावो।। सावन शाह.....

गरीब अजायब दी सुन अरजोई, तेरे बिना किते मिलदी ना ढोई। (२)
सावन जी आओ, देर ना लगाओ।। सावन शाह.....

सिमरन करीये नाम सिमरिये

(संत अजायब सिंह जी)

सिमरन करीये नाम सिमरिये, जिन्दगी सफल बना लइये,प्यार गुरु नाल पा लइये। (२)। टेक।

सिमरन बाजों बन्दे तैनूं, भैंड़ीयाँ जुनाँ विच जाना पवैं। (२)
मन भावंदा नहीं खाना मिलदा गंद फूस नूं खाना पवें। (२)
सतसंग जाईये नाम ध्याईये, मन बदियां तो ठा लईये। प्यार.....

धीयां पुत्र कुटंब कबीला, बन्दया ओए मिठड़ा जादू ऐ। (२)
नाम तो बिना कुछ नाल नहीं जाना, ऐह कानून सब ते लागू ऐ। (२)
छडके सारे झगड़े झेड़े अपना मन समझा लईये। प्यार.....

अंग साक जो भाई भैणा सब मतलब दे प्यारे ने। (२)
अन्त वेले कोई नेड़े ना आवे, धोखेबाज सहारे ने। (२)
आखिर वेले आयेगा सतगुरु ओसेदा शुक्र मना लईये। प्यार.....

असी अड़ गये पुन्न पापां दे विच, चलदा कोई ना चारा। (२)
साडी कोई पेश ना आवे, गुरु कृपाल जी देयो सहारा। (२)
'अजायब' नूं गुरु पूरा मिलया, गीत गुरु दे गा लईये। प्यार.....

सावन शाह आया जग ते

(संत अजायब सिंह जी)

सावन शाह आया जग ते, सावन शाह आया जग ते।
ओस नाम दा जहाज बनाया, आओ जिने पार लंघना। । टेक।

गुण किवें गावां ओसदे, ओह तां नूर इलाही आया,
गुरु जयमल सिंह ओसदा, ओदा नाम आके चमकाया। (२)
नाम लै के सतगुरु तों, ओ हो, नाम लै के सतगुरु तों,
रूहां तारने दा ढंग अपनाया।
आओ जिने.....

होवे खुशहाली ओस थां, झाती जिस थां ते तूं पावें,
हो जाए तेरी मेहर दातेया, दाने भुजे होए कल्लर उगावें। (२)
ऐस फुलवारी दा आपे, ऐस फुलवाड़ी दा,
कमं अपना तें आप चलाया।
आओ जिने.....

बाग परमार्थ दा सारी, दुनिया ते आके लाया,
बूटे लाके हर थां ते, माली फड़ कृपाल बैठाया। (२)
आप सचखंड जाए के, दाताजी, आप सचखंड जाए के,
सतसंग दा महात्म चलाया।
आओ जिने.....

जुगो जुग चोला बदले, तेरा नाम बक्शींद मेहरबाना,
आ गया 'अजायब' चलके, देवीं शबद भण्डार खजानां। (२)
मेरा कोई ना नहीं जांनदा, दाताजी, मेरा कोई ना नहीं जांनदा,
सब तेरा ऐ खेल रचाया।
आओ जिने.....

सिर गुरु चरना ते रखनी आं

(संत अजायब सिंह जी)

सिर गुरु चरणा ते रखनी आं। । टेक। (२)
किते वस हो जाऐ मन मेरा, सिर गुरु चरणा ते रखनी आं। (२)

गुरु दे प्यार विच सगन मनोंदीआं, मैं सगन मनोदीआं। (२)
मेरे घर विच पावीं फेरा, सिर गुरु.....

जाग पैण भाग मेरे घर विच आ जावे, घर विच आ जावे। (२)
जाऐ चुकिया रैन अंधेरा, सिर गुरु.....

वेहड़ा मेरा सूना किते आके फेरा पा जवीं, आके फेरा पा जवीं। (२)
मन वेहड़ा करां साफ बथेरा, सिर गुरु.....

नाम दा भंडारी आके नाम वरता गया, नाम वरता गया। (२)
कीता सतसंग शाम सेवरा, सिर गुरु.....

रोवे रूह 'अजैब' दी तूं आजा कृपाल वे, तूं आजा कृपाल वे। (२)
तेरा सचखंड विच है बसेरा, सिर गुरु.....

सोहना शाह कृपाल

(संत अजायब सिंह जी)

सोहना शाह कृपाल प्यारा लबया। (२)

मैनूं तेरे बिना कोई ना सहारा लबया। । टेक।
तेरी याद विच सांईया रहे झलदे जुदाईयां।(२)
तेरी भाल विच कोई ना किनारा छडिया।
मैंनू तेरे बिना कोई न सहारा लभिया। सोहना शाह.....

सारे तीर्थ नहाये होर धुणें वी तपाऐ। (२)
चोले भगवें पाऐ ना प्यारा लबया।
मैंनू तेरे बिना कोई ना सहारा लबया। सोहना शाह.....

जग ढुंढ लिया सारा मिले कोई ना सहारा। (२)
तेरी भाल विच कोई ना द्वारा छडिया।
मैंनू तेरे बिना कोई न सहारा लबया। सोहना शाह.....

'अजैब' यश तेरा गाऐ सच्चा नाम ध्याऐ। (२)
तेरा तकया सहारा जग सारा छडिया
मैंनू तेरे बिना कोई न सहारा लबया। सोहना शाह.....

संत जना मिल हर यश गायो

(गुरुबाणी)

संत जना मिल हर जस गायो।
कोट जन्म के दुःख गवायो। (२)

जो चाहत सो ही मन पायिओ।
कर कृपा हर नाम धियाएओ। (२)

सर्व सुख हर नाम बडाई।
गुर प्रसाद 'नानक' मत पाई। (२)

सावन कभी आओ

(संत कृपाल सिंह जी)

सावन कभी आओ, कभी आओ, कभी आओ,
उजड़ी हुई दुनिया को मेरी, आ के बसाओ । टेक।

तुम पास नहीं कौन, सुने मेरी कहानी,
सावन कभी आओ तो, सुनो मेरी जुबानी,
मैं तेरे सिवा किसको कहुं, यह तो बताओ।
उजड़ी हुई दुनिया को मेरी आके बसाओ। सावन कभी आओ.....

जोबन पे जवानी है, और चांदनी रातें,
तुम भूल गऐ सावन, क्यों प्यार की बातें,
जब प्रीत लगाई है तो, अब तोड़ निभाओ।
उजड़ी हुई दुनिया को मेरी आके बसाओ। सावन कभी आओ.....

आंखों ने तेरी याद में, सौ अश्क बहाऐ,
आहों ने मेरे सीने में, तूफान उठाऐ,
रोते हुए हृदय को मेरे, आके हंसाओ।
उजड़ी हुई दुनिया को मेरी आके बसाओ। सावन कभी आओ.....

सच्ची बानी अन्दर हो रही इन्सान दे

(संत अजायब सिंह जी)

सच्ची बानी (२) अन्दर हो रही इन्सान दे,
बिना गुरु तों ओंदी ना पछान वे। (२)
सुनी वे सजना घड़िया जो भांडा है अखीर भजना, सच्ची.....

बानी धुर सचखण्ड तों आवें, रूहां सुतीयां नूं आन जगावें। (२)
सुनी प्यारेया जिन–जिन सुनी ओसे ताईं तारेया। सच्ची.....

ऐह सच्चे गुरुआं दी है बानी, ऐहतां है रतना दी खानी। (२)
सुन दिल ला के मुक्त करौंदी दरगाह च जाके। सच्ची.....

सच्ची बानी विचों अमृत झरदा, मुरदा रूहां नूं जिन्दा करदा।(२)
अमृत जेहनूं पच जावें, काल दे शिकजें विचों बच जावें। सच्ची.....

कीर्तन बानी दा अठों पहर हो रिहा, सुणदा नहीं मन जन्मां तों सो रिहा। (२)
आया कृपाल जानी, 'अजैब' नूं जगाया ओहदी मेहरबानी। सच्ची.....

सतगुरु सावन शाह

(बाबा सोमनाथ जी)

सतगुरु सावन शाह, मेरा चित्त हर लिया जी । टेक।

जित देखूँ तित, आप दिखाई, गति मति तन की स्थिति भूल गई। (२)
चन्द्र चकोर ध्यान लाया जी। मेरा चित्त हर लिया जी। सतगुरु सावन शाह...

दिन को चैन न रात को शयना मन में मेरे तू घर कीन्हा। (२)
कौन सुने कहां जावां जी। मेरा चित हर लिया जी। सतगुरु सावन शाह...

नयन बहे जस झरना नीर, कान कलेजे, विच लागी तीर। (२)
जन चाहत अब जीया जी। मेरा चित्त हर लिया जी। सतगुरु सावन शाह...

तुझ बिन जाऊँ कौनी ओर, एक तू ही है, अन्दर बाहर। (२)
मन मन्दिर अन्दर वसया जी। मेरा चित्त हर लिया जी। सतगुरु सावन शाह...

दास सोमनाथ ध्यान में रहे नित्य, आस एक तेरी बालक पित मात। (२)
फाँस काट दिया माया जी। मेरा चित्त हर लिया जी। सतगुरु सावन शाह...

सोहना सावन शाह दा

(संत अजायब सिंह जी)

सोहना सावन शाह दा भंडारा आ गया,
ओ दुखियाँ दा बनके सहारा आ गया। । टेक।

जित्थे आ गई जोत निराली ऐ, ओह धरती नसीबां वाली ऐ। (२)
नूरी दर्शन दा चमकारा पा गया। सोहना.....

कुल मालिक बन्दा बन आया ऐ, विच अपना आप छुपाया ऐ। (२)
कीता प्रेम जिसने ओह नज़ारा पा गया। सोहना.....

ओह दुखीयाँ दे दर्द वडोंदा रेहा, सच्चे प्रेमियां नूं झलक दिखौंदा रेहा। (२)
आई मौज ओथे अमृत फुहारा ला गया। सोहना.....

तेरे प्यार दिया गल्लां दिल विच वसीयाँ, तेरे नूर दियां किरणां रूह दे विच धसीयाँ। (२)
सच्चे नाम दा तूं माही वे इशारा ला गया। सोहना.....

गावां दिन रात तेरे उपकार दातेया, रूहाँ भवसागरों कर पार दातेया। (२)
तेरे दर ते 'अजायब' बेचारा आ गया। सोहना.....

सोहना सोहना मुखड़ा ते

(बाबा सोमनाथ जी)

सोहना सोहना मुखड़ा ते सोहनी सोहनी खिच वे,
रूह पई ऊडे हवा दे विच वे, आ सच मुच (२) दर्श दिखा दाता,
मैं दिल दे दुःखड़े फोलां, इक वारी आ इकवारी वेहड़े वड़ दाता,
मैं वांग पपीहे बोलां, इक वारी, आ इक वारी, अखियां च वस दाता,
मुड़ फेर कदे ना खोलां.....

वारो वारी कई–कई जन्मा च पई मैं,
जागे मेरे भाग तेरे चरणा च आई मैं,
हुण रखलो, आ रख लो, रखलो रखदाता मुड़ फेर कदी ना रोलां,
इकवारी आ इकवारी.....

सच्चा सुच्चा सावन ते सच्चा कृपाल वे,
आ गया अजायब तेरे दर ते कंगाल वे,
करां लख–लख, करां लख–लख वारी, यश दाता, तेरे दर ते जिन्दड़ी घोलां,
इकवारी आ इकवारी.....

सुच्चे नाम दा सच्चा चढ़ा दे

(संत अजायब सिंह जी)

सुच्चे नाम दा सच्चा चढ़ा दे, रंग आपे,
आवीं सोहणया, आवीं सोहणया, कोलो दी जावीं ना तूं लंध पास।टेक।(२)

साडे ऐबाँ वल न तक वे। (२)
लड़ लगेयां दी रख तूं पत वे। (२) सुच्चे नाम.....

लेखा साडा ना गुनाह वाला फोल वे। (२)
बन्द अखियाँ तूं साडियाँ नूं खोल वे। (२) सुच्चे नाम.....

सानूं जनम–मरन दा दुःख वे। (२)
बन वैद्य रोग नूं चुक वे। (२) सुच्चे नाम.....

आ सुण कृपाल प्यारे। (२)
हथ बन्न 'अजैब' पुकारे। (२) सुच्चे नाम.....

सुन सिखा सिखी वाले

(संत अजायब सिंह जी)

सुन सिखा सिखी वाले फर्ज निभा लवीं,
दुनिया दे झगड़े ना गल विच पा लवीं। (२)

सिखी दा निभोना तिखी धार तलवार ऐ,
भूलिया असूल उर वार ना ओह पार ऐ। (२)
दुई तै दवैत कढ मन समझा लवीं। दुनिया.....

गुरु गोबिन्द सिंह सानूं ऐकता सिखा गया,
जात पात वाले सारे झगड़े मुका गया। (२)
दुखी दिलां तांई देखी किते ना सता दवीं। दुनिया.....

काया दा मन्दिर हरी ने रचया जहान है,
घट–घट विच बैठा आप भगवान है। (२)
भुल ना तूं जावी सिखा मन्दिर ना ढा लवीं। दुनिया.....

ईरखा ते वैर वाले झगड़े मुकाई जा,
भाणां मिठा मन ओदा शुक्र मनाई जा। (२)
'अजैब' आप नाम जप सच्चा होरां नूं जपा लवीं। दुनिया.....

सावन गुमदा, गुमदा गुम होया

(संत अजायब सिंह जी)

सावन गुमदा, गुमदा गुम होया,
चंगा साऊ ओह जीव करतार दा सी। (२)

मुसलमान, ईसाईयां ते, हिन्दुआं नूं,
नालें सिखां नूं वी सतकार दा सी। (२)

हर घड़ी सरबत दा भला मंगदा,
कदे किसे नूं वी नां ही मार दा सी। (२)

नक्श नैण सोहने अते उम्र वडी,
अजायब उसनूं सावन पुकार दा सी। (२)

सावन चन वरगा है दुनिया तों सोहना

(संत अजायब सिंह जी)

सावन चन वरगा, है दुनिया तों सोहना। । टेक। (२)

तेरे उत्तों, वार देवां, जिंद जान वे,
तेरे बिना सुन्ना, दिस दा जहान वे। (२)
मैं तां, चन असमानी छोहणा। सावन.....

सावन दा ख्याल, मैनूं हर वेले रहिंदा वे,
तूं मेरा, मेरा, तैनूं सारा जग कहिंदा वे। (२)
तैनूं दिल दा हाल सुनौणां। सावन.....

गोरे–गोरे मुखड़े, तिल सोहणां लगदा,
'अजायब' दा तक–तक, दिल नहीं रजदा। (२)
सावन, वरगा जहान ते नहीं होणां। सावन.....

सावन–सावन पई ढुँडेदीं

(संत अजायब सिंह जी)

सावन–सावन पई ढुँडेदीं, सावन दिल विच वसदा। (२)
सावन मेरा दिलबर जानी, हर साह दे विच वसदा। । टेक। (२)

कदीं उदासी छा जांदी है, कदे पैर ना धरती लगदा,
रमज सावन दी, समझ ना आवे, पता लगे ना रग दा। (२) सावन.....

हौंके हाविंया विच जिंद सुक्की, ते होई फिरां सुदाई,
दिल दा महरम किते ना दिसया, जद झात अंदर मैं पाई। (२)सावन.....

दर्श प्यासी वे मैं सावन, इक वारी दर्श दिखांदे,
तूं ते मैं इक हो जाइये, अजायब दी प्यास बुझांदे। (२) सावन.....

सावन–सावन दुनिया कैंहदी

(संत अजायब सिंह जी)

सावन–सावन दुनिया कैंहदी मैं ओंदी मस्तानी,
हसंदा–हसंदा दे गया मैंनू कृपाल अमर निशानी। (२)

जद दा सावन नजरी आया पलकां विच लुकाया,
अजे तक न भुल ही सकया ज्यों सावन मुस्काया। (२)
सावन प्यारा, सावन सोहणां (२) सावन दिलबर जानी।हसंदा–हसंदा.....

ओ सी एक नूरानी चेहरा अखां विच समाया,
चोज निराले शान निराली अजे समझ न आया। (२)
नित ही रोवां, नित ही गांवा (२) लोग कहन दिवानी।हसंदा–हसंदा.....

चिट्टी दाढ़ी चौड़ा मत्था पगड़ी बन्न सज आया,
परियाँ तक ओनूं सजदे कर दियां चन्न वी अम्बर चढ़ आया
दुनियां ओनूं बाहर लभदी (२) दे गया किते झंकानी।हसंदा–हसंदा.....

चलो नी सइयों सिरसे नूं चलिये कृपाल ने होका लाया,
सावन दयालु ने रिमझिम लाई अजायब ने भी गाया
आओ सब ही दर्शन करिये (२) ओ सूरत नूरानी।
हसंदा–हसंदा.....

सावन दयालु ने रिम झिम लाई

(संत अजायब सिंह जी)

सावन दयालु ने रिम झिम लाई,
तूं मौसम रंगीले च आ के तां देख। । टेक ।

अम्बरां ते पींघा ने, सत–सत रंगिया। (२)
तूं प्यारां दी पींघ, चड़ाके तां देख। (२) तूं मौसम.....

कोयला दे गीतां दी, सुर नूं समझ के। (२)
तूं इक गीत प्यारां दा, गा के तां देख। (२) तूं मौसम.....

खुशी स्वर्गां दी, मिल जाऊँ ऐथे। (२)
तूं जुल्फां दी छाँ हेठ, आके तां देख। (२) तूं मौसम.....

मैं भर–भर नैनां दे, जाम पिला दूँ। (२)
तूं इक वारी नजरां, मिला के तां देख। (२) तूं मौसम.....

मैं जीवन वी सारा तेरे, नाम लिखा दूं। (२)
तूं इक वारी मेरे नाल, लाके तां देख। (२) तूं मौसम.....

मैं पलकां च रख लां, छुपाके तैंनू। (२)
तूं दिल वाले वेहड़े च आ के तां देख। (२) तूं मौसम.....

अमृत जल अज, अम्बराँ, चों बरसे। (२)
तूं इक वारी रीझ, लगा के तां देख। (२) तूं मौसम.....

सावन महीने दी, मस्ती च आके। (२)
तूं नजरां दे तीर, चला के तां देख। (२) तूं मौसम.....

दाम बिना, अजायब हो गया तेरा। (२)
तूं इकवारी मैनूं, अजमा के तां देख। (२) तूं मौसम.....

सब पर दया करो, गुरु पाल सबके

(संत अजायब सिंह जी)

सब पर दया करो, दया करो, दया करो,
गुरु पाल सबके कष्ट हरो, कष्ट हरो, कष्ट हरो गुरुपाल। टेक।

हम बालक तुम पिता हमारे, तुम बिन बिगड़ी कोन संवारे। (२)
तमस हरो गुरु ज्योति जगाओ, भटक रहे हैं राह दिखाओ।(२)
भुला दिया अगर तुमने ही हमको, कौन करेगा ध्यान,
सब पर.....

मानव बन कर हम जी पाऐं, इस धरती पर स्वर्ग सजाऐं। (२)
कटे पाप की काली कारा, बहे नाम की अमृत धारा। (२)
सब संगत का मान बढ़े नित, सबका हो कल्याण,
सब पर.....

जिसके मन में मूरत तेरी, जिसके मुंह पर तेरा नाम। (२)
पलक झपकते बन जाते हैं, उसके बिगड़े सारे काम। (२)
दया मेहर हो जाऐ तेरी, मेरा बन जाऐ काम,
सब पर.....

किरपाल गुरु बस इतना वर दो, तन मन धन सब निर्मल कर दो। (२)
हर दुविधा से हो छुटकारा, सब में दीखे रूप तुम्हारा। (२)
सच्चे मन से करे तुम्हारा, अजायब गुण गान,
सब पर...

हे दयाल गुरु कृपाल

(संत अजायब सिंह जी)

हे दयाल गुरु कृपाल (२) रखीयाँ आसाँ तेरीयां। (२) हे दयाल गुरु कृपाल...

तेरे जैसा कोई होर ना (२), मेरे जेहीयाँ बथेरियाँ । (२) हे दयाल गुरु कृपाल...

जल धारे कर कर हारे गऐ (२), धुणीयाँ तपाइयाँ बथेरीयाँ। (२) हेदयाल गुरु कृपाल...

दिन राती रोवां याद करां(२),छेती आ मिल लाईयां क्यों देरीयाँ।(२) हेदयाल गुरु कृपाल.

तेरे मिलन दी खातिर सोहणया (२), निंदया सुणियाँ बथेरियाँ। (२) हे दयाल गुरु कृपाल.

हुण जागी जिन्द अजायब दी (२), आखिर सोहणे ने पाईयां फेरीयाँ। (२) हे दयाल गुरु कृपाल...

हौं कुरबाने जाओ मेहरबाना

(गुरु अर्जुनदेव जी)

हौं कुरबाने जाओं मेहर वाना, हौं कुरबाने जाओं,
हौं कुरबाने जाओं तिना के लैन जो तेरा नाओं,
लैन जो तेरा नाओं तिना के हौं सद कुरबाने जाओं। (२)

ऐह तन माया पाया प्यारे लितड़ा लब रंगाऐ,
मेरे कंत ना भावे चोलड़ा प्यारे, क्यों तन सेजै जाये। (२) हौं कुरबाने.....

काया रंगन जे थिये प्यारे, पाइये नौ मजीठ,
रंगनवाला जे रंगे साहब, ऐसा रंग ना डीठ। (२) हौं कुरबाने.....

चोले जिनके चोलै रतड़े प्यारे, कंत तिना के पास,
धूड़ तिना की जे मिले जी, कहो 'नानक' की अरदास। (२) हौं कुरबाने.....

आपे साजे आपे रंगे आपे नदर करे,
'नानक' कामण कन्ते भावे आपै ही रावै। (२) हौं कुरबाने.....

होए के दयाल, कृपाल घरे आ गया

(संत अजायब सिंह जी)

होए के दयाल, कृपाल घरे आ गया, दया कर आप सच्चा, नाम जपा गया।।टेक।(२)

नाम तो बगैर दाता, फिरदी मैं सखणी, तेरे हथ डोर साडी, तूं ही पत रखणी। (२)
आत्मा ऐ तेरी ते, तरस तैनूं आ गया। दया कर.....

बिछड़ी मैं तैथों, तेरे वास्ते मैं पोदी आं, औगुना दी भरी तैथों, भुल्लां बकशोंदीआं।(२)
आण जाण वाला गेड़ा, सदा ही मुका गया, दया कर.....

तुसीं बख्शींद सानूं, पापियां नूं तार दयो, दुःखी दिलां तांई आके, पल विच ठार दया।(२)
कर सतसंग सच्चा, रस्ता चला गया, दया कर.....

जल थल विच सारा, तेरा ही पसारा है, घट–घट विच बैके, देखदा नजारा हैं। (२)
जिन्दगी 'अजैब' दी ते, ठंड वरता गया, दया कर.....

होया सुख ओले कौन दुख फोले

(संत अजायब सिंह जी)

होया सुख ओले कौन दुख फोले,
आ सुन कृपाल प्यारेया, होर सुनावा किहनुं मैं। (२)

कदम–कदम ते अमृत नूरी, सतगुरु ने बरसाया,
दिल मेरा बस करने खातिर, गुरु कृपाल जी आया। (२)
सच्चा प्यार होवे, बेड़ा पार होवे। आ सुन कृपाल.....

मन मोहनी है सूरत ओहदी दिल नूं खिचंदा नेड़े,
जे कोई उसदा बनके आवे कटदा झगड़े झेड़े। (२)
तैनूं तकदी रहवाँ दुःख दसदी रहवाँ। आ सुन कृपाल.....

ना मैं सोहनी ना गुण पल्ले, तू मेरा कतं प्यारा,
धक्के खांदी दर–दर फिरदी, तकिया अन्त सहारा। (२)
तैनूं याद करां फरियाद करां। आ सुन कृपाल.....

रब बन्दे दा धार के चोला दुनियां दे विच आया,
घट–घट दे विच वसदा होया अपना आप छुपाया। (२)
'अजायब' बोल रिहा दुःख फोल रिहा। आ सुन कृपाल.....

वंडदा हरदम नाम ख़जाने

(पाठी जी)

वंडदा हरदम नाम ख़जाने, रजके झोलीयां भर लइऐ,
आया ऐ कृपाल दा बेटा, आओ दर्शन कर लइऐ। । टेक।

छूत–छात दे भरम हटाके सिधे रस्ते पौंदा ऐ,
सच्चा नाम जपाके सबनूं मालिक नाल मिलौंदा ऐ। (२)
ढो ढुकाया रब सच्चे, तपदी होई जिंदड़ी ठार लइऐ।
आया.....

मानस जामा लाल अमुल्ला, सन्त शरन विच जोड़ लइऐ,
परमार्थ दे रस्ते चलके मन बदीयां तो मोड़ लइऐ। (२)
सोहने माहीं दे दर्शन करके भवसागर तों तर लइऐ।
आया.....

सिधी–साधी सूरत दिसदी विचों गहर गंभीर होया,
मालिक दी खोज करने खातिर सुख छडे फकीर होया।(२)
जे बक्शे जान गुनाह असाडे सिर चरना ते धर लइऐ।
आया.....

जिस माहीं दा अज भंडारा उस गरीबी धारी ऐ,
बचन मनं कृपाल सावन दे, डुबदी दुनियां तारी ऐ। (२)
ऐसे सन्त दी संगत करके जन्म सवल्ला कर लइऐ।
आया.....

लाल सिंह हरनाम कौर दा बनया पुत्र प्यारा ऐ,
गरीब अजायब नाम ओसदा, पर दुखीयां दा सहारा ऐ।(२)
होण वधाईयां संगत नूं 'पाठी' जी पल्ला फड़ लइऐ।
आया.....

सइयों नी अज शुभ दिहाड़ा

(पाठी जी)

सइयों नी अज शुभ दिहाड़ा आया ऐ,
भाग जिन्हां दे चगें दर्शन पाया है। । टेक। (२)

जिस थाँ सतगुरु बैठ गऐ धरती नूं भाग लगाऐं,
जंगल ते पहाड़ां दे विच सोहने भाग सजाऐ। (२)
खेल रचाया ऐ।
भाग.....

दूर–दूर तो संगत आई खुशिंया खूब मनाईयां,
दर्शन करने खातिर परियां स्वर्गां तो चल आईयां,
मंगल गाया ऐ,
भाग.....

सावन ते कृपाल गुरु ने अजब ही खेल रचाके,
राजस्थान दे टिबिंया दे विच चंदन बूटा लाके,
महिक खिडाया ऐ,
भाग.....

माता हरनाम कौर नूं दयो वधाईयां जिसदी कुखदा जाया,
पिता लाल सिंह नूं खुशियां होईयां, नाम अजैब रखाया,
कुलां तराया ऐ,
भाग.....

बक्शों मेंहरा वाले दाता असी हां औगुण हारे,
संगत जी अज खुशियां दे विच दयो वधाईयां सारे 'पाठी' ने गाया ऐ
भाग.....

सावन कृपाल प्यारे आये अजायब

(पाठी जी)

सावन कृपाल प्यारे, आये अजायब दुलारे,
जी अज सारे होण खुशियां। । टेक।

घर–घर खुशी मनौदें सारे, सावन झड़ीयां लाईयां,
गीत प्यार दे गावन नूं, अरशां तो परियां आईयां। (२)
मोहनी मूरत दिल नूं ठारे, अमृत दे पैण फुहारे।
जी अज.....

घट–घट दे विच मालिक वसदा, प्रेम दा सबक सिखौंदे,
परमार्थ दा रस्ता दसके, मालिक नाल मिलौंदे। (२)
सतसंगत दिन आया, ओह सोहना नूर सुहाया।
जी अज.....

जित्थे सतगुरु बैठ गये, धरती नूं भाग लगाया,
वाशना फैली नाम दी, जंगल विच मंगल लाया। (२)
सब गीत गुरु दे गावो, जिन्दगी नूं सफल बनावो।
जी अज.....

बूटे लाऐ सावन दे, कृपाल ने पानी पाया,
मेहनत करी अजायब सन्त, सावन दा ना चमकाया। (२)
कृपाल सुनी अरजोई, अजायब ते कृपा होई।
जी अज.....

लाल सिंह दा लाल प्यारा, नाम अजायब रखाया,
पुत्र बन हरनाम कौर दा, जग विच खेल रचाया। (२)
पाठी जी संगता आईयां संगत नूं दयो वधाईयां।
जी अज.....

अन्दर ज्योत जग रही

(संत अजायब सिंह जी)

अन्दर ज्योत जग रही, बाहर मन भूला फिरे। (2)

सहस कमल में ज्योत रोशनाई, घन्टा शंख आवाज सुनाई। (2)
घट घट में जग रही, बाहर मन भूला फिरे।। अन्दर ज्योत.....

त्रिकुटी बादल बजत मृदंगा, तारा मंडल सूरज चन्दा। (2)
चमन फुलवाड़ी लग रही, बाहर मन भूला फिरे।।अन्दर ज्योत.....

दसमद्वारा शबद झनकारा, सुन मंडल त्रिवेणी धारा। (2)
किंगरी सारंगी बज रही, बाहर मन भूला फिरे।।अन्दर ज्योत.....

भवरगुफा मोती महल अटारी, सुरत निरत धुन बीन सुनारी। (2)
संत मंडली सज रही, बाहर मन भूला फिरे।। अन्दर ज्योत.....

सच्चखण्ड सुरत जा अमृत पिया, सतपुरूष का दर्शन किया। (2)
धुन प्यार की बज रही, बाहर मन भूला फिरे।। अन्दर ज्योत.....

सच्चा देश सचा तख्त सुहाया, दास 'अजायब' कृपाल ध्याया।(2)
सन्त दया बरस रही, बाहर मन भूला फिरे।। अन्दर ज्योत.....

आ जा आवी जा

(संत अजायब सिंह जी)

आ जा आवी जा, आवी जा सोहणया वे,
तरले मै करदीयाँ, वे सोहणया, वास्ते मैं पौंदियाँ। । टेक।

ततड़ी उडीक दीयां, तरले मैं पौंदियाँ,
आजा मेरे माहीं तेरे वास्ते मैं पौंदियाँ। (2)
तेरे नाल जिन्दगी है तेरे बाजो मोई वे,
वे सोहणया वास्ते.....

तेरे ना नसीब मैनू जिन्दगी दे साह वे,
तेरे बिना दाता सारी संगत बेहाल वे। (2)
आजा हुण प्यारे मेरी जिन्दगी सवार दे,
वे सोहणया वास्ते.....

दे के दर्श छुप गयों मेरे मांही वे,
होई बड़ी देर हुण आ फेरी पांई वे। (2)
मर गए आँ असी बाकी मुरदे जे हो गऐ,
वे सोहणया वास्ते.....

तेरी आं मैं आत्मा तूं सुन कृपाल वे,
आ देख अजायब दा की होया बुरा हाल वे।(2)
आ हुण आ आके सीने नाल ला लै,
वे सोहणया वास्ते.....

आ कृपाल कोल बैठ

(संत अजायब सिंह जी)

आ कृपाल कोल बैठ असांदे, फोल दिलां दे वरके।
होई कौन खनामी साथों, लंघ जांदो चुप करके। टेक।(2)

असी नहीं भुल सकदे तैनु, जिनां चिर साह वगदे ने। (2)
सच नहीं औंदा जे तैनु, वेख सीने हथ धरके।। (2) होई.....

तेरी ही हां तेरी साँ, जद तो चाहिया तैंनु । (2)
प्यार तेरे संग कीता ए ताँ, की रहना फिर डरके।। (2) होई.....

दर तेरे ते आये हाँ कुछ, आस उम्मीदां लैके। (2)
पादे खैर जां मोड़ दे खाली, खुशियाँ दे सावन बनके।।(2) होई.....

वेख परख के सानु सोहनी, वांग आ जावांगी तरके। (2)
पर इक वारी बैह कोल 'अजायब' दे, फोल दिलां दे वरके।।(2) होई.....

ओ मन मूरख अब तो जाग

(संत अजायब सिंह जी)

ओ मन मूरख अब तो जाग। । टेक। (2)

रात अंधेरी पथ अन्जाना, सिर पर है पापों का भार,
गहरी नदिया नाव पुरानी, और उसमें भी छेद हजार। (2)
बीत गए जुग सोते सोते, अरे आलसी निद्रा त्याग।।
ओ.....

मात पिता पत्नी सुत दारा, समझ रहा जिनको अति प्यारा,
प्राणों का पंछी उड़ते ही, कर जायेंगे सभी किनारा। (2)
सबकी अपनी अपनी डफली, सबका अपना अपना राग ।।
ओ.....

सकल सत्य का सार नाम है, जीवन का आधार नाम है,
प्रेम नाम है प्यार नाम है, कहते बेड़ा पार नाम है। (2)
प्रभ को पावन कृपाल नाम है, करे प्रतिपाल और अनुराग।।
ओ.....

सौ काम छोड़ सतसंग में जाना, हजार काम छोड़ बंदे ध्यान लगाना,
जितनी जरूरत तन को खाने की, आत्मा भी मांगे सिमरन खाना। (2)
वाक 'अजायब' याद रख किरपाल का, खा ली ठोकरें अब तो जाग।।
ओ.....

करो मन गुरू चरणों से प्रीत

(संत अजायब सिंह जी)

करो मन गुरू चरणों से प्रीत
गुरू चरणों से प्रीत करों मन गुरू..... । टेक। (2)

यह सपनों का जाल सुहाना, यह दुनियां है रैन बसेरा,
चला चली के इस मेले में, सांझ ढली और उखड़ा डेरा। (2)
वर्तमान होता जाता है, पल पल यहाँ अतीत।
करो.....

नौकर चाकर ठाठ बाट यह, भरी तिजोरी में यह माया,
प्राण पखेरू उड़ जायें तो, साथ नहीं जाती यह काया।(2)
सभी चिता पर रख कर आते, सुत्त संबंधी मीत।
करो.....

रात अंधेरी राह अंजानी, गहरी नदिया नाव पुरानी,
सोते–सोते बीत गए युग, अब तो जाग अरे अज्ञानी (2)
विध्न विनाशक गुरू नाम है, जीवन का संगीत
करो.....

लोहे को सोना कर देता, इतना पावन नाम तुम्हारा,
पल में सत्त धाम जा पहुंचाँ, जिसने मन से तुम्हें पुकारा। (2)
कृपाल 'अजायब' के सदा सहाई, जन्म जन्म का मीत।
करो.....

कृपाल की महिमा

(संत अजायब सिंह जी)

कृपाल की महिमा अपरम्पार, कोट वार जावाँ बलिहार। । टेक।

हरे अंधेरा ज्योति जगाए, हर भटके को राह दिखाए,
सदा सहारा दे पग–पग पर, कष्ट हरे सब सुख बरसाये। (2)
बिन मांगे ही सब कुछ पाए, जो भी आए गुरू के द्वार।
कृपाल.....

सन्त जनों का है यह ज्ञान, हरी से पहले गुरू को जान।
यह तन विष की बेल बावरे, सतगुरू है अमृत की खान। (2)
शत–शत नमन वंदना शत–शत, गुरू है जीवन के आधार।
कृपाल.....

अन्तर मन की आँखे खोल, झुक कर चल और मीठा बोल।
गाँठ बाँधले तर जायेंगा, गुरू का वचन बड़ा अनमोल (2)
जिन पर दया करी गुरूवर ने, वही उतर गए भव से पार।
कृपाल.....

गुरू का नाम है कलयुग में, भवसागर की नाव।
नाम बिना और तैरने का, और कोई नहीं उपाव। (2)
'अजायब' जप कृपाल को, उतर जायेंगा पार।
कृपाल.....

कृपाल दा विछोड़ा

(संत अजायब सिंह जी)

कृपाल दा विछोड़ा मेरी हड्डियाँ नूं खा गया।
मंगया सी प्यार ते विछोड़ा झोली तूं पा गया।। । टेक। (2)

दाता भुलां तैनूं किवें कोई माड़ी मोटी गल नही। (2)
मुड़–मुड़ नाम तेरा बुलियाँ ते आ गया।।
मंगया सी.....

किता तैनूं प्यार ओदे बदले च गम मिले। (2)
जिन्दगी नूं गम झोरा हड्डियाँ नूं खा गया।।
मंगया सी.....

सुनदा हाँ खड़ाक जदों किसे दा मै सच्ची–मुच्ची। (2)
लगदा है शायद मेरे वेड़े तूं ही ओ आ गया।।
मंगया सी.....

खोल कुंडी तक 'अजायब' खड़ाक जेहा होया कोई।(2)
करके तरस घर कृपाल ताँ नहीं आ गया।।
मंगया सी.....

केड़ा चंगा केड़ा मंदा

(संत अजायब सिंह जी)

केड़ा चंगा केड़ा मंदा किंझ समझां,
अपने दिल दा यार तकाजा किंझ समझां। । टेक । (2)

जाम भरे हथ सबदे मेरा उणां जाम, (2)
साकी तेरा गलत वतीरा किंझ समझां
किंझ समझां.....

अजब फिज़ा है ज़माने दी बिगड़ गई, (2)
आपस विच इन्हादा लड़ना किंझ समझां।
किंझ समझां.....

ऐह बन्दे जो सारे इको रब दे ने, (2)
इन्हा दा हर रोज उलझना किंझ समझां।
किंझ समझां.....

हर डिगदे नूं सारे धक्का देंदे ने, (2)
हमदर्दी दा मारेया जजबा किंझ समझां।
किंझ समझां.....

पुचाया कित्थे चाहत कृपाल दी ने, (2)
'अजायब' इस बन्दे दा गिरना किंझ समझां।
किंझ समझां.....

कौन कहे मैं

(संत अजायब सिंह जी)

कौन कहे मैं मर जाणां है,
मैं तां कृपाल घर जाणां है।

लमां चौड़ा सागर जेहड़ा,
हौले हौले तर जाणां है।

जीवन दी राह वीच–आई,
मौत मोई ने मर जाणां
है।

जीवन दे नक्शे अंदर,
रंग सावन दा भर जाणां है।

वड्डी सारी उमरां भोगी,
रहना नहीं ए घर जाणां है।

कृपाल दी चर्चा होणी है,
जा जिनां नाम जप जाणां है।

कोई मेरा राह ना रोके,
जाणा है सचमुच जाणां है।

तोरो मैनूं हसके तोरो,
अपने ही मैं घर जाणां है।

जद वी चाहेगा 'अजायब',
खाली पिंजर कर जाणां है।

गम दुनियां दे हैन बथेरे

(संत अजायब सिंह जी)

गम दुनियां दे हैन बथेरे,
केड़ा इश्के दा रोग सहेड़े । टेक ।

हिजर हनेरा आस डगोरी (2)
राह बसलां दे अंत लमेरे। (2)
केड़ा.....

मंजिल चुम्मे पैर ओना दे (2)
दरिया सिदकां दा तरदे जेड़े। (2)
केड़ा.....

कायर समझन दूर दराडे (2)
मंजिल वसदी हिम्मत नेड़े। (2)
केड़ा.....

हर इक रोवे गौं अपने नूं (2)
कौन किसे लई हंजू केरे। (2)
केड़ा.....

आस वी फिरदी बौरी होई (2)
सुन्ने सखने दिल दे वेड़े। (2)
केड़ा.....

सिदक़ जिना दी हड्डी रचया (2)
कौन उनां दा साथ नखेड़े। (2)
केड़ा.....

प्रीत मधानी दिल दी चाटी (2)
इश्क ना जापे मक्खन पेड़े। (2)
केड़ा.....

गल सावन दी आ कोई करिये (2)
मुका देईए हुन सारे झेड़े। (2)
केड़ा.....

'अजायब' नाम दा बलदा दीवा (2)
होर हनेरा चार चुफेरे। (2)
केड़ा.....

गुरु चुप रहिंदे सेवक बोल पैंदे

(संत अजायब सिंह जी)

गुरु चुप रहिंदे सेवक बोल पैंदे,
गुरु घरां च जा वड़दे धक्को–धक्की। (2)

ओये सिखा तेरे ते गुरु दयाल होया,
दया नाल भर गया घर नक्को–नक्की। (2)

सेवा देन नूं मूल ना ढिल करिए,
वददी फुलदी जे देईए हथ्थो–हथ्थी। (2)

लालच माया दा देख गुरु लड़ पैंदे,
विच कचहरीयाँ दे होंण लत्तो–लत्ती। (2)

गल्ला कर कर के पुल बन देंदे,
आशीर्वाद प्रसाद देन लप्पो–लप्पी। (2)

चको ईट ते गुरुआं दा अंत कोई ना,
सेवक कित्थे कित्थे लबदा नस्सो–नस्सी। (2)

झूठे गुरु ते झूठे ही शिष्य जित्थे,
काल रुहाँ नूं सांबदा धक्को–धक्की। (2)

करी ना कमाई गुरु बन बैठे,
दावे झगड़े चलण होण जफ्फो–जफ्फी। (2)

पूरा गुरु ओह जिहदी कमाई पूरी,
रुहाँ सचखंड ले जाये हथ्थो–हथ्थी। (2)

भाग होण ऊंचे ताँ गुरु मिले पूरा,
भागा बाज रह जाये बन्दा तक्को–तक्की। (2)

घट–घट विच मालिक आप बैठा,
गल्लां नाल ना रिझदां कथ्थो–कथ्थी। (2)

झगड़े ताँ मुकदे जे मिले गुरु पूरा,
'अजायब' कृपाल दा आखदा सच्चो–सच्ची। (2)

जीवन सफल बना ले बंदे

(संत अजायब सिंह जी)

जीवन सफल बना ले बंदे जीवन सफल बना लें।। । टेक। (2)

जिसको तूने घर समझा है, यह है एक सरायें,
यह जग चला चली का मेला, इक आए इक जाए।। (2)
साथ नहीं जाती काया तक, माया के मतवाले।
जीवन.....

दीन दुःखी और दुर्बल जन की, करले सेवा करले,
राम नाम के हीरे मोती, इस झोली में भरले।। (2)
कमा सके जितना जीवन में, उतना नाम कमा लें।
जीवन.....

सन्त जनां की बात छोड़ दे, महा अधम तक तर गए,
जो भी चरण शरण में आए, पल में पार उतर गए।। (2)
करनी कर निशकाम भाव से, प्रभु से प्रीत लगाले।
जीवन.....

भव सागर से पार हो जाता, जिसने गुरू का नाम पुकारा,
सिमरन गुरू का रट ले बंदे, हो जाये तेरा छुटकारा ।।(2)
गुरू कृपाल तेरे संग 'अजायब', थोड़ा ध्यान लगा ले।
जीवन.....

जी सतगुरु प्यारे आ मिलो

(गुरुवाणी)

जी सतगुरु प्यारे आ मिलो मैंनू (2)
तरस रही जान है मेरी (2)

जी तेरा कीता जातो मैं नाही (2)
जी मैनु जोग कीतोई (2) जी सतगुरु....

जी निरगुण हारे कोई मैं गुण नाही (2)
जी आपे तरस पियोई (2) जी सतगुरु....

जी तरस पया मैं रहमत होई (2)
जी सतगुरु साजन मिलया (2) जी सतगुरु....

जी 'नानक' नाम मिले तां मैं जीवां (2)
जी तन मन थीवें जी हरया (2) जी सतगुरु....

जे तूं ना आंदा रामा

(गुरुवाणी)

जे तूं ना आंदा रामा, प्रहल्लाद डोल जांदा..... (2)
जे तूं ना आंदा साहिबा, संसार डोल जांदा..... (2)

जुग–जुग भक्ति उपाय के..... (2)
पैज रखदा आया
रामा प्रहल्लाद डोल.....

हरनाकश्यप दुष्ट हर मारीया (2)
प्रहल्लाद तराया
रामा प्रहल्लाद डोल.....

अहंकारी निंदका पीठ दे (2)
नामदेव मुख लाया
रामा प्रहल्लाद डोल.....

जिन 'नानक' ऐसा हर सेविया (2)
लै अंत छुड़ाये
रामा प्रहल्लाद डोल.....

जो बक्शों हमको बड़ी है बक्शीश

जो बक्शों हमको बड़ी है बक्शीश,
अगर न बक्शों तो चारा क्या है। । टेक।

ना घर ना दर है, जमी ना जर है।
है सब तुम्हारा, हमारा क्या है। (2)
जो.....

इधर भी तुम हो, उधर भी तुम हो, (2)
यहां भी तुम हो, वहां भी तुम हो।
न हम है तुम बिन, न वह है तुम बिन।(2)
जहाँ का तुम बिन सहारा क्या है।।
जो.....

खुदाई तेरी, जुदाई तेरी,
जुदा भी तुम हो, खुदा भी तुम हो। (2)
उठा दो गर तुम, वो हम का परदा। (2)
बिगड़ता उसमें तुम्हारा क्या है।
जो.....

कमां के अन्दर, है पत्ता पत्ता,
है ताबे फरमान, ज़र्रा ज़र्रा। (2)
किसी की मानो, रहम है वल्लाह, (2)
अगर न मानो इज़ारा क्या है।
जो.....

है रंक तेरा, शहंशाह तेरा,
यह कुफ्र है, कहना मेरा–मेरा। (2)
है जैसा उसको, समझना वैसा, (2)
सिवाय उसके कफारा क्या है।
जो.....

हे सावन हे कृपाल

(संत अजायब सिंह जी)

हे सावन हे कृपाल।। । टेक ।(2)

दुर्गुण क्या है यह मत देखो, दया करो प्रभु दिशा दिखाओ।
तुम तो पारसमणि हो सतगुरु, इस लोहे को स्वर्ण बनाओ।।(2)
जुड़ा रहे मन चरण कमल से, इतना सा कर दो उपकार। हे....

सब में प्रेम भावना भर दो, नफरत का गुरु नाम मिटा दो।
सबके संकट काटो सतगुरु, ताप शाप संताप मिटा दो।।(2)
भक्ति दान दे शक्ति दान दे, भर दो भक्ति का भंडार। हे.....

डगमग–डगमग डोल रही है, इस नइया को पार लगाओ।
मै हूँ पतित, पतित पावन तुम, अपने नाम की लाज रखाओ।।(2)
जन्म–जन्म के बंधन काटो, कब से पड़ा हुआ हूँ द्वार। हे.....

तेरी चिंता राम करेंगे, तज दे चिंता सारी।
गुरु का सेवक हो जाता है, हर सुख का अधिकारी।। (2)
'अजायब' कृपाल का नाम सत्य है, सुपना है संसार। हे.....

तुम से मेरी प्रीत पुरानी

(संत अजायब सिंह जी)

तुमसे–तुमसे मेरी प्रीत पुरानी, हे कृपाल गुरू प्यारे,
प्यारे, हे कृपाल गुरू तुमसे। । टेक । (2)

दरवाजे पर पड़ा हुआ हूँ,
हाथ पसारे खड़ा हुआ हूँ।
अखियां प्यासी दर्श दिखाओ,
दया करो प्रभु पार लगाओ।।
दीन बंधू करुणा के सागर,
मेरी सुध कैसे बिसरानी, हे.....

किरपा करी संत जन तारे,
सतगुरू तुमने अधम उबारे।
शिबरी के झूठे फल खाये,
सब शरनागत कंठ लगाए।।
तुमने सबके संकट काटे,
सबकी पीड़ा जानी, हे.....

हे सतगुरू मैं शरन तुम्हारी,
तुम सागर मै बूंद तुम्हारी।
तुम ही माता पिता और भ्राता,
मैं हूँ याचक तुम हो दाता।।
'अजायब' यही जन्मों की गाथा,
यही जन्म–जन्म की कहानी,हे.....

दिल का हुजरा साफ़ कर

(संत तुलसी साहिब)

दिल का हुजरा साफ़ कर जाना के आने के लिये।
ध्यान ग़ैरो का उठा उसके बिठाने के लिये ।। ।टेक।

चश्मे दिल से देख यहाँ जो जो तमाशे हो रहे।
दिलसितां क्या क्या है तेरे दिल सताने के लिये।।

एक दिल लाखो तमन्ना उस पै और ज़्यादा हविस।
फिर ठिकाना है कहां उसके टिकाने के लिये।।

नकली मंदिर मसजिदों में जाये सद अफसोस है।
कुदरती मसजिद का साकिन दुःख उठाने के लिये।।

कुदरती काबे की तू मेहराब में सुन गौर से।
आ रही धुर से सदा तेरे बुलाने के लिये।।

क्यों भटकता फिर रहा तू ए तलाशे यार में।
रास्ता शाहरग में है दिलबर पै जाने के लिये।।

मुरशिदे कामिल से मिल सिदक़ और सबूरी से तक़ी।
जो तुझे देगा फ़हम शाहरग के पाने के लिये।।

गोशे बातन हो कुशादा जो करे कुछ दिन अमल।
ला इलाह अल्ला हू अकबर पै जाने के लिये।।

यह सदा तुलसी की है, आमिल अमल कर ध्यान दे।
कुन कुराँ में है लिखा, अल्ला हू अकबर के लिये।।

दिल टूटदे आबाद करे

(संत अजायब सिंह जी)

दिल टूटदे आबाद करे,
गुरू कृपाल सोहणे नूं 'अजायब' याद करे । टेक ।

आसाँ भरे स्वास मुक चल्ले, (2)
तेरीयाँ जुदाईयाँ दे हंजु अँखियाँ चों मुक चल्ले। (2)

सिफता तेरीयाँ मैं दसदीं रवाँ, (2)
अँखियाँ च वस सोहणेया तैनूं हरदम तकदी रवाँ। (2)

साडी जिंदगी सँवार देवे, (2)
तेरे जेहा नहीं लबना पंजां डाकूआ मार देवे। (2)

दुनियां खुशियाँ च हँसदी ऐ, (2)
तैथों बिना जग सुन्ना भावे दुनियां पई वसदी ऐ। (2)

दे दर्श मन भिन्ना हो जावे, (2)
साडे वल तक सोहणेया साडी जिंदगी दा बीमा हो जावे। (2)

सानूं प्यार सिखा जावीं, (2)
विछड़ीया रूहाँ नूं सचखण्ड पहुँचा जावीं। (2)

बुरे दुःख ने जुदाईयाँ दे, (2)
दिन रात रोंदी रवाँ फिराँ वांग शुदाईयाँ दे। (2)

दुःख दिल दे फरोला मैं, (2)
तैथों बिना कौन सुने घुंडी दिल दी खोलां मैं। (2)

असीं औगुण हारे हाँ, (2)
दया कर बक्श लवीं तेरे जीव विचारे हां। (2)

मौज अपनी च पा फेरा, (2)
होर सब ढ़ाईयाँ ढेरियाँ इक रखेया सहारा तेरा। (2)

महके फुलाँ बाग पया, (2)
खुशियाँ च रोना पै गया मेरा लुटेया सुहाग गया। (2)

प्यार तकड़ी च तुलदा नहीं, (2)
गुरू कृपाल बिना 'अजायब' कौडी दे मूल दा नहीं। (2)

देखा है जब से हमने सावन जमाल तेरा

(संत कृपाल सिंह जी)

देखा है जबसे हमने, सावन जमाल तेरा,
सावन जमाल तेरा, सावन जमाल तेरा।

मजनू बना रहा है, मुझको ख्याल तेरा,
मुझको खयाल तेरा, मुझको ख्याल तेरा।

हर गीत गा रहा है, हर बाल बाल तेरा,
हर बाल–बाल तेरा, हर बाल बाल तेरा।

बंदा तो चीज़ क्या है, हर जानों हर मुलक ने,
माना कमाल तेरा, सावन जमाल तेरा।
देखा है जबसे हमने.....

बन्दे नाम गुरु दा जप लै

(संत अजायब सिंह जी)

बन्दे नाम गुरु दा जप लै इक दिन सोबन आएगा । टेक । (२)

कबीर सुत्ता क्या करे उठ के ना जपे मुरार। (२)
इक दिन सोबन आयेगा लम्बे गोड पसार, इक दिन.....

उमर बीत गई सुत्तियाँ सारी अजे जाग ना आई। (२)
आखिर नू पछतवेंगा जम चोट नगारे लाई, इक दिन.....

नाम जपन दा भुल गया वेला जाल काल ने पाया। (२)
विषयाँ दे विच मस्त हो गया माया ने भरमाया, इक दिन.....

वेला हथ ना औना मुड़के सतगुरु ने समझाया। (२)
उच्चे भाग जाग पए तेरे मानस जन्म थिआया, इक दिन.....

विच दरगाह दे सतगुरु बाजों बात ना पुछदा कोई। (२)
'अजायब' कृपाल बिना जी मिली कीते ना ढोई, इक दिन.....

नाम जपा सुख पाया

(संत अजायब सिंह जी)

नाम जपा सुख पाया, जिसने नाम जपा। (2)

मात पिता भाई सुत दारा, साथ न कोई जायेगा,
अन्त समय में धन और दौलत, कुछ भी काम न आयेगा। (2)
यह संसार मीत मिथ्या है, मिथ्या इसकी माया।।
जिसने.....

उनकी गिनती कितनी होगी, परमेश्वर ही जाने,
मिट्टी में मिल मिट्टी हो गये, अनगिन राज घरानें। (2)
राम भजन कर तरे पातकी, जग में नाम कमाया।।
जिसने.....

जिस पल याद किया भक्तों ने, अपनी सुध बिसराए,
महा सिंहासन तज नंगे पैरों, राम प्रभु दौड़े आए। (2)
पलक झपकते पीड़ा हर ली, पल में कष्ट मिटाया।।
जिसने.....

मारे असुर सन्त जन तारे, झंडा ऊँचा किया धर्म का,
जो प्रभु दे दे हंस कर ले ले, कर शुकराना उसी का।(2)
किरपाल 'अजैब' निमाणे का, नाम से मेल कराया।।
जिसने.....

नाम साहेब दा चंबे दी बुटी

नाम साहेब दा चंबे दी बुटी। (2)
सतगुरु मन मेरे विच लाई प्यारेयो। (2)
सतसंग दा नित पानी देके। (2)
कर लई दून सवाई प्यारेयो। (2)
अंदर बूटी महक मचाया। (2)
जां फुल्लां ते आई प्यारेयो। (2)
जीवे कृपाल सोहना सतगुरु। (2)
जिन ऐ बूटी लाई प्यारेयो। (2)
कृपाल सिंह नूं सिमर के पापी तरे अनेक। (2)
कहें 'अजायब' ना छोड़िये कृपाल सिंह दी टेक। (2)
सुन फरियाद पीरां दे पीरां। (2)
इक आख सुनावा तैनू प्यारेया। (2)
तेरे जेहा मैनूं इक वी ना मिलना। (2)
मेरे जेहींया तैनूं लखी प्यारेया। (2)
फोल ना कागज बदीयां वाले। (2)
दर तो धक्कीं ना मैनूं प्यारेया। (2)
जे मेरे विच ऐब ना होंदे। (2)
तूं बक्शींदा कीनुं प्यारेया। (2)
तिल तिल दा अपराधी तेरा। (2)
रती–रती दा मैं चोर प्यारेया। (2)
पल–पल दा मैं गुनही भरेया। (2)
बक्शी अवगुण मेरे प्यारेया। (2)

किसे काम के थे नहीं कोई ना कौडी दे। (2)
कृपाल सिंह सतगुरु मिलया भई अमोलक देह। (2)
दूसिर का बालक होता भक्ति बिना कंगाल। (2)
कृपाल गुरु कृपा करी हर धन दे कियों निहाल। (2)
गद् गद् बानी कंठ में आंसू टपके नैन। (2)
वो तो बिरहन कृपाल की तड़फत है दिन रैन। (2)
हाय हाय कृपाल कद मिले छाती फाटी जाए। (2)
ऐसा दिन कद होवेगा दर्शन करु अधाये। (2)
बिन दर्शन कल ना पड़े मनुआ धरत ना धीर।(2)
'अजायब' गुरु कृपाल बिना कौन बनावे धीर।(2)
तुद अग्गे अरदास हमारी। (2)
जियों पिंड सब तेरा प्यारेया। (2)
कहे नानक सब तेरी वडियाई। (2)
तेरा कीता न जाने मेरा प्यारेया। (2)
तेरा कीता मैं जातो नाहीं। (2)
मैनू जोग की तोई प्यारेया। (2)
मैं निर्गुण हारे कोई गुण नाहीं। (2)
आपे तरस पयोई प्यारेया। (2)
तरस पया मैं रहमत होई। (2)
सतगुरु साजन मिलया प्यारेया। (2)
'नानक' नाम मिले तां जीवां। (2)
तन मन थीवें हरेया प्यारेया। (2)

बन के रूहाँ दा व्यापारी

(संत अजायब सिंह जी)

बन के रूहाँ दा व्यापारी आया, सावन सचखंड दा। ।। टेक।।

गुरु नानक दी सिखया भुल गये।
साडा गुरु नाल मेल कराया, सावन सचखण्ड दा।। बन के.....

गुरु पीर छड्डे मढ़ियाँ पूजन, लग पये।
आ के सावन ने समझाया, सावन सचखण्ड दा।। बन के.....

गुरु बिना बंदा जमदा मरदा।
बानी विच गुरु जी ने फरमाया, सावन सचखण्ड दा।। बन के.....

रूह साडी मैली पापां कर के।
सच्चे नाम दा साबन लाया, सावन सचखण्ड दा।। बन के.....

बन्दगी करदेया पिंजरा सुक जाए।
सुत्ते होयाँ रब्ब किसे वी ना पाया, सावन सचखण्ड दा।। बन के.....

घट घट विच बेहके सब नूं देखे
ओह भुलदा ना किसे दा भुलाया, सावन सचखण्ड दा।। बन के.....

लगिया सी रोग 'अजायब' नूं चिरदा।
दारु नाम दा देके ठाया, सावन सचखण्ड दा।। बन के.....

बन्दे दियाँ आसा सदा होंदियां ना पूरियाँ

(संत अजायब सिंह जी)

बन्दे दियाँ आसा सदा होंदिया ना पूरियाँ।
नाम तो बगैर सभै रहदियाँ अधूरियाँ। । टेक । (२)

कदे दुःख कदे सुख जीव उत्ते औंदा ए।
आप कीते कर्मा नूं आपे भुगतौंदा ए। (२)
लोक लाज विच फंस होईयाँ मजबूरियाँ।।नाम तो बगैर.....

आया नाम जपने नू माया जाल पा लिया।
दाते नूं विसार दाताँ विच चित्त ला लिया। (२)
गुरु तो बगैर कदे पैंदिया न पूरियाँ।। नाम तो बगैर.....

बन के परौणा थोड़ें दिना लई आया सैं।
भुल गया घर चित्त एथे ही लगाया तै। (२)
धीयाँ पुत्राँ विच अड़िया पौना ए भसूड़ियाँ।।नाम तो बगैर....
.

मान वडियाई जग विच छड जानी है।
खाली हथ झाड़ टुर चलया प्राणी हैं। (२)
सच्चे नाम बिना चढ़ गईयाँ मगरुरियाँ।। नाम तो बगैर.....

लखाँ पातशाहियाँ लखाँ लशकर कूडे ने।
गुरु तो बगैर सब काज अधूरे ने। (२)
'अजायब' कृपाल बिना पैन्दियाँ ना पूरियाँ।।नाम तो बगैर.....

मार चौकड़ी कदी ना बैठा

(संत अजायब सिंह जी)

मार चौकड़ी कदे ना बैठा, जग विच संत कहोंदा है।
सिमरन भजन कदी ना किता, रब नूं मिलना चौंदा है।। । टेक। (2)

होमें हंगता कड्डे ना अंदरो, गुण धारे नरमाई दे,
जाहर रब दुनियां ते हैं पर, मिलदा नाल कमाई दे। (2)
बिना कमाई आप की तरना, दुनियां होर डुबौंदा है।।
सिमरन.....

घट–घट दे विच वसदा होया, है अलेप कुछ लेप नहीं,
हेर फेर दे करने वाले, पावें उसदा भेद नहीं। (2)
बिना कमाई पल्ले कुछ ना, अमृत जाम पिलौंदा है।।
सिमरन.....

अन्तरयामी पुरख अनामी, सच्चा ओह इन्साफ करे,
संगत नूं जो धोखा देंदा, रब ओनूं क्यों माफ करे। (2)
जो नरका विच आप ही डुबदा, संगत किंवे बचौंदा है।।
सिमरन.....

शब्द ना सुनिया भेद ना पाया, अन्दर झाती पाई ना,
मालिक जिस थाँ प्रकट होंवे, अंदर करी सफाई ना।(2)
आप हनेरा अंदर फिरदा, दुनियां नूं रब दिखौंदा है।।
सिमरन.....

हो गई भ्रष्ट जिन्हां दी, रब नूं धोखा करदे ने,
ऐसे जीव ना बक्शे जांदे, नित ही जमदे मरदे ने। (2)
'अजायब' नूं कृपाल प्यारा, सिमरन भजन सिखौंदा ए।।
सिमरन.....

मैनुं छड के कली नूं तूर चलेया

मैनुं छड के कली नू तूर चलेया,
ते मेरे पल्ले की रह गया । । टेक।

फुलां नालों कुलेया, बहारां नालों प्यारेया,
आजा इकवारी मेरे दिल दे सहारेया।
आवीं वैद्या दुखःड़े हटान वालेया,
गल सुन जावीं माहीं मेरे जान वालेया।।
ते मेरे.....

दस मैनुं किने तैनूं किता मजबूर वे,
केड़ी गलों प्यारेया वे चला मैथों दूर वे।
होके अपना ते गैराँ संग रलेया।।
ते मेरे.....

मुख चन जेहा मेरे वलों मोड़ के,
मैनू गमां दे चनाह विच रोड़ के।
दस जिन्दगी गुजारां किंवे कलेयां।।
ते मेरे.....

तेरे राहा विच राह बन गईया,
मुक जान वाला साह बन गईया।
की लबेया बनाके मैनूं झलेया।।
ते मेरे.....

मैंनु प्यार दे चबारे ते चढ़ाके,
पौड़ी खिच लई तूं अखियाँ मिलाके।
जदों याद तेरी औंदी दिन ढलेया।।
ते मेरे.....

मेहरांवालिया साँईयाँ रखीं चरनां दे कोल

(गुरुवाणी)

मेहरांवालिया साँईयाँ, रखीं चरनां दे कोल।
रखीं चरनां दे कोल, रखीं चरनां दे कोल। मेहरांवालिया.....

मेरी फरियाद तेरे दर अग्गे, होर सुनावा किन्नु,
खोल ना दफ्तर ऐबां वाले, दर तो धक्क ना मैनूं।
दर तो धक्क ना मैनूं, रखीं चरनां दे कोल।। मेहरांवालिया.....

तें जेहा मैनूं होर ना कोई, मैं जेहे लख तैनूं,
जे मेरे विच एब ना होंदे, तू बक्शींदा किनुं।
तू बक्शींदा किनुं, रखीं चरनां दे कोल।। मेहरांवालिया.....

जे अवगुन वेखे साहिबा ताँ कोई नाही ठाव,
जेते रोम शरीर दे, उसतो वद गुनाहों,
उसतो वद गुनाहों, रखीं चरनां दे कोल।। मेहरांवालिया.....

ओखे वेले को नहीं, ना बाबुल वीर ना मावं,
सभी धक्का देवंदे, मेरी कोई ना पकड़े बाहं,
कोई ना पकड़े बांह, रखीं चरनां दे कोल।। मेहरांवालिया.....

तू पापी पार लंघावंदा, तेरा बक्शनहारा नाव,
बिन मंगया सबकुछ देवंदा, मेरा ठाकर अगम अगाह,
मेरा ठाकर अगम अगाह, रखीं चरनां दे कोल।।मेहरांवालिया.....

वेख ना लेख मथ्थे दे, मेरे कर्मा ते ना जावीं,
रखीं लाज बिरद दी सतगुरु, अपनी भक्ति लावीं,
अपनी भक्ति लावीं, रखीं चरनां दे कोल।। मेहरांवालिया.....

ऊंचे टिल्ले चढ़ चढ़ वेखां, बिट–बिट अँखीं झांका,
दरद बिछोड़े प्रीतम वाले मैं रो–रो मारां हांका,
मै रो–रो मारा हांका, रखीं चरनां दे कोल।। मेहरांवालिया.....

लंघ गया गुरु कलगियां वाला, मेरी अँखी अग्गे सँईयों,
जानी पिच्छे जान असाडी, नैना रस्ते गईयों
नैना रस्ते गईयों, रखीं चरनां दे कोल।। मेहरांवालिया.....

रस्ते विच गुरु जी तेरे, ऐ दिल फरश बिछावां,
सोहने चरन तुहाडे जोड़ा, ऐ दो नैन बनावां,
ऐ दो नैन बनावां, रखीं चरनां दे कोल।। मेहरांवालिया.....

बिछड गया तेरे चरनां तो मैं, खोटेया कर्मा करके,
हरि जी मैंनु बक्श लवो, प्रभु अपनी कृपा करके,
अपनी कृपा करके, रखीं चरनां दे कोल।। मेहरांवालिया.....

जवानी गई बुढ़ेपा आया, उमरां लगी किनारे,
बीते जो तेरे चरनां विच सोई भले दिहाड़े,
सोई भले दिहाड़े, रखीं चरनां दे कोल।। मेहरांवालिया.....

बिरहों अग्नि अंदर जिवडा, ज्यों कोयला हो जावें,
जिवे रसायनी सोने वाला, उलझ–उलझ मर जावें,
उलझ–उलझ मर जावे, रखीं चरनां दे कोल।। मेहरांवालिया.....

मेरे मनमोहन कृपाल तुझे याद करूं

(संत अजायब सिंह जी)

मेरे मनमोहन कृपाल तुझे याद करूं।
तेरी यादों में रो–रो कर इक फरियाद करूं,
मैं इक फरियाद करूं। । टेक।

क्यों दिया तूनें, मूझे तन करके विछोड़ा। (2)
क्यों मुझे तूनें बीच दुनियां में छोड़ा। (2)
तेरे बिन मेरा, यहाँ कौन किसे बखान करूं।।
तेरी यादों .....

मैं तो नालायक, बेखबर दुनियां दिवानी से।(2)
मै ना समझा किसी ओर के समझाने से। (2)
समझूँ भी कैसे, आ समझा यही पुकार करूं।।
तेरी यादों .....

मैं ना जाना, जाना ना इस दिवाने को। (2)
दुनियां तो दौड़ी सिर्फ दुनियां के खजाने को। (2)
मैं तो बस रोया, कृपाल–कृपाल करूं।।
तेरी यादों .....

ना समझ था, कई दिनों बाद ही समझा। (2)
नहीं देगा दर्श तन करके नाम में रमजा। (2)
याद करके तेरी यादें, रोज रोया करुं।।
तेरी यादों .....

बहुत मैं रोया, रोया तुझे याद करके। (2)
पर ना आया तूं मेरे पास कभी तन करके। (2)
'अजायब' हैं तेरा, रहे तेरा यही अरदास करूं।।
तेरी यादों .....

मुड़ घर आजा

(संत अजायब सिंह जी)

मुड़ घर आजा सोहणे कृपाल वे,
आके देख लै संगत दा हाल वे। (2)
होए फिरदे सुदाई, कोई होवे ना सहाई,
यादां तेरीयां च जिंदड़ी रुलाई वे। । टेक ।

घर अपने तूं सजना आजा,
सानूं रोंदया नूं फेर हसा जा। (2)
तैनूं तक के कृपाल हो जाइये वे निहाल,
साडी जान विच जान लयाई वे, मुड़ घर.....

आजा दस मैंनू किंज मैं पुकारा
कर गलां आप देजा तूं हुंगारा। (2)
घुंडी दिल वाली खोल, आजा हस के तूं बोल,
आके होजा हुण आप सहाई वे, मुड़ घर.....

जिना अज तक दाता असीं रोए हां
ऐना अखरां च अथरु परोए आ। (2)
आजा होर न रुला, ऐवे जिंद ना सता,
सुन संगत दी आ अरजोई वे, मुड़ घर.....

किवें मन लां मैं भाणां करतार दा,
जेड़ा इक पल वी नहीं सी विसार दा। (2)
अजायब होया मजबूर, दस मेरा की कसूर
आजा अखियाँ तो पासे ना खलोई वे, मुड़ घर.....

रबा लख–लख शुक्र मनावाँ

(बुल्लेशाह)

रबा लख–लख शुक्र मनावाँ,
जे कदे मेरा यार मिल जावे। ।। टेक।। (2)

मैं किदरे मेरा माही किदरे,
सोहना मिलदा नजर न आवे।
दिल दी कूक सुने ओ शाला किते इक वारी आ जावे,
ओदा बनके मैं फिरां परछावाँ।। जे कद.....

की मेरे नाल कर गयों हद वे,
मेरे मगरों विछोड़ेया तूं लथ वे।
जावे मेरी जान नूं तूं डाडा रोग लाया।।
दस खाँ विछ़ोडेया मैं तेरा की गँवाया,
ओदे रावा विच अखियाँ विछावाँ।। जे कदे.....

ओने केड़ी गलों नज़राँ ने फेरीयाँ,
रातां जाग–जाग लंगदियाँ मेरीयाँ।
लगे दिल उते जख्म दिखावां।। जे कदे.....

माही मिल पए तां खिड़–खिड़ हँस पां,
मैं वी उजड़ी निमाणी किते वस पां।
ओदे प्यार दा मैं जापा सरनावाँ।। जे कदे.....

नाही बोलेया ते नाही मैथों रूसेया,
अल्लाह जाने माही किवे मैंथों खुसेया।
ओदे पैरां दी मैं धूड़ बन जावाँ।। जे कदे.....

रोंदी मैं दर-दर फिरदी

(संत अजायब सिंह जी)

रोंदी मैं दर–दर फिरदी, कोई न दरदी वे,
धक्के मैं बहुते खादे, मिली ना हमदर्दी वे, (2)
आ हुण आ के बचा, वे मेरे साइयाँ वे, आ हुण गल नाल ला। (2)

दुनियां है ताने देंदी, करदी मखौल वे,
दब–दब के रगां मेरीयाँ, लबदी है फोल वे। (2)
आ मेरी लाज रखा, वे मेरे साईयाँ वे, आ हुण गल नाल ला। (2)
रोंदी मैं.....

जद दा तूं नजरां सामों, होया हैं पासे वे,
जान मेरी तड़फे हरदम, लोका भाणे हासे वे। (2)
आ हुण नजरां मिला, वे मेरे साईयाँ वे, आ हुण गल नाल ला। (2)
रोंदी मैं.....

रुह मेरी रोवे हरदम, तड़फे मेरी जान वे,
दुनियां पई वसदी सारी, कोई ना पहचान वे। (2)
आ हुण ठण्ड वरता, वे मेरे साईयाँ वे, आ हुण गल नाल ला। (2)
रोंदी मैं.....

दिल दा मैं हाल सोहणया, किस नूँ सुनावाँ वे,
रोंदा दिल मेरा हरदम हस–हस बिखावा वे। (2)
आ हुण दिल परचा, वे मेरे साईयाँ वे, आ हुण गल नाल ला। (2)
रोंदी मैं.....

मेरा किरपाल सोहणां, कंत रंगीला वे,
रोंदा अजायब बैठा, कर कोई वसीला वे। (2)
आ हुण रोंनका लया, वे मेरे साईयाँ वे, आ हुण गल नाल ला। (2)
रोंदी मैं.....

संतां दा करलै मना

(संत अजायब सिंह जी)

सन्तां दा करलै संग मना चढ़ जाए नाम दा रंग मना। (2)
हौंमे नू अंदरों, हौमें नू अंदरो कडना ए, आदत भैड़ी नूं छड़ना ए।(2)
सतगुरु दी शरणी, सतगुरू दी शरणी पैणां ए नाम जप के लाहा लैणां ए।(2)

तैनू मिलया मानस जामा ओए तू साम्भ लवीं इन्साना ओए। (2)
लाहा लैन प्राणी, लाहा लैन प्राणी आया ए,
माया ने जाल पसाया ए।।
सतगुरु दी शरणी, सतगुरू दी शरणी.....

कर बन्दगी सोहना बन्दा है बन्दगी दे बाजों गन्दा ऐ। (2)
खाली ना जाए, खाली ना जाए दम अड़िया,
ऐह चम्म किसे नहीं कम अड़िया।।
सतगुरु दी शरणी, सतगुरू दी शरणी.....

सानू नूरी दर्श दिखा दाता, साडी आंख दा पड़दा लाह दाता (2)
बुरे सहन जुदाइयाँ (2) दुख अड़या सानूं तेरे दर्श दी भुख अड़या। (2)

असी जन्म जन्म दे मैल भरे उजले सतगुरु कृपाल करे। (2)
ओह तारण आया, ओह तारन आया तारेगा,
'आजयब' दे काज सँवारेगा।
सतगुरु दी शरणी, सतगुरू दी शरणी.....

सतगुरू माफ करी

(संत अजायब सिंह जी)

सतगुरू माफ करी, मैं हां भुलया जीव निमाणा।
पल तेरे दर तो बिना, (2)
कोई दिसदा ना होर ठिकाणा।
सतगुरु माफ करी....

मेरीयां भुला नूं दाता, तूं ही माफ करना,
तेरी दया बिना, मेरा नहीं ओ सरना। (2)
मैनूं तूं विसार ना देवीं,
कोई.....

कागज़ गुनाहवाला, तूं ही दाता पाड़ना,
बुरे ते बुराई वाले, पासे तो है ताड़ना। (2)
मेरे ते दया करनी,
कोई.....

जप तप कर्म कांड, धूणे वी तपा लऐ,
भोग के मैं भोग दुःख, जिन्दड़ी नूं ला लऐ। (2)
इलाज मेरा तैं करना,
कोई.....

नाम दा तूं दान देके, करना सुधार है,
लख लख जींवा दा ते, करेया उद्धार है। (2)
'अजायब' तेरे दर आ गया,
कोई.....

सईयो नी मैं कमली होई

(संत अजायब सिंह जी)

सईयो नी मैं कमली होई, लोक कहन सौदाई। (2)
दिलदा महरम किते नहीं दिसदा, फिरदी हाँ बौराई। ।।टेक।।(2)

लोकी ताने मेणे कसदे, गलां दूण सवाईयां, (2)
दिल मेरा रोवे कुरलावे, देंदा है दुहाईयां।
सँइयो.....

दिलदी रमज दुखांदे चरचे, किस नू आख सुनावां, (2)
मै ततड़ी तेरा राह पई तकदी, आ सुण दिल कुरलांया।
सईयो.....

ना मैंनू समझ ना समझे ए मन, मन फिरदा है बौराया, (2)
अंदर बाहर आवां जावां, रुह वास्ता पाया।
सईयो.....

तेरा सोहना रुप देखन नूं, दिल देंदा है दुहाईयाँ, (2)
लोकां भाणें एशां माणा, मै बद किस्मत किजं समझावां।
सईयो.....

आ कृपाल मिल साईयां मेरे, 'अजायब' आख सुनावे, (2)
जिस तन लागे सोई तन जाणे, होर कौन आख सुनावे।
सईयो.....

सोहने सतगुरु दा अज जन्म दिहाड़ा ए

(पाठी जी)

सोहने सतगुरू दा अज जन्म दिहाड़ा ऐ (2)
जनम दिहाड़ ए भागां नाल आया ऐ
सतगुरु प्यारे दा अज दर्शन पाया ऐ ।।टेक।।

अज जन्म दिहाड़ा दी, बड़ी शान निराली ऐ,
मेरे सोहने प्रीतम ते, अज वखरी लाली ऐ।
चोला बदलके तू, अजायब सदाया ऐ।।

ऐ नूरी मुखड़ा जी, अज जग विच आया ऐ,
लखां दुःखी गरीबां नूं, गुरां आन बचाया ऐ।
पिता लाला सिंह नूं जी , अज लाल कमाया ऐ।।

तेरे चोज निराले ने, तेरी शान निराली ऐ,
तूं आके प्रीतम जी, करदा रखवाली ऐ।
नूर पुराना है, नवा चोला पाया ऐ।।

रब जग विच आया ए, जावां बलिहारी मैं,
कोई पुछदा ना मैंनूं, फिराँ विचारी मैं।
अपनी जान मैंनूं, रब आन बचाया ऐ।।

नानक बन आवे तूं, कदे दास कबीरा जी,
कदी अंगद अर्जुन तू, कदे शाह फकीरा जी।
तुलसी बन गोबिन्द ने, स्वामी सदाया ऐ।।

कदी बन जयमल आवे, शिव दयाल स्वामी जी,
रब बन अजायब आवे, कृपाल अनामी जी।
रब सावन बनाया ऐ, अमृत बरसाया ए।।

अल्लाह ईश्वर दा, मैं जनम मनौंदी आ,
तूं बक्श लवीं मैंनू, तेरे तरले पौंदी आं।
'जथ्थेदार' नमाणे ने, तेरा भेद न पाया ऐ ।।

साडे वल मुखड़ा मोड़ प्यारेया

(संत बुल्लेशाह)

साडे वल मुखड़ा मोड़ प्यारेया
साडे वल मुखड़ा मोड़ ।। टेक ।।

आपे ही तूं कुंडीयां लाईयां, (2)
आपे खींचदा डोर प्यारेया। (2)
साडे वल.....

अरश फरश तो बाँगा मिलिया, (2)
मक्के पै गया शोर प्यारेया। (2)
साडे वल.....

डोली पाके लै चले खेडे, (2)
उजर न चलदा जोर प्यारेया। (2)
साडे वल.....

जे भाए तैनू खेडे प्यारे, (2)
डोली पा किसे होर प्यारेया। (2)
साडे वल.....

'बुल्ले शाह' असीं मरना नहीं, (2)
मर गया कोई होर प्यारेया। (2)
साडे वल.....

सावन दा तूं लाल जी

सावन दा तूं लाल जी, कृपाल जी, सारे जग दा तूं वाली,
आई तेरे दरबार जी, झोली भर देयो खाली। । टेक।

मेरे जेइयाँ तैनूं लखां ते हजारां (2)
मैं भी ताँ खड़ी सतगुरु, तैंनू पुकारां (2)
फँसी हाँ विच मझधार दे, तेरे द्वारे वे,
आई रुलदी रुलांदी, गले लगाले सतगुरु प्यारेया,
मेरी पेश ना जांदी। सावन दा तूं.....

कीते सी कौल दाता आके निभा जा (2)
भुल जा भुलां मेरी, दिल च समा जा (2)
खुले हैं सारे रास्ते, तेरे वास्ते मेरे सतगुरु प्यारे,
कट लवांगी सारे दुःखड़े,
इक तेरे सहारे। सावन दा तूं.....

चंदा वी रो–रो के, बदलां च लुक गया (2)
मेरीयां अखियां दा, पानी वी सुक गया (2)
मुक गई सारी रात वे, होई प्रभात वे,
तूं अजे वी ना आया, की करां मेरे सोहणयां,
दिल भर–भर आया। सावन दा तूं.....

सारी उमर तेरी, तांघ विच रोवांगी (2)
झूठी है सेज सच्ची, सेज उत्ते सोवांगी (2)
दासी कहे कृपाल वे, दीन दयाल वे,
झूठा जग है सारा, सच्चा रिश्ता है,
तुम्हारा हमारा। सावन दा तूं.....

लानत ओए लानत तैनूं

लानत ओए लानत तैनूं (2) करमां दे मारेया।
अपना तू चंगा मंदा कदी ना विचारेया (2)।।टेक।।

गफ़लत दी चादर ओय तूं (2), सो गया तान के।
पैरी कुहाड़ा मारया मूरखा तूं जाणके। (2)
भजन न किता एंवे (2), वक्त गुजारेया।।
अपना तू....

आकड़ के टुरदा जावें (2), ओकड़ा तू मारदा।
अपनी हस्ती नूं मूरख क्यों नहीं संभालदा। (2)
जिसने गरूर कीता (2), बाजी वो हारेया।।
अपना तू....

पावे चमकीले वस्त्र (2), इतर लगावें तूं।
काल नगारा वजे फिर पछतावें तूं। (2)
छडना जदों पै गया (2), कोठा लीपीया सँवारेया।।
अपना तू....

वड्डे वड्डे राजेयांदे (2), दिसदे ना निशान ओये।
जिथ्थे सन हसदे खेड़े ओथे शमशान ओये। (2)
कबराँ हन ओथ्थे जिथ्थे (2), महल उसारेया।।
अपना तू....

विषयाँ ते विकाराँ वल (2), मन तेरा जावंदा।
सतगुरु दे भजन वल्ली जरा भी न आवंदा। (2)
शरम हया ना आवे (2), तैनूं ओ नकारेया।।
अपना तू....

हार रानी दे गले विच फेर पैंदा

(संत अजायब सिंह जी)

हार रानी दे गले विच फेर पैंदा,
मोती सीने च सल पवाऐ पहिला। (2)

पड़दा कपड़े दा तन ते फेर होवे,
रुह अपना आप पँजाए पहिला। (2)

गहिना सोबदा फेर तन सुंदरी दे,
सोना भट्ठिया विच तखा ऐ पहिला। (2)

भाडां किसे दी प्यास बुझाये पीछो,
अपने आप नूं अग्ग विच पाऐं पहिलां (2)

मीठा मुँह हुंदा कई चिरां पिछो,
गन्ना अपना रस कढ़वाए पहिला। (2)

महल माड़िया लगदे फेर चंगे,
ईंट अपना तन सड़ाए पहिला। (2)

पलंग तखत ऊंचे शोभा फेर पौंदे,
लकड़ी अपना तन चिराए पहिलां। (2)

करे जग ते पर उपकार पिछो,
अपने घर दी अग्ग बुझाए पहिलां। (2)

पहरा किसे दे घर दा फेर देवे,
अपने घर दा माल बचाए पहिलां। (2)

गुरु दा सिक्ख है ता बनदा,
शीश तली दे उत्ते टिकाए पहिलां। (2)

किसे ताँई उपदेश ओह फेर देवे,
बन्दा अपना मन समझाए पहिलां। (2)

करे सच्चा प्रचार ओह फेर मगरों,
पंजा डाकुआं ते काबू पाए पहिलां। (2)

बन्दा काल दे जाल तो ताँ बचदा,
सच्चे गुरु दी शरण विच जाए पहिलां। (2)

सटेज गुरु दी उत्ते ओह फेर पहुँचे,
अंदर अमृतसर विच नहाए पहिलां। (2)

होंमे हंगतां कढके बाहर सिट्टे,
अंदर गुरु लई वेहड़ा बनाए पहिलां। (2)

घट–घट विच मालिक फेर दिसदा,
अंदरो दूई दवैत हटाए पहिलां। (2)

डर मरने दा सदा ही मुक जावें,
जी जीवंदेया ही मर जाए पहिलां। (2)

फुरने दुनियां दे अंदरों तां जांदे,
शब्द गुरु दा अंदर टिकाए पहिलां। (2)

कृपा गुरु कृपाल दी तां होवे
मन मंदिर नूं साफ कराए पहिलां। (2)

'अजायब' गल्ला सचखंड दिया फेर बोले,
मुंह सचखंड वल बनाए पहिलां। (2)

हमारे प्यारे सतगुरु जैसा

(संत अजायब सिंह जी)

हमारे प्यारे सतगुरु जैसा, हमने ना कोई और देखा। (2)
वे तो महान हैं मेरे सतगुरु (2), उनसा महान न और देखा।

वे हैं दोनों जहाँ के मालिक, दुनियां के दिल में बसने वाले।
हर घट के ज्ञाता हैं वे ज्ञानी, दिलों की बातें जानने वाले।(2)
शब्द स्वरुप है रूप उनका (2), रूप जो हमने आँखों से देखा।
हमारे.....

देखे तो देखने वाला देखे, देखे तो देखता ही रह जाये।
प्यारी मूरत प्यारी सूरत, देखने वाला उनका हो जाए। (2)
मन मोहक मन को भाने वाला (2), मन भावन हम सबने देखा।
हमारे.....

देखा तो शायद हर नज़र ने देखा, अपने अपने ख्याल से।
जिसने भी उनको प्यार से देखा, निकला वो इस मझधार से।
(2)
वे तो है इक महान नाविक (2), भरकर नाव ले जाते देखा।
हमारे.....

वह नाविक गुरु कृपाल है प्यारे, सावन प्यारे का प्यारा।
कृपा का सागर कृपाल है प्यारे, 'अजायब' को जां से भी
प्यारा। (2)
वे तो अति सुंदर सलौने (2), उनका हुआ जिसने देखा।
हमारे.....

आपे तारे ते तारन वाली

(संत अजायब सिंह जी)

आपे तारे ते तारन वाली, आई ऐ इक, रब दी जोत निराली,।टेक।(२)

ओह तां करदा संभाल, सारे जग दी, जो जो वी आवे,
आके सुत्तियां ओह रुहां नूं जगौदां, अते नाम जपावे, (२)
भरे झोलियां ना रखदा खाली,
आई.....

ओह घट घट दे विच वसदा, रेहिंदा है न्यारा,
ओह करे भगतां दी रखेया, डंड दुष्टां नूं करारा, (२)
पैज रखदा जो आऐ सवाली,
आई.....

ओनूं देवी देवते मन दें, वेदा यश गाया,
ओह जल थल दे विच वसदा, कोई अंत ना पाया, (२)
ओह कट दा काल दी जाली,
आई.....

ओह कदे सावन बन ओंदा, रुहां नूं तारे,
ओह कदे कृपाल सदौंदा, तपदे दिल ठारे, (२)
रूह अजायब दी आके संभाली,
आई.....

उठ सुतया गाफला होश करलै

(संत अजायब सिंह जी)

उठ सुतया गाफला होश करलै, नेकी जग ते तूं कमोण आएओ,
इक मिनट ना उसनूं याद करदा, अठो पहर ही जिनू ध्योण आएओ,
जेड़े पाप कीते हत्थी आप सारे, ऐनां जुल्मा नूं तूं मिटोण आएओ,
ओए मौंका कदे ना याद कीता, मंगला चरन जिसदे सदाही गौण आएओ,
मानस जन्म अमुल्ड़ा लाल मिलया, भा कोडिया दे तेरा विकया ऐं,
बाज गुरु तों मुक्त ना होऐ कोई, बानी गुरु ग्रंथ विच लिखया ऐं,

धीयां पुत्र कुटुम्ब हकुमता ने, एक दिन तेरा साथ छडना ऐ,
बाज गुरु तो फिरे जे सजना तू, अंत जमां ने तेरा दम कढना ऐ,
पुन्नदान पूजा पाठ होण भावे, वेले अंत दे कोई ना रखदा ऐ,
गुरु करे कमाई नाम दवे सच्चा, बेड़ा पार होवे आखिर सचदा ऐ,
सदा ऐस जहान ते नहीं रहना, झूठा कूड़ जहान सब मिथया ऐ,
बाज.....

होया विष्यां दे विच मस्त इतना, चेता नाम जपने दा भुल गया,
हीरा हथ आया कदर ना कीती, हथो डिगया मिट्टी च रुल गया,
तैनू समां मिलया नाम जप सच्चा, सोहणां बनया रब दा बन्दा ऐ तूं,
जे गुरु ना मिलया कीती बंदगी ना, बिना बंदगी गंदे तो गंदा ऐ तूं,
नगरी दुःखां दी सारा संसार दुःखिया, सुखी कोई ना जग ते दिसया ऐ,
बाज.....

रखे माण हंकार जो दिल अंदर, नाम गुरु दे नूं जेड़ा भुल जावे,
अरबांपति बन जाऐ भावे जग उते, दरगा विच ओह ना मुल पावे,
मिलना चाहे जेहड़ा सच्चे रब तांई, अन्दरो दुई दवैत नूं कढ़ देवे,
हर दिल अंदर बैठा कुल मालिक, किसे दा दिल दुःखाणां ओह छड देवे,
अजायब छड झगड़े जपलै नाम सच्चा, सच्ची गुरु कृपाल दी सिख्या ऐ,
बाज.....

गुरु बिना गत नहीं

(संत अजायब सिंह जी)

गुरु बिना गत नहीं, गुरु बिना पत नहीं,
गुरु बिना दरगाह तो, बाहर खड़ोवेगा।

गुरु बिना ज्ञान नहीं, गुरु बिना ध्यान नहीं,
गुरु बिना माण नहीं, बैठ के तूँ रोवेगा।

गुरु बिना कोई नहीं, गुरु बिना ढोई नहीं,
मुक्ति जे होई नहीं, दुःखी दिलों होवेगा।

गुरु बिना प्यार नहीं, गुरु बिना सार नहीं,
गुरु बिना पार ना, अजायब फिर होवेंगा।

गुरु साजन लादा जी

(गुरुबानी)

गुरु साजन लादा जी, सारा जग ढूंढ़ के । टेक। (२)

गुरमुख ढूढं ढुडेदयां, (२)
हर गुरु सजन लद्दा जी,
सारा.....

कंचन काया कोट गढ़, (२)
विच हर हर सिधा जी,
सारा.....

हर हर हीरा रत्न है, (२)
मेरा मन तन बीधा जी,
सारा.....

धुर भाग बडे हर पाया, (२)
नानक रस गुधा जी,
सारा.....

छड झूठा जगत सरां दा प्यार

(संत अजायब सिंह जी)

छड झूठा जगत सरां दा प्यार, छड झूठा जगत सरां दा प्यार ।
टेक। (२)

तैनू दुनियां दे प्यार ने मोह लया, (२)
सदा रैहना ना ऐथे भोलया प्यार।
वे मै गुरु दा सहारा टोलया।। (२)
प्यार, छड.....

जो वी जगत सरां विच आया, (२)
दो दिन कट के चाले पाया प्यार।
वे मैं गुरु दी शरण विच आ गया।। (२)
प्यार, छड.....

बंदे मन अपना समझालै, (२)
नेकी दुनियां दे विच तूं कमालै प्यार।
दिल गुरु चरणां विच ला लै।। (२)
प्यार, छड.....

धन गुरु कृपाल प्यारेयां, (२)
दिलां तपदयां नूं आके ठारयां प्यार।
अजायब सतगुरु तो बलहारया।। (२)
प्यार, छड.....

दुनियां विच प्रीत लगाई

(संत अजायब सिंह जी)

दुनियां विच प्रीत लगाई, मालिक दी याद भुलाई, । टेक।

तेरी मियाद बुलबुलां पानी, बई नाम जप बंदया ओए,
तेरी दो दिन दी जिंदगानी,
बई जे ना नाम जपे गुरु दा, तेरी होऊ दरगाह विच हानि, (२)

करदा ऐ मेरी मेरी जिंदगी है खाक ढ़ेरी, (२)
ऐथे चलदी नहीं मन मानी,
बई जे.....

मालिक दे कोलों आया, ओसे नूं दिलो भुलाया, (२)
भुल गया अपनी खानदानी,
बई जे.....

हीरे दा वणज थ्याया, कौडी दे भा गुआया। (२)
लाहा लैण नूं तूं आया सी प्राणी,
बई जे.....

झूठे है भाई चारे, मतलब दे यार प्यारे, (२)
गल कह गए संत सयानी,
बई जे.....

जाणी है जान अकेली, गुरु बिना कोई ना बेली, (२)
मालिक नूं भुल के बने परेशानी,
बई जे.....

होया अजायब नकारा, दिता कृपाल सहारा, (२)
तर गया गल गुरु दी जे मानी,
बई जे.....

दीदार कृपाल प्यारे दा

(संत अजायब सिंह जी)

दीदार कृपाल प्यारे दा, जो–जो वी बंदा कर जांदा,
छुट जांदा गेड़ चौरासी तों, भवसागर पार उतर जांदा। । टेक।

जो भजन गुरां दा करदा ऐ,
जो मरनो पहिलां मरदा ऐ। (2)
ओह मरनो मूल ना डरदा ऐ, दरगाह चो पार उतर जांदा।
दीदार.....

मन जन्म जन्म तो भटक रेहा,
ना लगया किनारे राह विच अटक रेहा। (२)
मिल जाए सतगुरु पूरा जे, लग शरण गुरां दी तर जांदा।
दीदार.....

आया सोहणां नूर इलाही ऐ,
दिलां अंदर धाक बैठाई ऐ। (2)
सोहणे मिठड़े बोल सुणां के ते, रुहां मैलिया नूं उजल कर जांदा।
दीदार.....

ना लोड़ है स्वर्ग नजारे दी,
ना चाह है तख्त हजारे दी। (2)
अजायब लोड़ कृपाल प्यारे दी, दुःखी दिलां नूं राजी कर जांदा।
दीदार.....

सुनत नहीं धुन की खबर

(कबीरदास जी)

सुनता नहीं धुन की खबर अनहद का बाजा बाजता।
रसमंद मंदिर बाजता बाहर सुने तो क्या हुआ ।।

गांजा अफ़ीम और पोसता भांग और सराबें पीवता।
इस प्रेम रस चाखा नहीं अमली हुआ तो क्या हुआ।।

कासी गया और द्वारिका तीरथ सकल भरमत फिरै।
गाँठी न खोली कपट की तीरथ गया तो क्या हुआ ।।

पोथी किताबैं बाँचता औरों को नित समुझावता।
त्रिकुटी महल खोजै नहीं बक बक मरा तो क्या हुआ ।।

काजी किताबैं खोजता करता नसीहत और को।
महरम नहीं उस हाल से काज़ी हुआ तो क्या हुआ ।।

सतरंज चौपड़ गंजिफा इक नर्द है बदरंग की।
बाजी न लाई प्रेम की खेला जुआ तो क्या हुआ ।।

जोगी दिगम्बर सेवड़ा कपड़ा रंगे रंग लाल से।
वाकिफ़ नहीं उस रंग से कपड़ा रंगे से क्या हुआ ।।

मंदिर झरोखे रावटी गुल चमन में रहते सदा।
कहते कबीरा हैं सही घट घट में साहेब रम रहा ।।

बिना नाम दे जपे ना शांति आवे

(संत अजायब सिंह जी)

बिना नाम दे जपे ना शांति आवे,
कृपाल गुरु दा सचा फरमान होया,

शरण आऐ बिना सच्चे वैद्य संगी,
रोग किसे दा दूर ना जान होया,

नरक अग चों बचे ना ओह पापी,
गुरु वल ना जिसदा ध्यान होया,

इक प्रभु प्रीत नूं पालना न्यूं चलना,
वडं छकना गुरु फरमान होया,

काम क्रोध ते लोभ नूं पिठ देके,
दया–सत–संतोष जे रखसे तूँ,

अजायब रोग मिटसन जन्मा सारेया दे,
कृपाल गुरु सच्चा वैद्य जप से तूं,

भावें जाण ना जाण

(संत अजायब सिंह जी)

भावें जाण ना जाण वे वेड़े आ वड़ मेरे, । टेक।
मैं तेरे कुरबान वे, वेड़े आ वड़ मेरे, (२)

तेरे जेहा मैंनूं होर ना कोई,
ढुंढा जंगल बेला रोहीं, (२)
ढुंढा ताँ सारा जहान वे, वेड़े आ वड़ मेरे.....

मापे ओहनूं कहिंदे पाल,
लोकी कहिंदे संत कृपाल, (२)
साडा तां दीन अमान वे, वेड़े आ वड़ मेरे.....

मापे छोड़ लगी लड़ तेरे,
शाह कृपाल साईं मेरे, (२)
लाईयाँ दी लज पाल वे, वेड़े आ वड़ मेरे.....

ढूंढ शहर सब भालया, कामद घलां कहेडा,
चड़ी तां डोली प्रेम दी, दिल धड़के मेरा, (२)
ओ कृपाल साईयाँ हथ पकड़ी मेरा, वेड़े आ वड़ मेरे.....

दर्शन तेरा दरकार असां नूं हर वेले हर हीले,
सच्चा शाह कृपाल साहिब, मेरे खास वसीले, (२)
गरीब अजायब नूं मिले प्यारा, लख करां शुक्राने, वेड़े आ वड़ मेरे.....

कृपाल सिंह नूं सिमर के, पापी तरे अनेक,
कहे अजायब ना छोड़िऐ कृपाल सिंह दी टेक, वेड़े आ वड़ मेरे.....(२)

मानस जनम लाल रतन अमुल्ड़ा ऐ

(संत अजायब सिंह जी)

मानस जनम लाल रतन अमुल्ड़ा ऐ, । टेक।
गुरु तो बगैर भा कोडियां दे जावे ना,
गुरु बिना ज्ञान नहीं, गुरु बिना ध्यान नहीं,
गुरु तो बगैर बंदा कमं किसे आवे ना,

पुन्न दान होम जग, करी जावे तिन भावे,
तीर्था ते नहाई जावे, अन्न पानी खावे ना, (२)
गुरु बिना जुगती ना, गुरु बिना मुक्ति ना, गुरु तो बंदा.....

झूठा संसार ऐथे, इक दिन छड जाना,
सतगुरु बिना तेरे, साथ कोई जावे ना, (२)
गुरु बिना खाना ते, हंडाना सब निःसफल, गुरु तो बंदा.....

चड़ी असमान गुडडी, मान तान होवे चंगा,
करे जो हुक्म कोई, अगो पछतावे ना, (२)
सच्ची ऐह कचहरी धर्मराज इंसाफ करें, गुरु तो बंदा.....

लगी हथकड़ी, चोर डाकू जिवें पझदा ऐ,
मिल गई सजा कोई आन के बुलावे ना, (२)
आखदा अजायब, कृपाल सतगुरु बिना,
सच्चे गुरु बिना कोई आन के छुडावे ना, गुरु तो बंदा.....

मैनूं पुछण आण सहेलियां

(संत अजायब सिंह जी)

मैनू पुछण आण सहेलियां, नी तूँ किवे होई बीमार,
तू रोवे धांहा मारके, तैनू चड़या रहे बुखार।

तूँ अकदी थकदी ना कदी, ते करदी नहीं आराम,
तैनू सुतया कदीं ना वेखया, तेरी होई नींद हराम।

तेरे मुख ते खुशी ना दिसदी, तूँ ते रहंदी सदा लाचार,
तैनू हँसदेयाँ कदी नां वेखया, तेरा किदे नाल प्यार।

असीं हथ बन करिऐ बेंनती, साथो रखीं ना भेद छुपा,
जरा दुःखड़े दस्सी खोलके, सारा देवीं हाल सुना।

मेरे जागे भाग सुलखणे, मैनूं मिलया पति जमाल,
मैनूं रूलदी फिरदी वेखके, दित्ता ऊँचा तखत संभाल।

मैं औदी होई सहेलियों, मेरा हरदम रखें ख्याल,
ओह मेरे घर विच आ गया, ओदा नाम संत कृपाल।

अजे सधरां ना मेरियां लत्थियां, मेरा लुटया गया सुहाग,
ओह मैनूं चिट्टी चादर दे गया, किते लग ना जाऐ दाग।

हुक्म उसदा मनण वास्ते, मैं अंदर वड़ गई आप,
ओदी दसीं जुगत ना भुलदी, मैं हरदम करदी जाप।

मैनू बचन ओदे पऐ मनणे, मेरे उत्तें जो लाया ला,
मै सत–सत करके मन लए दिता चरणी शीश झुका।

मैनूं चरणा विच बैठा के, कीते सतपुरुष ने वाक,
तूँ जग दियां आसां छडके, रखी इक सतगुरु दी आस।

तेरे विचों ओण सुंगधियां, टप जाण समुंद्रा तो पार,
तैं विच असमाना दे उडणां तैंनू करन परियां नमस्कार।

दिन आजज होके कटने, नीवें हो रहणा संसार,
तेरी सतगुरु रखिया करेगा, जीवां दा करी उद्धार।

करे अरज 'अजायब' हथ जोड़ के, जागे भाग होऐ सतगुरु दयाल,
करां लख शुक्राने ओसदे, मैनूं मिल गऐ गुरु कृपाल।

सतगुरु प्यारे ने मन मोहया

(संत अजायब सिंह जी)

सतगुरु प्यारे ने मन मोहया, अमृत बानी सुणां सुणां । टेक। (२)

धुर की बानी सहज समानी, जनमा दे दुःख तोड़ देवे, (२)
शरदा धार जो सुनदा बानी, ओण जान है दिता मुका,
सतगुरु.....

जिंना नूं सतगुरु पूरा मिलया, सच्चा शब्द सुना देवे, (२)
वडभागी ओह गुरमुख प्यारे, अमृत बानी जो सुनदे आ,
सतगुरु.....

सतगुरु बाज ना संगत लगदी, संगत बाज ना भ्रम जाए, (२)
ऊँचा दर्जा सच्ची संगत, सारे दिते भ्रम नट्ठा,
सतगुरु.....

सतसंगत, विच मालिक आके, नाम दे छटे दे रिहा, (२)
ऊँच्चे भाग जिना दे जागे, सतसंगत नित सुनदे आ,
सतगुरु.....

वाह कृपाल दयाल प्यारे, लख शुक्राना अजायब करे, (२)
अवगुण हारी सी दुःखहारी, दया करी गल लाया आ,
सतगुरु.....

सावन ते कृपाल दियां मेहरा ने

(संत अजायब सिंह जी)

सावन ते कृपाल दियां मेहरा ने, अज ऐह थान सुहाया ऐ, । टेक।
नाम दा मीहं अमृत वरसाके, सोहणा बाग सजाया ऐ,
आई मौज महांपुरुषां दी, जंगल विच मंगल ला दित्ता,
दुःखियां दे दर्द निवारण लई, सतसंगत राह चला दित्ता,

इह बाग सुहावे सोहणे विच, चंदन दा बूटा लाया है,
रुहां दे बूटे खड़ सुक्के जो, अमृत दा पानी पाया है, (२)
ऐह सोहणां बाग सजाके ते, भुलया नूं रस्ते पा दित्ता,
दुखियां.....

ऐह गलां दा मजबून नहीं, जो करदा झोली भरदा ऐ,
इस बे अथाह समुंद्र विच, सच्चे नाम दा बूटा तरदा ऐ, (२)
सतसंगत दर्जा ऊंचा ऐ, सचखंड दा भेद बता दित्ता,
दुखियां.....

ओह कुल भली परिवार भला, सावन दा ना चमकाया ऐ,
कृपाल जी जित्थे बैठ गए, धरती नूं भाग लगाया ऐ, (२)
सानू भुले भटके रोंदेया नूं, फड़ सिधे रस्ते पा दित्ता,
दुखियां.....

दुःखियाँ दा दर्द निवारन लई, जद सोहणे चक्कर लाया सी,
पहाड़ा दियां कुंदरा विच, सतनाम दा जाप कराया सी, (२)
धरती दे कोने–कोने ते, सच्चे नाम दा जाप करा दित्ता,
दुखियां.....

की सिफत करां मैं सावन दी, बन आया पर उपकारी ऐ,
कृपाल ते कृपा करके ते, तपदी होई दुनियां ठारी ऐ, (२)
रोंदे अजायब दुःखिए दा, कृपाल ने दर्द मिटा दित्ता,
दुखियां.....

हे सखी, सुन री सखी

(संत अजायब सिंह जी)

हे सखी, सुन री सखी, तोहे, दिल की बात बताऊ री, । टेक।
पिया मिले तो मैं नाँचू गाऊँ, नहीं मिले तो मर जाँऊ री, (२)

दुःख मैं देखू रोज ही रोऊ, मनुआ बड़ा कसाई री,
मन पापी मोहे बहुत सतावे, कैसे बचयो जाई री, (२)
तोहे सखी मैं पूछूं है री (२), तू ना करे सुनाई री, हे सखी.....

पांचों विष्यों ने मुझको घेरा, इनसे छूट ना जाई री,
एक छोड़े तो दूसरा पकड़े, मैं होई गई दुःख दाई री, (२)
सुन सखी कोई राह बता री (२), हो जाऊँ सुखयारी री,हे सखी.....

सिमरन भजन करूं कभी ना, मैं बातन सिऊँ बड़यारी री,
मान वडाई मेरा पीछा ना छोड़े, भारी रोक लगाई री, (२)
मान सखी अब मान भी जा री (२), तैं, कैसे बात बनाई री,हे सखी.....

अब सुन सखी प्यारी मेरी, तेरा दुःख ना, देखा जाई री,
मान कहा अपने गुरु का, श्रद्धा भाव बनाई री, (२)
वे सारे तेरे कष्ट हरेंगे (२), दयावान सुखदाई री, हे सखी.....

कृपाल गुरु मेरे पीया सखी री, सावन लाल प्यारी री,
उनकी दया अपार सखी री, दुनियां माने सारी री, (२)
मन मेरा उन चरनन् लागा (२), मौंज बड़ी बरताई री,हे सखी.....

पीया पीया मैं पिया पिया गाऊँ, पीया की बन जाऊँ प्यारी री,
पीया बसे मेरे हिऐ सखी री, पीया की बात न्यारी री, (२)
दुनियां की परवाह ना सखी री (२), दुनियां हुई पराई री,हे सखी.....

अजायब सखी तेरी पगली होई, पीया पीया की रट लाई री,
तू भी मान सखी मेरा कहना, उनसा और ना कोई री, (२)
फिर ना कहना कहा नहीं था (२), दिल की बात बताई री,हे सखी.....

अब चाहे तूं नाचे गाऐ, जैसे, तेरा दिल चाहे री,
वे तो तेरे संग सदा री, पल ना छोड़ के जाऐ री, (२)
अजायब ने देखा, तू भी देख री (२), काहे को पछतावे री,हे सखी.....

अज खुशी दिन आया जी

(गुरुवानी)

अज खुशी दिन आया जी, मनाया संगता ने, । टेक।(२)

अव चल नगर, गोविंद गुरु का, (२)
नाम जपत सुख पाया जी,
मनाया.....

मन इच्छे, सोई फल पाऐ, (२)
करत आप वसाया, जी
मनाया.....

करते आप बसाया, सर्व सुख पाया, (२)
पुत भाई सिख बिगासे, जी
मनाया.....

गुण गावै पूरण परमेश्वर, (२)
कारज आया रासे, जी
मनाया.....

प्रभ आप स्वामी, आपे रखा, (२)
आप पिता आप माया, जी
मनाया.....

कहो नानक, सतगुरु बलिहारी, (२)
जिन ऐह थान सुहाया, जी
मनाया.....

ऐह जनम तुम्हारे लेखे

(गुरु रविदास जी)

ऐह जन्म तुम्हारे लेखे, लेखे विच ला लो गुरु जी, । टेक। (२)

हम सर दीन, दयाल ना तुम सर, (२)
अब पतियार क्या कीजै,
लेखे.....

बचनी तोर, मोर मन माने, (२)
जन को पूरण दीजै,
लेखे.....

हौं बल बल जायों, रमैया कारणे, (२)
कारण कबण अबोल,
लेखे.....

बहुत जन्म, बिछुरे थे माधो, (२)
ऐह जन्म तुमारे लेखे,
लेखे.....

कहे रविदास, आस लग जीवो, (२)
चिर भयों दर्शन देखे,
लेखे.....

जां होऐ कृपाल तां प्रभ मिलाऐ

(गुरुबानी)

जां – होऐ कृपाल तां प्रभ मिलाऐ, । टेक। (२)

तप–तप, लोहे–लोहे, हाथ मरोरो, (२) (२)
बाबल होई, सो, सो लोरो, होऐ.....

तैसहे मन मेह, किया रोष, (२) (२)
मुझ अवगुण सह, नाही दोष, होऐ.....

तैं साहेब की मैं, सार ना जानी, (२) (२)
जोबन खोऐ, पाछे पछतानी, होऐ.....

काली कोयल तू, कित गुण काली, (२) (२)
अपने प्रीतम के हौं, बिरहैं, जाली, होऐ.....

पिरह विहून, कतह सुख पाऐ, (२) (२)
जां होऐ कृपाल तां, प्रभ मिलाये, होऐ.....

बिघन खूंही, मुंध अकेली, (२) (२)
ना कोई साथी, ना कोई बेली, होऐ.....

कर कृपा प्रभ, साध संगत मेली, (२) (२)
जां फिर देखा तां मेरा, अल्लोह बेली, होऐ.....

वाट हमारी, खरी उडीणी, (२) (२)
खंनयो तिखी, बहुत पईणी, होऐ.....

उस ऊपर है, मार्ग मेरा, (२) (२)
सेख फरीदा पंथ, समार सवेरा, होऐ.....

मेरे दीन दयाला जी, सुन लौ बैनतियाँ

(गुरुबानी)

मेरे दीन दयाला जी, सुन लौ बैनतियाँ, । टेक। (२)

दीन दयाल सुनो बेनती,
हर प्रभ हर राया, जी सुन.....

हौं मांगों शरन हर नाम की,
हर हर मुख पाया, जी सुन.....

भगत वछल हर बिरध है,
हर लाज रखाया, जी सुन.....

जन नानक शरणागती,
हर नाम तराया, जी सुन.....

मैं खड़ी उडीका जी, संगत दे वाली नूं

(गुरुबानी)

मैं खड़ी उडीका जी, संगत दे वाली नूं, (२)

पंथ दसावा नित खड़ी, (२)
मुंद जोबन बाली जी, संगत.....

हर हर नाम चिताऐ गुर, (२)
हरमार्ग चाली जी, संगत.....

मेरा मन तन नाम आधार है, (२)
होंमे बिख जाली जी, संगत.....

जन नानक सतगुरु मेल हर, (२)
हरि मिलेया बनवाली जी संगत.....

सत संगत बाजो जी

(गुरुबानी)

सत संगत बाजो जी, । टेक।
तरया भवसागर नहीं जाणा, (२)

एक घड़ी आधी घड़ी, (२)
आधी हुं ते आध,
तरया.....

भगत ना सेती गोष्ठी, (२)
जो किनो सो लाभ,
तरया.....

ऐ मानस जन्म दुर्लभ है, (2)
होत ना बारंम्बार,
तरया.....

ज्यो वन फल पक्के भोऐं गिरे, (२)
बौहर ना लागी डार,
तरया.....

सतसंगत सोई जाणिऐ, (२)
जित्थे इको नाम वखानी ऐं,
तरया.....

सतगुरु पूरा जिन सुनेया पेखया

(गुरुबानी)

सतगुरु पूरा जिन सुनेया पेखया, । टेक। (२)
से फिर गर्भास ना परया रे, (२)

कोट ब्रहमंड को ठाकुर स्वामी, (२) सर्व जीयां का दाता रे,(२)
प्रतिपाले नित सार समाले, (२) इक गुण नहीं मूर्ख जाता रे,(२)
सतगुरु.....

हर आराध ना जाना रे, (२) हर हर गुरु गुरु करता रे, (२)
हर जीओ नाम परयो रामदास, (२)
सतगुरु.....

दीन दयाल कृपाल सुख सागर, (२) सर्व घटा भरपूरी रे, (२)
पेखत सुनत सदा है संगे, (२) मैं मूर्ख जानेया दूरी रे, (2)
सतगुरु.....

हर बेअंत हो मित कर वरनो, (२) क्या जाना होऐ कैसो रे,(२)
करौ बेनती सतगुरु अपने मैं, (२) मूर्ख देहो उपदेशो रे, (२)
सतगुरु.....

मैं मूर्ख की केतक बात है, (२) कोट अपराधी तरेया रे, (२)
गुरु नानक जिन सुनिया पेखया, (२) से फिर गर्भास ना परया रे,(२)
सतगुरु.....

सुनो बेनती मेरी सतगुरु जी

(कबीर साहिब)

सुनो बेनती मेरी सतगुरु जी । टेक। (२)

करवत भला ना करवट तेरी, (२)
लाग गले सुनो बेनती मेरी,
सुनो.....

हौं वारी मुख फेर प्यारे, (२)
करवट दे मोको काहे को मारे,
सुनो.....

जो तन चीरें अंग न मोरां, (२)
पिण्ड परे तों प्रीत ना तोरो,
सुनो.....

हम तुम बीच भयो नहीं कोई, (२)
तुमह सो कंत नार हम सोई,
सुनो.....

कहत कबीर सुनो रे लोई, (२)
अब तुमरी प्रतीत ना होई,
सुनो.....

सोई धरत नसीबा वाली

(गुरुबानी)

सोई धरत नसीबा वाली, जित्थे मेरा गुरु वसदा, । टेक। (२)

से धरत भई हरियावली, जी, (२)
जित्थे मेरा सतगुरु बैठा आऐ, जित्थे.....

से जंत भऐ हरियावले, जी, (२)
जिन्ना मेरा सतगुरु देखया जाऐ, जित्थे.....

धन धन पिता, धन धन कुल, (२)
धन धन सो जननी, जिन गुरु जनेया माऐ, जित्थे.....

धन धन गुरु, जिन नाम अराधया, (२)
आप तरेया जिना डिब्बा तिनां लऐ छुड़ाऐ, जित्थे.....

हर सतगुरु, मेलो दया कर, (२)
जन नानक, धोवां पाँऐ, जित्थे.....

सोई थान सुहावा

(गुरुबानी)

सोई थान सुहावा, प्यारेया, सोई थान, । टेक। (२)

जित्थे जाऐ बहे, मेरा सतगुरु जी, (२)
सोई थान सुहावा प्यारेया, सोई.....

गुरु सिखीं सो, थान भालया, (२)
लै धुड़ मुख लावा प्यारेया, सोई.....

गुर सिखा की घाल, थाऐ भई, (२)
जिन हर नाम ध्यावा प्यारेया, सोई.....

जिनं नानक सतगुरु पूजया, (२)
तिन हर पूज करावा प्यारेया, सोई.....

तती वायो नां लगदी जी

(गुरु अर्जुनदेवी जी)

तती वायो नां लगदी जी, गुरां दी शरण पयां, । टेक।(२)

ताती वायो ना लागई, (२)
पार ब्रह्म शरनाई,
गुरां.....

चौगिरद हमारे राम कार, (२)
दुःख लगे ना भाई जी,
गुरां.....

सतगुर पूरा भेटया, (२)
जिन बनत बनाई, जी
गुरां.....

राम नाम ओखद दिया, (२)
ऐका लिव लाई, जी
गुरां.....

राख लिए तिन रखन हार, (२)
सब ब्याध मिटाई, जी
गुरां.....

कहो नानक कृपा भई, (२)
प्रभ भयो सहाई, जी
गुरां.....

प्रेम कियो, तिन ही प्रभ पायो

(गुरुबानी)

प्रेम कियो, तिन ही प्रभ पायो, । टेक। (२)

कहां भयो, जो दोऊ लोचन मुंद कै, (२)
बैठ रहियो, बक ध्यान लगाओ,
प्रेम.....

नात फिरयो, लिए सात समुंद्रन, (२)
लोक गयो, परलोक गवायो,
प्रेम.....

वास कियो, बिख्यान सो बैठके, (२)
ऐसे ही ऐसे सो, बैस बतायो,
प्रेम.....

साच कहों, सुन लेयो सबै जन, (२)
प्रेम कियो, तिन ही प्रभ पायो,
प्रेम.....

मना परदेसियां सुण लै

(संत अजायब सिंह जी)

मना परदेसियां सुण लै, करीं ना माण वतना दा, । टेक। (२)

तूँ भुल गया देश है अपना, बेगाने देश विच रहके,
झुठा ऐ है जगत सुपना, सोचया कदीं वी ना बहके, (२)
सच्चा इको गुरु है अपना, जिसने ध्यान रखना आ,
मना.....

ऐह कुटुंभ कबीला जो, आखिर कोई नहीं तेरा,
सुंदर तन रंगीला जो, कहिदां ऐ मेरा है मेरा, (२)
बन जाऐ खाक दी ढेरी, रहे ना माण जतना दा,
मना.....

काल दा जाल डाडा है, भुन–भुन जीवा नूं खा रिहा,
भुलाके नाम सच्चे नूं, कर्म कांड विच पा रिहा, (२)
बचें तां नरक दी अग्ग चों, गुरु वल ध्यान रखना ला,
मना.....

अजे वी समां है तेरा, गुरु दी शरनी पैजा तूं,
मनां किते भुल ना जावीं, नाम जप लाहा लै जा तूँ (२)
अजायब जे सुख लैणे सारे, पालन कर कृपाल दे बचना दा,
मना.....

मलायक से, बशर से

(संत कृपाल सिंह जी)

मलायक से, बशर से, हूर से सबसे सिवा निकले, । टेक।
हमारे शहिन्शाह दोनों जहानों से जुदा निकल,

खुली जब आँख तो इन्सां के जामे में खुदा निकले,
समझते थे उन्हें हम क्या इलाही और वह क्या निकले,

खुदा जल्वानुमा उनमें, खुदा में वह फ़ना निकले,
न वह उनसे जुदा निकला, ना वह उससे जुदा निकले,

मुहब्बत मे वह कुछ इक दूसरे की मुब्तिला निकले,
खुदा उन पर फ़िदा निकला खुदा पर वह फ़िदा निकले,

वजूदे खाके आलम में वह इसरारे बका निकले,
इसी कूचे खुदा खुद था इलाही वह खुद खुदा निकले,

चलो दीदार कर लो आज ही सत्संग में उनका,
खुदा जाने कयामत कब हो और क्या माजरा निकले,

लख पापी तर गऐ जी

(गुरुबानी)

लख पापी तर गऐ जी, तेरा दर अैसा, तेरा दर अैसा । टेक। (२)

धन धन राजा जनक हैं, (२)
जिन सिमरन कियो विवेक, तेरा.....

एक घड़ी के सिमरने, (२)
पापी तरे अनेक, तेरा.....

अैसा सिमरन जाण के, (२)
संता ना पकड़ी टेक, तेरा.....

नानक सिमरन सार है, (२)
मैनू विसरे घड़ी ना एक, तेरा.....

मिल मेरे प्रीतमा जी ओ

(गुरुबानी)

मिल मेरे प्रीतमा जीओ, तुध बिन खरी निमाणी, । टेक।

मैं नैनी नींद ना आवे, जीओ भावै अन्न ना पाणी,

पाणी अन्न ना भावै, मारीयै हावै,
बिन पिर क्यूँ, सुख पाईयै,
गुरु आगै, करु बेनती जे गुरु भावै,

जिऊँ मेले, तिंवैं मिलाइऐ,
आपे मेल, लऐ सुख दाता,
आप मिलया, घर आऐ,

नानक कामण, सदा सुहागण,
ना पिर मरे ना जाऐ,

सभै घट राम बौले, रामा बोले

(गुरुबानी)

सभै घट राम बौले, रामा बौले, । टेक।
राम बिना को बौले रे, सभै घट
राम बोले (२)

एकल मांटी, कुंजर चिट्टी, (२)
भाजन है बहु नाना रे,
सभै.....

अस्थावर जंगम, कीट पंतगम, (२)
घट घट राम समाना रे,
सभै.....

एकल चिंता, राख अनंता, (२)
और तजहो सब आसा रे,
सभै.....

परणवै नामा, भऐ नेह कामा, (२)
को ठाकुर को दासा ऐ,
सभै.....

संत का मार्ग, धर्म की पोड़ी

(गुरुवानी)

संत का मार्ग, धर्म की पौड़ी, को वडभागी पाऐ, । टेक।(२)

गुर पूरे कृपा धारी, प्रभ पूरी लोच हमारी, (२)
कर स्नान गृह आऐ, अनद मंगल सुख पाऐ,
संत.....

संतो राम नाम निस तरियै, राम नाम निस तरियै, (२)
उठत बैठत हर हर ध्याईऐ, अनदिन शुक्रित करिऐ,
संत.....

संत का मार्ग धर्म की पौड़ी, को बडभागी पाऐ, (२)
कोट जन्म के किल बिख नासहे, हर चरनी चित लाऐ,
संत.....

उसत्त करौ सदा प्रभ अपने, जिन पूरी कल राखी, (२)
जीया जंत सब भऐ पवित्रा, सतगुरु की सच्च साखी,
संत.....

बिधन विनासन सब दुःख नासन, सतगुरु नाम द्रिड़ाया,(२)
खोए पाप भऐ सब पावन, जन नानक सुख घर आया(२)
संत.....

साधुआ धूड़ी कर इशनान
(गुरुबानी)

साधुआ धूड़ी कर इशनान, मिलके साधुआँ, । टेक। (२)

माघ मजन संग साधुआं, (२)
धुड़ी कर इशनान, मिलके.....

हर का नाम ध्याऐ सुन, (२)
सबना नों कर दान, मिलके.....

जन्म कर्म मल ऊतरै, (२)
मन ते जाऐ गुमान, मिलके.....

काम क्रोध ना मोहियै, (२)
बिनसे लोभ सोयान, मिलके.....

सच्चे मार्ग चलदेयां, (२)
उसत्त करे जहान, मिलके.....

अठसठ तीर्थ सगल पुन, (२)
जी दया परवान, मिलके.....

जिसनू देवै दया कर, (२)
सोई पुरख सुजान, मिलके.....

जिना मिलेया प्रभ आपना, (२)
नानक तिस कुरबान, मिलके.....

माघ सुच्चे ते कांडियै, (२)
जिन पूरा गुरु मेहरवान, मिलके.....

अखियाँ नहीं रज्जीयाँ

नहीं रज्जीयाँ देख के मुखड़ा तेरा, अखियाँ नहीं रज्जीयाँ । टेक।
(२)

ऐह तन मेरा चश्मां होवे (२)
मैं मुशर्द वेख न रज्जां, अखियाँ नहीं रज्जीयाँ,
नहीं रज्जीयाँ.....

लूं लूं दे मुढ़ लख लख चश्मां (२)
इक खोलां इक कज्जां, अखियाँ नहीं रज्जीयाँ,
नहीं रज्जीयाँ.....

इतिनयां डिठियां सबर न आवे (२)
होर किते वल भज्जां, अखियाँ नहीं रज्जीयाँ,
नहीं रज्जीयाँ.....

मुर्शद दा दीदार है बाहू (२)
मैनूं लख करोड़ा हज्जां, अखियाँ नहीं रज्जीयाँ,
नहीं रज्जीयाँ.....

पी ले प्याला हो मतवाला

(कबीरदास जी)

पी ले प्याला हो मतवाला, प्याला नाम अमी रस का रे ।।

बालपना सब खेलि गंवाया, तरुन भया नारी बस का रे ।

बिरध भया कफ बाय ने घेरा, खाट पड़ा न जाए खिसका रे ।

नाभि कँवल बिच है कस्तूरी, जैसे मिरग फिरै बन का रे ।

बिन सतगुरु इतना दुख पाया, बैद्य मिला नहिं इस तन का रे ।

मात पिता बंधू सुत तिरिया, संग नहीं कोई जाये सका रे ।

जब लग जीवै गुरु गुन गा ले, धन जोबन है दिन दस का रे ।

चौरासी जा उबरा चाहै, छोड़ कामिनी का चसका रे ।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, नख सिख पूरा रहा विष का रे ।

मन लागो मेरा यार फकीरी में

(कबीरदास जी)

मन लागो मेरो यार फकीरी में ।।टेक।।

जो सुख पावो नाम भजन में, सो सुख नाहिं अमीरी में।

भला बुरा सब को सुन लीजै, कर गुजरान गरीबी में।

प्रेम नगर में रहिन हमारी, भलि बनि आई सबूरी में ।

हाथ में कुँडी बगल में सोटा, चारो दिसा जगीरी में ।

आखिर यह तन खाक मिलैगा, कहा फिरत मगरूरी में ।

कहै कबीर सुनो भाई साधो, साहेब मिलै सबूरी में ।

मानत नहिं मन मोरा साधो

(कबीरदास जी)

मानत नहिं मन मोरा साधो, मानत नहिं मन मोरा रे।।
बार बार मैं कहि समुझावौं, जग में जीवन थोरा रे।
या काया कौ गर्ब न कीजै, क्या सांवर क्या गोरा रे।
बिना भक्ति तन काम न आवै, कोटि सुगंधि चभोरा रे।
या माया जनि देखिर रे भूलौ, क्या हाथी क्या घोड़ा रे।
जोरि जोरि धन बहुत बिगूचे, लाखन कोटि करोरा रे।
दुबिधा दुरमति औ चतुराई, जनम गयौ नर बौरा रे।
अजहूँ आनि मिलौ सत संगति, सतगुरु मान निहोरा रे ।
लेत उठाई परत भुईं गिरि गिरि, ज्यों बालक बिन कोराँ रे ।
कहैं कबीर चरन चित राखो, ज्यों सूई बिच डोरा रे ।

सतगुरु है रंगरेज

(कबीरदास जी)

सतगुरु हैं रंगरेज, चुनर मोरी रंगि डारी ।।टेक।।
स्याही रंग छुड़ाई के रे, दियो मजीठा रंग।
धोये से छूटै नहीं रे, दिन दिन होत सुरंग ।
भाव के कुंडु नेह के जल में, प्रेम रंग दइ बोर।
चसकी चास लगाई के रे, खूब रंगी झकझोर ।
सतगुरु ने चुनरी रंगी रे, सतगुरु चतुर सुजान।
सब कुछ उन पर वार दूं रे, तन मन धन और प्रान
कहै कबीर रंगरेज गुरु रे, मुझ पर हुए दयाल।
सीतल चुनरी ओढ़ि के रे, भई हौं मगन निहाल ।

अब मैं सरण तिहारी जी

(मीराबाई)

अब मैं सरण तिहारी जी, मोहिं राखो कृपानिधान।।

अजामील अपराधी तारे, तारे नीच सदान।।

जल डूबत गजराज उबारे, गणिका चढ़ी बिमान।।

और अधम तारे बहुतेरे, भाखत सन्त सुजान।।

कुबजा नीच भीलनी तारी, जाणै सकल जहान।।

कहँ लग कहूँ गिणत नहिं आवै, थकि रहै बेद पुरान।।

मीरा दासी सरण तिहारी, सुनिये दोनों कान।।

कोई कहियो रे प्रभु

(मीराबाई)

कोई कहियो रे प्रभु घर आवन की, आवन की मन भावन की।।

आप न आवै लिख नहिं भेजै, बाण पड़ी ललचावन की।।

ए दोउ नैण कह्यो नहिं मानै, नदियां बहै जैसे सावन की।।

कहा करूं कछु नहिं बस मेरो, पाँख नहीं उड़ जावन की।।

मीरा कहै प्रभु कब रे मिलोगे, चेरी भई हूं तेरे दांवन की।।

म्हाँरा सतगुरु बेगा

(मीराबाई)

म्हाँरा सतगुर बेगा आज्यो जी, म्हारे सुखरी सीर बुवाज्यो जी।।

तुम बीछड़ियां दुख पाऊंजी, मेरा मन माहीं मुरझाऊंजी।

मैं कोइल ज्यूं कुरलाऊं जी, कुछ बाहिर कहि न जणाऊंजी।।

मोहिं बाघण विरह सतावैजी, कोई कहिया पार न पावैजी।

ज्यूं चकवी रौमन भावै जी, या ऊगो भाण सुहावेजी।।

ऊ दिन कबै करोलाजी, म्हारे आँगन पांव धरोलाजी।

अरज करे मीरा दासी जी, गुर पद रज की प्यासीजी।।

हे री मैं तो प्रेम दिवानी

(मीराबाई)

हे री मैं तो प्रेम दिवानी, मेरो दरद न जाने कोय।।

सूली ऊपर सेज हमारी, किस बिध सोना होय।

गगन मंडल पर सेज पिया की, किस बिध मिलना होय।।

घायल की गति घायल जानै, कि जिन लागी होय।

जौहरी की गति जौहरी जानै, कि जिन जौर होय।।

दरद की मारी बन बन डोलूं, बैद मिल्यो नहीं कोय।

मीराँ की प्रभु पीर मिटै, जब बैद साँवालिया होय।।

अनुक्रमणिका Index No.1

क्रमांक	भजन	पृष्ठ संख्या
1	अजायब कृपाल नूं याद करदा	1
2	अज जग विच खुशियाँ	5
3	अज शुभ दिहाड़ा है	7
4	अज खुशी दिन आया जी	212
5	अखियाँ नहीं रज्जीयाँ	228
6	अड़ी वे अड़ी ना कर बन्दे वे अड़ी	6
7	अनहद की धुन	1
8	अन्दर ज्योत जग रही	156
9	अपना कोई नहीं है जी	2
10	अपने सेवक की आपै राखै	2
11	अब मैं सरण तिहारी जी	231
12	अब मोहे नैनण सौं गुरु दिया	5
13	असां गुरां दे दवारे उत्ते रोना	3
14	असी औगुणहारे जी	3
15	असी मैले सतगुरु जी	4
16	आ कृपाल कोल बैठ	158
17	आ कृपाल गुरु चित चरनी जोड दियो	9
18	आ कृपाल गुरु मैं शगन मनौन्दी हाँ	10
19	आ गये दर ते भिखारी	8
20	आ गुरु कृपाल जी	9
21	आ सजना देखां दर्शन तेरा	8
22	आऐ जी तेरे दर ते भिखारी	10
23	आओ-आओ शाह कृपाल साईं	12
24	आओ कृपाल प्यारे	14
25	आओ दर्शन करिये गुरु प्यारे दा	12
26	आओ दयाल प्रभु कृपाल	13
27	आओ याद मनाइये सावन दी	13
28	आओ सतगुरु आओ जी	14

अनुक्रमणिका Index No.2

क्रमांक	भजन	पृष्ठ संख्या
29	आजा-आजा-आजा मेरे कृपाल जी	19
30	आजा आवी जा	157
31	आजा प्यारे सतगुरु आजा	18
32	आन के द्वारे उत्ते बैठे	11
33	आपे तारे ते तारन वाली	198
34	आया कृपाल अड़ियो नी	15
35	आया लाहा लैण प्राणी	16
36	आया सतगुरु आया नी	17
37	आया सावन झड़ियां ला गया	18
38	इक अरज अजायब गुजारे	20
39	इक जोत निराली	22
40	इक दर्दमंद दिल की हालत	23
41	इस प्रेम दी दुनिया	21
42	उठ जाग मुसाफिर	25
43	उठ सुतया गाफला होश करलै	199
44	उड़के गुराँ नूं मिलिये	26
45	ऐह जनम तुम्हारे लेखे	213
46	ऐह दुनिया परौणी सजना ओए	24
47	ऐह ते देश पराया ओए सजना	25
48	ऐह मानस जामे नूं	24
49	ओ अकल के अन्धे देख जरा	28
50	ओ दर दर दे फिरने नालों	26
51	ओ मन मूरख अब तो जाग	159
52	ओ सिक्खा सिक्खी	29
53	ओह सोहना ऐना सोहना सी	27
54	क्या हुआ जे जन्म लिया	30
55	क्यों गफलत विच मन सोया है	31
56	करके वेला याद	33
57	करलै भजन	31

अनुक्रमणिका Index No.3

क्रमांक	भजन	पृष्ठ संख्या
58	करां सिफत की गुरु कृपाल दी मैं	32
59	करीं ना मान वतनाँ दा	32
60	करो मन गुरू चरणों से प्रीत	160
61	करो बेनती सुनो मेरे मीता	33
62	कृपाल अनामी अन्तरयामी	35
63	कृपाल की महिमा	161
64	कृपाल गुरु आजा	36
65	कृपाल गुरु दा विछोड़ा मैनूं पै गया	37
66	कृपाल गुरु जी साथों	37
67	कृपाल दा विछोड़ा	162
68	कृपाल यही संदेशा देता	34
69	काहे रे बन खोजन जाई	38
70	केड़ा चंगा केड़ा मंदा	163
71	कहिदें महिमा सतसंग दी	34
72	कोई कहियो रे प्रभु	231
73	कोई गुण ना	30
74	कोई ना किसे दा बेली	36
75	कौन कहे मैं	164
76	खेल नियारे बक्शन हारे	38
77	गुरु कृपाल दा मुखड़ा	43
78	गुरु कृपाल जी तेरा सहारा	44
79	गुरु कृपाल मेरे घर आना	45
80	गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु बोल	46
81	गुरु तों बगैर बंदे	46
82	गुरु बिन कौन मिटावैं भव दुःख	40
83	गुरु बिन कौन सहाई नरक में	42
84	गुरु बिन नहीं बन्दे कल्याण	39
85	गुरु मेरा चन वरगा	42

अनुक्रमणिका Index No.4

क्रमांक	भजन	पृष्ठ संख्या
79	गुरु कृपाल मेरे घर आना	45
80	गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु बोल	46
81	गुरु तों बगैर बंदे	46
82	गुरु बिन कौन मिटावैं भव दुःख	40
83	गुरु बिन कौन सहाई नरक में	42
84	गुरु बिन नहीं बन्दे कल्याण	39
85	गुरु मेरा चन वरगा	42
86	गुरु समान नहीं दाता	44
87	गुरुदेव मेरी नैया	40
88	गुरुदेव बिना ज्ञान नहीं	41
89	गम दुनिया दे हैन बथेरे	165
90	गुरु चुप रहिंदे सेवक बोल पैंदे	166
91	गुरु बिना गत नहीं	200
92	गुरु साजन लादा जी	200
93	घट ही में अविनाशी साधो	47
94	चड़े चेत हर चेत प्राणी	49
95	चरण कमल तेरे धोए-धोए पीवां	47
96	चलो मन सतगुरु के दरबार	48
97	चलो नी संइयों सिरसे नूं चलिये	50
98	चार पदार्थ जे	48
99	चिटा कपड़ा ते रूप सुहाना	49
100	चोरां तेरा घर लुटया	51
101	चंद लख चड़ जावै जी	52
102	छड झूठा जगत सरां दा प्यार	201
103	छोटी जात दा कबीर जुलाहा	52
104	जप नाम गुरु दा ओए	56

अनुक्रमणिका Index No.5

क्रमांक	भजन	पृष्ठ संख्या
105	जप लै तूं नाम गुरु दा	55
106	जपियो जिन गुरु कृपाल	57
107	जाग मुसाफिर जाग	53
108	जां होऐ कृपाल तां प्रभ मिलाऐ	214
109	जामां इन्सान ऐ अमुल्ला लाल ओए	54
110	जिसके सिर ऊपर तू स्वामी	60
111	जिन्हां जपिया कृपाल प्यारा	59
112	जी अज दी सुलखणी घड़ी	58
113	जी जुग भावैं चार जीविऐ	58
114	जी सतगुरु प्यारे आ मिलो	168
115	जीवन सफल बना ले बंदे	167
116	जे तूं ना आंदा रामा	168
117	जे बन्दिया तैं रब नूं	56
118	जे पारस होना ऐ जिन्दड़ीये	57
119	जे सजना तैं मुर्शद खुश करना ते	62
120	जेड़े गुरु भगती तों हीणे	55
121	जो बक्शों हमको बड़ी है बक्शीश	169
122	जो बानी पूरे सतगुरु	61
123	जो मांगे ठाकुर अपने ते	59
124	जोत रब दी है आई	60
125	झूठा संसार है	63
126	झूठी दुनिया च फँसया दिल मेरा	64
127	झूठे छडके व्यवहार	64
128	ठाकुर तुम शरनाई आया	65
129	तक लै मना ओए कृपाल प्यारे तांई	66
130	तपदे हिरदे ठारे आके	67

अनुक्रमणिका Index No.6

क्रमांक	भजन	पृष्ठ संख्या
131	तती वायो नां लगदी जी	220
132	तू डाडा बेपरवाह कुदरतां तेरीयां	72
133	तू मेरा पिता तू है मेरा माता	75
134	तुम बिन कौन सहाई दाता	75
135	तुमसे मेरा जनम-जनम का नाता	65
136	तुमसे मेरी प्रीत पुरानी	171
137	तेरे चरणां दा आसरा	66
138	तेनूं वारो वारी आखे मना ओए	67
139	तुसी अर्ज सुनो कृपाल गुरु	76
140	तेरा नाम ध्याइए जी	68
141	तेरा नाम रसमुल्ला जी	69
142	तेरा सब दुनिया तों	69
143	तेरे नाम दा भरोसा भारी	70
144	तेरे नाम दी वैरागण बनके	70
145	तेरे नाम ने बनाऐ	71
146	तेरे प्रेम बावरी कीता	71
147	तेरी हरदम याद मना रहे	72
148	तेरी कुदरत तूं ही जाने	73
149	तेरी सोच करे कृपाल	74
150	दर्शन देख जीवां गुरं तेरा	76
151	देख लया असीं देख लया	77
152	दर्श पिया दा पा लवाँ	78
153	दाता जी कित्थें गयों	79
154	दिल का हुजरा साफ़ कर	172
155	दिल टूटदे आबाद करे	173
156	दिखादे दिखादे दिखादे दाता जी	81

अनुक्रमणिका Index No.7

क्रमांक	भजन	पृष्ठ संख्या
157	दीदार कृपाल प्यारे दा	203
158	देखा है जब से हमने सावन जमाल तेरा	174
159	देखी बहुत निराली महिमा	80
160	दुःख भंजन तेरा नाम जी	81
161	दुखाँ वाली घड़ी	82
162	दुनिया दे विच ऋहां ते	83
163	दुनियां विच प्रीत लगाई	202
164	देजा तूं दर्श हुण लाईयाँ	80
165	देजा सहारा कृपाल प्यारे	79
166	धन कृपाल प्यारेया	84
167	धुन घट विच वज रही	84
168	धन-धन सतगुरु मेरा	83
169	नाम की महिमा अपरम्पार	85
170	नाम गुरु दा जप लै	86
171	नाम गुरु दा सच्चा	86
172	नाम जप बन्दया	87
173	नाम जपा सुख पाया	175
174	नाम जप क्यों लाहुनां ऐ देरी	88
175	नाम तुम्हारा हिरदै वासै	88
176	नाम तो बगैर बन्दा	89
177	नाम मिले नाम मिले	85
178	नाम साहेब दा चंबे दी बुटी	176
179	नाच रे मन नाच रे	90
180	नहीं लभना मानस जनम बहार	91
181	पक जा ओ सिक्खा	92
182	पाखंड में कुछ नाहीं साधो	92

अनुक्रमणिका Index No.8

क्रमांक	भजन	पृष्ठ संख्या
183	पाऐं लगों मोहे करौ बेनती	91
184	पानी देया बुलबुलया	93
185	पीर दा विछोड़ा	94
186	पी ले प्याला हो मतवाला	229
187	प्रेम कियो, तिन ही प्रभ पायो	221
188	फिर याद सावन दी	94
189	बक्शो बक्शन हार पिया जी	95
190	बन के रूहाँ दा व्यापारी	178
191	बन्दा बनके आया	97
192	बन्दा नाम जपने	98
193	बन्दे नाम गुरु दा जप लै	174
194	बन्दे दियाँ आसा सदा होंदियां ना पूरियाँ	179
195	बिना नाम दे जपे ना शांति आवे	205
196	बिसर गई सब	95
197	बदियां तो बच सजना	96
198	बैठा घट-घट विच दातार वे	97
199	भावें जाण ना जाण	206
200	भावें लख लख तीरथ न्हालै	98
201	भुलीं ना गुरां दे उपकार सजना	99
202	म्हाँरा सतगुरु बेगा	232
203	मन जदों हठीला होवे	101
204	मन मन्दिर में आओ कृपाल जी	110
205	मन लागो प्यार फकीरी में	229
206	मना परदेसियां सुण लै	222
207	मना रे तेरी आदत ने	101
208	मलायक से, बशर से	223

क्रमांक	भजन	पृष्ठ संख्या
209	महरम होऐ सो जाने	103
210	मानत नहिं मोरा साधो	230
211	मानस जनम लाल रतन अमुल्ड़ा ऐ	207
212	मार चौकड़ी कदी ना बैठा	180
213	मित्र प्यारेनु साडा हाल मुरीदां दा कहना	104
214	मिल मेरे प्रीतमा जी ओ	224
215	मिलया सावन दा बेटा	108
216	मिलो कृपाल प्यारेया	108
217	मुझे अपना बना लो	109
218	मुड़ घर आजा	185
219	मेरा कागज गुनाह वाला पाड़ दे	104
220	मेरा सतगुरु प्रीतम प्यारा	105
221	मेरे दाता जी सुनो बेनती	105
222	मेरे दीन दयाला जी, सुन लौ बैनतियाँ	215
223	मेरे मनमोहन कृपाल तुझे याद करूं	184
224	मेरे सतगुरु दीन दयाल	106
225	मेरे सतगुरु प्यारे जी	107
226	मेरे सतगुरु पकड़ी बांह	109
227	मेरा सतगुरु सोहनां आ गया	106
228	मेरे विच ना गुरु जी गुण कोई	107
229	मेहरांवालिया साँईयाँ रखीं चरनां दे कोल	182
230	मैं क्यों कर तोड़ां जी	103
231	मैं खड़ी उडीका जी, संगत दे वाली नूं	215
232	मैं तो कृपाल से बिछड़	100
233	मैं बलिहारे जावां	99
234	मैंनू कृपाल मिलन दा चाह वे	102

क्रमांक	भजन	पृष्ठ संख्या
235	मैनूं छड के कली नूं तूर चलेया	181
236	मैंनूं तेरे बिना किसे दी ना	102
237	मैनूं पुछण आण सहेलियां	208
238	याद गुरु कृपाल दी	111
239	रब लभदा ऐ	112
240	रबा लख-लख शुक्र मनावाँ	186
241	रूह मालिक तों होई दूर	113
242	रूहां सडियाँ नूं पार लंघा	114
243	रे मन स्याना होजा	113
244	रोंदी मैं दर-दर फिरदी	187
245	रंग रुप दा माण ना करिए	111
246	लख पापी तर गऐ जी	224
247	लग जाऐ ध्यान कृपाल दा	115
248	लखां शक्लां तकिया अंखिया ने	115
249	लानत ओए लानत तैनूं	194
250	लिख चिट्ठियां, लिख चिट्ठियां	118
251	लिख सतगुरु वल पाईयाँ	116
252	लिखन वालिया तू	117
253	लोच रेहा गुरु दर्शन दे तांई	117
254	वड्डे-वड्डे दुनिया दे राजे	118
255	वाह मेरे सावन	119
256	वंडदा हरदम नाम खजाने	153
257	शबद नाल जोड़ दातेया	120
258	शाह कृपाल प्यारेया	121
259	शुभ दिहाड़ा भागां भरिया	122
260	सइयों नी अज शुभ दिहाड़ा	154

अनुक्रमणिका Index No.11

क्रमांक	भजन	पृष्ठ संख्या
261	सईयों नी इक नूर इलाही	128
262	सइयों नी कृपाल गुरु जी आया ऐ	127
263	सईयों नी मैं कमली होई	190
264	सईयों नी सावन आया	129
265	सगल सृष्टि का	125
266	सच्चा नाम जप सोहनी जिन्दगी बनाई	123
267	सचया गुरु मेहरबाना	123
268	सतगुरु कृपाल जी दर्शन	132
269	सतगुरु कृपाल प्यारा	133
270	सतगुरु के गुण गालै बन्दे	132
271	सतगुरु जी बख्श लियो	131
272	सतगुरु जी दरश दिखाओ	131
273	सतगुरु ने दुनियां तारी	133
274	सतगुरु प्यारे मेरी जिन्दगी संवार दे	134
275	सतगुरु प्यारे ने मन मोहया	209
276	सतगुरु प्रीतम प्यारा	124
277	सतगुरु पूरा जिन सुनेया पेखया	217
278	सतगुरु सच्चा कृपाल दातारिया	134
279	सतगुरु सच्चे मेरे दाता	135
280	संतां दा करलै मना	188
281	सतगुरू माफ करी	189
282	सतगुरु सावन शाह अमृत वरस रिहा	136
283	सतगुरु सावन शाह	144
284	सतगुरु सोहना मेरा है कृपाल	137
285	सतगुरु है रंगरेज	230
286	सत संगत जग सार साधो	130

अनुक्रमणिका Index No.12

क्रमांक	भजन	पृष्ठ संख्या
287	सत संगत बाजो जी	216
288	सब पर दया करो, गुरु पाल सबके	150
289	सभै घट राम बोले, रामा बोले	225
290	सच्ची बानी अन्दर हो रही इन्सान दे	144
291	साइयां तूं पार लघांवी	127
292	साडा ना कोई वे लोको	126
293	साडे मिरगा ने खेत उजाड़े	125
294	साडे वल मुखड़ा मोड़ प्यारेया	192
295	सावन कभी आओ	143
296	सावन कृपाल प्यारे	139
297	सावन कृपाल प्यारे आये अजैब	155
298	सावन केड़या रंगा विच राजी	137
299	सावन गुरु कृपाल जी	135
300	सावन गले लगाकर	23
301	सावन गुमदा, गुमदा गुम होया	147
302	सावन चन वरगा है दुनिया तों सोहना	147
303	सावन ते कृपाल दियां मेहरा ने	210
304	सावन दा तूं लाल जी	193
305	सावन दा बेटा सोहना कृपाल आ गया	138
306	सावन दयालू ने रिम झिम लाई	149
307	सावन प्यारे बख्शन हारे	139
308	सावन शाह आया जग ते	141
309	सावन शाह जी आओ	140
310	सावन-सावन पई ढुँडेदीं	148
311	सावन-सावन दुनिया कैंहदी	148
312	साहिबा जी तेरे दर्शन दी लोड़	124

क्रमांक	भजन	पृष्ठ संख्या
313	साधुआ धूड़ी कर इशनान	227
314	सानूं भुलयाँ नूं रस्ते पाया	129
315	सांस-सांस सिमरो गोबिन्द	130
316	सिमरन करीये नाम सिमरिये	140
317	सिर गुरु चरना ते रखनी आं	142
318	सोहना शाह कृपाल	142
319	सुच्चे नाम दा सच्चा चढ़ा दे	146
320	सुनत नहीं धुन की खबर	204
321	सुनो बेनती मेरी सतगुरु जी	218
322	सुन सिखा सिखी वाले	146
323	सोई धरत नसीबा वाली	219
324	सोई थान सुहावा	219
325	सोहना सावन शाह दा	145
326	सोहना सोहना मुखड़ा ते	145
327	सोहने सतगुरु दा अज जन्म दिहाड़ा ऐ	191
328	संत का मार्ग, धर्म की पोड़ी	226
329	संत जना मिल हर यश गायो	143
330	हमारे प्यारे सतगुरु जैसा	197
331	हार रानी दे गले विच फेर पैंदा	195
332	हे दयाल गुरु कृपाल	151
333	हे री मैं तो प्रेम दिवानी	232
334	हे सावन हे कृपाल	170
335	हे सखी, सुन री सखी	211
336	होया सुख ओले कौन दुख फोले	152
337	होए के दयाल, कृपाल घरे आ गया	152
338	हौं कुरबाने जाओ मेहरबाना	151

क्रमांक	भजन	पृष्ठ संख्या
261	सईयों नी इक नूर इलाही	128
262	सइयों नी कृपाल गुरु जी आया ऐ	127
263	सईयों नी मैं कमली होई	190
264	सईयों नी सावन आया	129
265	सगल सृष्टि का	125
266	सच्चा नाम जप सोहनी जिन्दगी बनाई	123
267	सचया गुरु मेहरबाना	123
268	सतगुरु कृपाल जी दर्शन	132
269	सतगुरु कृपाल प्यारा	133
270	सतगुरु के गुण गालै बन्दे	132
271	सतगुरु जी बख्श लियो	131
272	सतगुरु जी दरश दिखाओ	131
273	सतगुरु ने दुनियां तारी	133
274	सतगुरु प्यारे मेरी जिन्दगी संवार दे	134
275	सतगुरु प्यारे ने मन मोहया	209
276	सतगुरु प्रीतम प्यारा	124
277	सतगुरु पूरा जिन सुनेया पेखया	217
278	सतगुरु सच्चा कृपाल दातारिया	134
279	सतगुरु सच्चे मेरे दाता	135
280	संतां दा करलै मना	188
281	सतगुरू माफ करी	189
282	सतगुरु सावन शाह अमृत वरस रिहा	136
283	सतगुरु सावन शाह	144
284	सतगुरु सोहना मेरा है कृपाल	137
285	सतगुरु है रंगरेज	230
286	सत संगत जग सार साधो	130